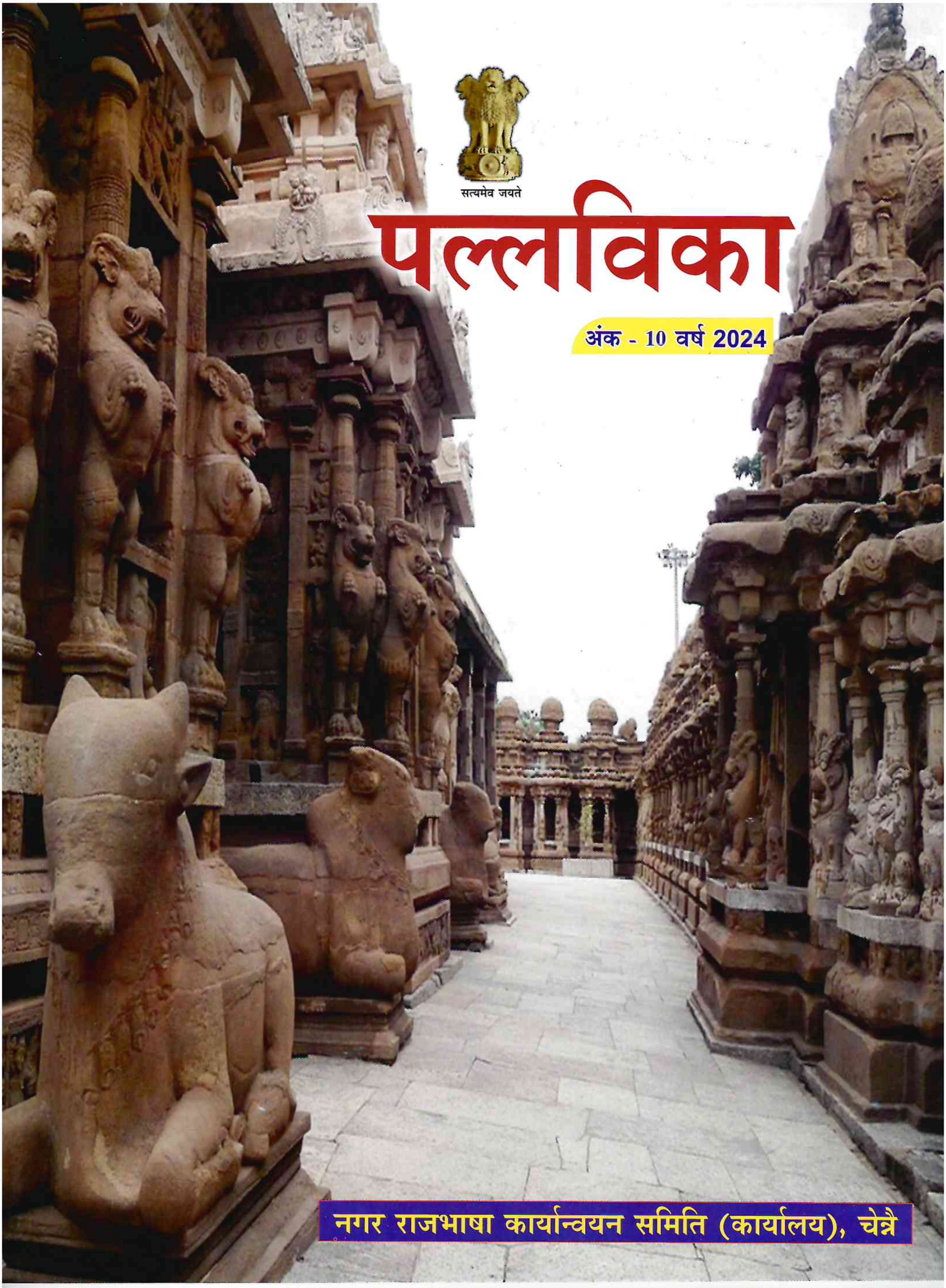

सत्यमेव जयते

पल्लविका

अंक - 10 वर्ष 2024

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय), चेन्नै

सीएसआईआर - संरचनात्मक अभियांत्रिकी अनुसंधान केन्द्र
सीएसआईआर परिसर, सीएसआईआर रोड, तरमणि, चेन्नै - 600 113.

भारत सरकार के स्वायत्त निकाय वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद् (सीएसआईआर) के अंतर्गत स्थापित सीएसआईआर - संरचनात्मक अभियांत्रि अनुसंधान केन्द्र एक प्रमुख अनुसंधान एवं विकास संस्थान है । सीएसआईआर - एसईआरसी की दूरदृष्टि यह है कि प्रमुख और सीमांत क्षेत्रों में अति उत्त अनुसंधान के जरिये संरचनात्मक अभियांत्रिकी के क्षेत्र में विश्व स्तर का लीडर बनना, और समाज एवं उद्योग के लाभार्थ नवीकृत अंतर-एवं ट्रांस-डिसिप्लिन उपागमनों का समाविष्ट करते हुए प्रतिस्पर्धात्मक प्रौद्योगिकिओं का विकास करना । इस केंद्र के अनुसंधान के प्रणोदित क्षेत्र हैं :- संरचनात्मक स्वास्थ वीक्षण एवं जीवनकाल वृद्धि, घोरविपत्ति प्रशामन, धारणीय संरचनाओं एवं विशेष & बहु-कार्य संरचनाओं केलिए प्रगत पदार्थों का विकास करना ।

ई पी एस पैनलों का उपयोग करते हुए हल्के भारवाले पूर्वगढ़ित भवन प्रणालियाँ

ये पैनल कम सामग्री की खपत, कम लागत और पर्यावरण-हितैशी के साथ-साथ सामर्थ्य, हल्का व लचीलापन और टिकाऊपन का अनूठा संयोजन प्रदान करते हैं। निर्मित सुविधाओं के लिए संतोषजनक थ और ध्वनिक रोधन प्रदान करते हैं और प्राकृतिक विपदाओं के प्रतिरोधी हैं ।

वस्त्र प्रबलित कांक्रीट आदिप्ररूप प्रौद्योगिकी

ढाचों के उपयोग के बिना विभिन्न संरचनात्मक और गैर-संरचनात्मक अनुप्रयोगों के लिए टेक्सटाइल / फै प्रबलित सम्मिलित शीट्स और उत्पादों के उत्पादन के लिए एक तकनीक।

काँच वस्त्र प्रबलित कांक्रीट क्रैश बैरियर प्रणाली

वाहन के टक्कर के दौरान संघात बलों को प्रतिरोध करने और उर्जा को अवशोषित करने केलिए एक गढित काँच वस्त्र प्रबलित कांक्रीट क्रैश बैरियर प्रणाली का विकास किया गया । इससे वाहन को होने क्षति और यात्रियों को होनेवाली चोट को कम किया जा सकता है । यह प्रणाली आसानी से स्था पुनःस्थापित और मरम्मत करने योग्य है ।

स्वच्छता के लिए तेजी से निर्मित कम लागत वाली शौचालय प्रौद्योगिकियां

स्वच्छ भारत योजना के तहत शौचालय की मांगों को पूरा करने के लिए हल्के वजन, गैर संक्षारक टिकाऊयुक्त अभिनव पूर्व गढित पैनल का विकास किया गया । क्रेन के उपयोग के बिना और जनशक्ति से पैनलों के संयोजन / निर्माण को 3-4 घंटों के अंदर ही पूरा किया जा सकता है।

विद्यमान रेलवे पुलों की क्षमता वृद्धि

प्रघात संचारण एककों के जरिए लंबवत बलों के विकीर्णन और मूल्यांकन केलिए एक नवीकृत पद्धति उपयोग करते हुए पिछले पाँच वर्षों में सी एस आई आर - एस ई आर सी ने समय पर हस्तक्षेप करवे मुख्य रेलवे पुलों की जीवनकाल वृद्धि किया है ।

आपातकालीन पुनःप्राप्ति प्रणाली

ध्वस्त संचारण रेखा टावरों की त्वरित पुनःप्राप्ति के लिए आपातकालीन पुनःप्राप्ति प्रणाली का विकस गया । इस प्रणाली से लाभ हैं :- सरल गढन, योजनाबद्ध और उपयोग में आसान, सुसंहत आयातित प्रणालियों की तुलना में 40% कम लागत ।

भारतीय रीबरों केलिए पिरोया हुआ अंत लंगर (Head-T)

आईएस 1786 (2008) के अनुसार भारतीय बाजार में उपलब्ध प्रबलित बारों केलिए एक अभिनव रीबा लंगर तकनीक, मुख्य रूप से सलाखों को सुदृढ करने के लिए, विकसित की गई है, जिसमें द्वि-प्रभा का उपयोग किया गया और ये प्रणाली पूर्ण लंगर क्षमता रखते हैं । ये प्रणाली अपनाने में अ किफायती और तेज निर्माण को सक्षम बनाते हैं ।

पर्यावरण-हितैशी जियोपॉलिमर कंक्रीट ब्लॉक

जियोमॉल्मर तकनीक का उपयोग करके कंक्रीट के तापमान को ठीक करने वाले परिवेश का विकास गया । ये ब्लॉक अलग-अलग प्रकार के होते हैं - बिल्डिंग ब्लॉक, पेवर ब्लॉक, खोखले ब्लॉक हल्केभारवाले ब्लॉक । पारंपरिक पोर्टलैंड सीमेंट आधारित ब्लॉकों के बदले ये ब्लाक त्वरित, लागत और पर्यावरण-हितैशी विकल्प प्रदान करता है।

विशेष पल के विरोध करने वाले फ्रेम के लिए लचीला लागत प्रभावी भूकंप प्रतिरोधी इस्पात बीम-कॉलम संधि

इस प्रौद्योगिकी में एक अनोखी आंशिक सामर्थ्य है, और आसानी से स्टील बीम से कालम मोमेंट स प्रतिस्थापित करके एक फ्यूज की तरह काम करती है और तेज भूकंप झटकों के दौरान मोमेंट ढांचों में प्र ऊर्जा विघटन प्रणाली के रूप में कार्य करती है । निवासी की सुरक्षा सुनिश्चि करती है और भवनों एवं इमार मरम्मत एवं पुनर्वास केलिए उचित लागत और कम समय में आवश्यक प्रावधान प्रदान करती है ।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें :-
निदेशक, सीएसआईआर-एसईआरसी

दूरभाष: + 91 -44 2254 9201/4800
ई-मेल: director@serc.res.in, bkmd@serc.res.in

बेवसाईट: www.serc.res.in
फेसबुक: www.facebook.com/csirserc
ट्विटर:https:/twitter.com/csir_serc

अधि

पल्लविका

प्रधान संरक्षक

आर.एन.सिंह
महाप्रबंधक, दक्षिण रेलवे एवं अध्यक्ष, नराकास

संरक्षक

शैलेश कुमार तिवारी
प्रधान मुख्य सि व दू इंजीनियर एवं
मुख्य राजभाषा अधिकारी, दक्षिण रेलवे

संपादक

बिनीता सोय
वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी,
प्रधान कार्यालय, दक्षिण रेलवे एवं
सदस्य सचिव, नराकास/चेन्नै

कोषाध्यक्ष

एस.मगेश किशन
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी,
डी.जी.ए., दक्षिण रेलवे

संपादक मंडल

राजभाषा संगठन, दक्षिण रेलवे, मुख्यालय

विषय-सूची

क्रम सं.	विषय	नाम (श्री/श्रीमती/ कुमारी)	पृष्ठ सं.
1.	एकांत में रहना एक कला	बिनीता सोय	1
2.	एकीकृत पेंशन योजना	डॉ.दीनानाथ सिंह	2
3.	मनुष्य,मानवता और आज की परिस्थितियाँ	सहदेव सिंह पुरती	4
4.	मेरी कविताएँ (कविता)	अभय खन्ना	5
5.	हिंदी के समक्ष की चुनौती 'हिंग्लिश'	डॉ.श्याम सुन्दर कथूरिया	6
6.	माँ (कविता)	रविप्रकाश शालीवाल	8
7.	महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिंदी नवजागरण	डॉ.महेश्वरी रंगनाथन	9
8.	वक्त गुज़र रहा है (कविता)	पुष्पा शेषाद्री	11
9.	विवेकानंदर हाउस की कथा	डॉ.ए.श्रीनिवासन	12
10.	दक्षिण में हिंदी - एक इतिहास	डॉ.पी.आर वासुदेवन शेष	14
11.	तामरशेरी चुरम और करितंडन का मार्मिक किस्सा	आर.उषानंदिनी	17
12.	सिलप्पदिकारम में इंद्र की पूजा	लता वेंकटेश	20
13.	माँ का आंचल (कहानी)	ज्योति नोडनी	22
14.	प्रकृति की परि 'ऋतु'	विकाश कुमार शर्मा	23
15.	हिंदी राजभाषा के कार्यान्वयन की चुनौतियाँ-अंग्रेजी और हिंदी के बीच संघर्ष	आशीष गुप्ता	24
16.	हिंदी भाषा के प्रचार प्रसार में मीडिया की भूमिका	रंजित हरणकर	26
17.	भारतीय शिल्पकारों का फैशन उद्योग में महत्व	श्रीधर आमंची	29
18.	हिंदी का सार:एक जुटता की पुकार (कविता)	ए.इलयराजा	31
19.	बहुदिव्यांगता:एक दुर्गम यात्रा	अतुल कुमार गिरी	32
20.	एकता (कविता)	मोहम्मद खाजा मोहिउद्दीन	33
21.	मुंशी प्रेमचंद की खोज-एक पाठक का आनंद	हरिश रघुनाथन	34
22.	अंकों का चमत्कार (कविता)	सर्वेश कुमार निगम	35
23.	सफ़ारी	एस.बालसुब्रमणियन	36
24.	वर्ग पहेली	वी.भुवनेश्वरी	38

आवरण: कैलासनाथर मंदिर - कांचिपुरम

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार रचनाकारों के अपने हैं। इसके लिए संपादक मंडल उत्तरदायी नहीं है.
(नि:शुल्क वितरण के लिए)

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय), चेन्नै
महाप्रबंधक कार्यालय, दक्षिण रेलवे, चेन्नै - 600 003.
दूरभाष: 044 - 25340870, टेली फैक्स - 044 - 25331468
ई-मेल:tolicofficeschennai@gmail.com

सत्यमेव जयते

भारत सरकार/GOVERNMENT OF INDIA
रेल मंत्रालय/Ministry of Railways
दक्षिण रेलवे/Southern Railway

आर.एन.सिंह
महाप्रबंधक, दक्षिण रेलवे एवं अध्यक्ष,
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय), चेन्नै

संदेश

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति चेन्नै, एक बड़ी समिति है। इस समिति से ई-पत्रिका एवं मुद्रित पत्रिका दोनों तरह की पत्रिकाएं प्रकाशित होती हैं। इस बार इस समिति से मुद्रित पत्रिका 'पल्लविका' का दसवाँ अंक प्रकाशित किया जा रहा है। ये दोनों ही रूप में प्र होने वाली पत्रिकाएं राजभाषा के प्रति सदस्य कार्यालयों के सजग और सक्रिय रहने के प्रमाण हैं

राजभाषा का कार्य संपूर्ण देश को एक भाषायी सूत्र में जोड़ने का कार्य है। भारत इसके लिए तमाम तरह के प्रयास कर रही है। राजभाषा प्रेमियों को भी यथा-संभव इस दिशा मे योगदान देना चाहिए।

आशा करता हूं कि इसका प्रकाशन लगातार आगे भी इसी तरह जारी रहेगा।

इस पत्रिका के संपादन, प्रकाशन व वितरण से जुड़े सभी हिंदी प्रेमियों को बहु बधाईयां।

(आर.एन. सिंह)

सत्यमेव जयते

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, (का) चेन्नै

TOWN OFFICIAL LANGUAGE IMPLEMENTATION COMMITTE (O) CHENNAI

महाप्रबंधक कार्यालय, दक्षिण रेलवे, चेन्नै - 600 003

Office of the General Manager, Southern Railway, Chennai - 600 003

कौशल किशोर
अपर महाप्रबंधक
दक्षिण रेलवे

संपादकीय

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति चेन्नै ने 'पल्लविका' पत्रिका का नवीनतम अंक प्रकाशित करने का निर्णय लिया है। यह निर्णय स्वागत योग्य है। राजभाषा का प्रचार-प्रसार केवल सरकार का कार्य नहीं है। सरकार की हर नीति सफल हो जाती है जब उसमें जनता का सहयोग होता है। आमजन की भागीदारी इन सब में बड़ी अहम भूमिका निभाती है। इस पत्रिका का प्रकाशन आगे भी इसी तरह से क्रमबद्ध जारी रहना चाहिए।

मैं इस पत्रिका से जुड़े सभी महानुभावों को साधुवाद देता हूं तथा इसकी सफलता के लिए बधाईयां देता हूं।

जय हिंद ! जय हिंदी !

(कौशल किशोर)

सत्यमेव जयते

भारत सरकार/GOVERNMENT OF INDIA
रेल मंत्रालय/Ministry of Railways
दक्षिण रेलवे/Southern Railway

शैलेश कुमार तिवारी
प्रधान मुख्य सि व दू इंजीनियर एवं
मुख्य राजभाषा अधिकारी , दक्षिण रेलवे

प्रधान कार्यालय, **Headquarters O**
चेन्नै, **Chennai - 600 003**

संदेश

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति चेन्नै, सामूहिक रूप से राजभाषा के प्रचार-प्रसार के लिए कार्यरत एक महत्वपूर्ण समिति है। इस समिति की वार्षिक गृह-पत्रिका 'पल्लविका' के 10 वें अंक के प्रकाशन पर मुझे अत्यंत प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है।

राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार के लिए वैसे तो यह समिति वर्ष भर अनेक प्रतियोगिताएं और अन्य कार्यक्रमों का आयोजन करती है, लेकिन गृह-पत्रिका के माध्यम से सभी कार्यालयों के कार्मिकों की रचनात्मकता को हिंदी में व्यक्त करने के लिए मंच प्रदान करना राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में एक विशिष्ट कार्य है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि हम सब मिलकर राजभाषा हिंदी के प्रति अपने संवैधानिक दायित्वों को पूरा करने के साथ – साथ निर्धारित लक्ष्यों से आगे जाकर इस क्षेत्र में नए आयाम स्थापित करेंगे।

अपने भावों को लेखनी के माध्यम से प्रस्तुत करनेवाले सभी रचनाकार प्रशंसा के पात्र हैं। मैं पत्रिका के उज्जवल भविष्य की कामना करते हुए इसके प्रकाशन से जुड़े समस्त कार्मिकों को बधाई देता हूं।

शुभकामनाओं सहित,

शैलेश

(शैलेश कुमार तिवारी)

सत्यमेव जयते

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, (का) चेन्नै

TOWN OFFICIAL LANGUAGE IMPLEMENTATION COMMITTE (O) CHENNAI

महाप्रबंधक कार्यालय, दक्षिण रेलवे, चेन्नै - 600 003

Office of the General Manager, Southern Railway, Chennai - 600 003

बिनीता सोय
वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी,
प्रधान कार्यालय, दक्षिण रेलवे एवं
सदस्य सचिव, नराकास/चेन्नै

संपादकीय

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय), चेन्नै के सभी सदस्य कार्यालयों के सराहनीय सहभोग से इस समिति की वार्षिक हिंदी गृह पत्रिका, 'पल्लविका' के दसवें अंक को प्रकाशित करते हुए अपार आनंद का अनुभव हो रहा है। राजभाषा के प्रचार-प्रसार में सदस्य कार्यालयों के सार्थक प्रयास से वर्ष भर अनेक गतिविधियों का आयोजन किया जाता है। 'पल्लविका' का प्रकाशन इसी कड़ी का हिस्सा है।

प्रत्येक अंक की तरह इस अंक में भी विषय वस्तु की विविधता, रोचकता को बनाए रखने की कोशिश की गई है। पत्रिका की साज-सज्जा, विषय वस्तु या किसी भी क्षेत्र में आपके परामर्श और सुझाव सदैव आमंत्रित है। आपकी प्रतिक्रियाएं ही पत्रिका को और बेहतर बना सकती हैं।

पत्रिका को रोचक व मनोरंजक बनाने में सक्रिय योगदान देनेवाले सभी रचनाकारों को धन्यवाद ज्ञापित करती हूं।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित !

बि. सोय

(बिनीता सोय)

22.12.2023 को आयोजित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, चेन्नै की बैठक

07.08.2024 को आयोजित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, चेन्नै की बैठक

सूरक्षा हाथ की रेखाओं में नहीं आपके अपने हाथों में है ।

உங்கள் குடும்பத்தின் பாதுகாப்பு உங்கள் கைகளில்

हमेशा मार्क लगी वस्तुएं ही ख़रीदें

முத்திரையிட்ட பொருட்களையே வாங்குங்கள்

PRODUCT CERTIFICATION

HALLMARK CERTIFICATION

SYSTEMS CERTIFICATION

COMPULSORY REGISTRATION SCHEME

Download BIS Apps | BIS CARE | BIS Certified Products

उपभेक्ता मार्क संबंधित शिकायत हेतु सम्पर्क करें :

முத்திரையிட்ட பொருட்கள் சம்பந்தபட்ட புகார்களுக்கு தொடர்பு கொள்ளவும்

प्रमुख (टी एन एम डी) / தலைவர், நுகர்வோர் விவகாரம்

टेलीफैक्स / தொலைபேசி : 011-23235069

ईमेल / மின்னஞ்சல் : complaints@bis.gov.in

अधिक जानकारी के लिए / மேலும் விவரங்களுக்கு

e-BIS (www.manakonline.in)

भारतीय मानक ब्यूरो

இந்திய தர நிர்ணய அமைவனம்

मानकः पथप्रदर्शकः

दक्षिण क्षेत्रीय कार्यालय / தென் பிராந்திய அலுவலகம்

सी. आई. टी. कैम्पस, चौथा क्रॉस रोड, तरमणी, चेन्नै - 600 113

சி.ஐ.டி. வளாகம், தரமணி, சென்னை – 600 113.

दूरभाष / தொலைபேசி : 044-2254 1984

वेबसाईट / இணையதளம் : www.bis.gov.in

सत्यमेव जयते

शाखा कार्यालय / கிளை அலுவலகம்

चेन्नै शाखा कार्यालय - I	चेन्नै शाखा कार्यालय - II	मदुरै शाख कार्यालय	कोयंबटूर शाखा कार्यालय
சென்னை கிளை அலுவலகம் – I	சென்னை கிளை அலுவலகம் – II	மதுரை கிளை அலுவலகம்	கோயம்புத்தூர் கிளை அலுவலகம்
cnbo1@bis.gov.in	cnbo2@bis.gov.in	mdbo-bis@bis.gov.in	cbto@bis.gov.in

नराकास द्वारा आयोजित कार्यक्रमों की झलकियां

18 से 21.12.2023 तक आवडि में आयोजित कंप्यूटर अनुप्रयोग प्रशिक्षण

11 से 15 मार्च 2024 तक एस ई आर सी में आयोजित संक्षिप्त अनुवाद प्रशिक्ष

07.05.2024 को दक्षिण रेलवे कार्यालय में आयोजित वार्तालाप प्रतियोगित

एकांत में रहना – एक कला

बिनीता सोय
वरि.रा.धि, प्र.का, द.रे एवं
सदस्य-सचिव, नराकास, का, चेन्नै

कुछ माह पूर्व मैं एक पुस्तक "The Art of being Alone" पढ़ी। पुस्तक के शीर्षक ने ही मुझे सोचने पर मजबूर कर दिया और मात्र दो-तीन दिनों में यह पुस्तक पढ़ ली। Alone= अकेला, एकांत ये शब्द ऐसी स्थिति की व्याख्या करती है जिसमें व्यक्ति अलग-थलग या एकांत में होता है अर्थात् सामाजिकता की कमी। परंतु एकांत और अकेलापन इन दोनों शब्दों में भी अंतर है। एकांत का मतलब स्वयं के साथ समय बिताना और अकेला होना जिसमें निराशा का भाव ज्यादा है। समाज में अकेला शब्द एकांत की तुलना में ज्यादा प्रचलित है। इसलिए अकेले व्यक्ति को बहुत सारी हिदायतें दी जाती हैं कि वह मित्र बनाएं, लोगों से मिले-जुले ताकि कोई नकारात्मक विचार उसे न घेरे।

जीवन में एक समय ऐसा आता है जब हम चाहे अनचाहे अकेले हो जाते हैं। परंतु उन परिस्थितियों को भी यदि हम चाहें तो सकारात्मक रूप दे सकते हैं। लेखिका रेणुका गवरानी ने अपनी पुस्तक में बड़े ही सुंदर ढंग से इस शब्द से जुड़े नकारात्मक भाव को सकारात्मक भाव में बदल देती है। 'एकांत मेरा घर है,अकेला मेरा पिंजरा था' एकांत और अकेलापन से जुड़ी जटिल भावनाओं की आत्मनिरीक्षणात्मक पहलू प्रस्तुत करती है। अकेले होने की अक्सर गलत समझी जानेवाली अवधारणा में गहराई से उतर कर अकेलेपन की नकारात्मक के भाव को अलवा करती है।

पुस्तक का मुख्य विषय एकांत और अकेलेपन के बीच का अंतर है। उसमें लिखी हर पंक्ति एकांत को शक्ति, रचनात्मकता आत्म-खोज का स्रोत के रूप में व्याख्या करती है। समाज अक्सर अकेलापन को एक नकारात्मक अनुभव के रूप में देखता है। इसे हमेशा उदासी और सामाजिक अपर्याप्तता से जोड़ता है। यहा तक कि मुहावरे भी ऐसे हैं जैसे – 'अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता' अर्थात् अकेला आदमी कोई बड़ा काम नहीं कर सकता। शायद इसलिए हम सब अकेला शब्द से घबरा जाते हैं। हममें अविश्वास, अशांति, असहयोग और चिंता उत्पन्न हो जाता है।

लेखिका ने एक अलग दृष्टि कोण प्रस्तुत किया है कि एकांत आत्म-खोज और व्यक्तिगत विकास के लिए एक शक्तिशाली उपकरण हो सकता है। हम अकेले में ही आत्म –चिंतन और आत्म विश्लेषण कर सकते हैं। तब हमें आत्मशांति, विश्वास और आत्मबल मिलता है। एकांत हमारे ध्यान, मनन, एकाग्रता में वृद्धि करता है। एकांत हमें निजता का एहसास दिलाता है यह हमारे बौद्धिक विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है।

एक अन्य महत्वपूर्ण विषय है आत्म –स्वीकृति का विचार। लेखिका ने स्वयं की संगति को अपनाने और स्वयं के भीतर शांति पाने के महत्व पर जोर दिया है। एक बार जब हम एकांत में बस जाते हैं तो यह हमें आध्यात्मिक पोषण प्रदान करता है। यह लंबे समय से अनदेखे किए गए विचारों और भावनाओं को उभरने का अवसर देता है। यह उन आशंकाओं को स्वीकार करने का मौका देती है जो सतह के नीचे छिपी होती है, जिन्हें हम स्वीकार नहीं करते हैं। ऐसी भावनाएं व विचार हमारी भावनात्मक नींव को कमजोर कर देती हैं। इसलिए एकांत में रहने में सकारात्मक पहलू को प्रकाश में लाया गया है और शायद इसलिए आत्म – चिंतन व आत्ममंथन की बात कही जाती है। आजकल गहन स्तर पर स्वयं से जुड़ने के तरीकों में माइंड फुलनेस, ध्यान, जर्नलिंग और रचनात्मक अभिव्यक्ति जैसी तकनीकों पर चर्चा की जाती है।

पुस्तक में लेखन की शैली चिंतन शील और सशक्त दोनों होने के कारण 'एकांत' पाठकों को बोझ के बजाय विकास के अवसर के रूप में अपनाने के लिए प्रोत्साहित करता है। यह अकेले होने के बारे में सामाजिक मानदंडों और गलत धारणाओं को चुनौती देती है। मुझे यह पुस्तक बहुत अच्छी लगी और यही कह सकती हूं कि एकांत में हमारे विचार सकारात्मक होते हैं और अकेलेपन में हमारे विचार नकारात्मक हो जाते हैं। इसलिए जब हम अकेले होते हैं तब एकांत की ओर हमें अग्रसर होना चाहिए।

एकीकृत पेंशन योजना

डॉ. दीनानाथ सिंह
पूर्व उप महाप्रबंधक/राजभाषा
दक्षिण रेलवे

सरकारी नौकरी के प्रति लोगों के आकर्षण का एक बहुत बड़ा कारण रिटायरमेंट के बाद जीवनपर्यंत मिलने वाला पेंशन रहा है। पेंशन सेवानिवृत कर्मचारी और उनपर आश्रित उनके परिवार के सदस्यों के लिए एक बहुत बड़ा सहारा है। रिटायरमेंट के बाद कर्मचारियों को और उसकी मृत्यु के बाद उसके जीवन साथी तथा उसके अवयस्क बच्चों को मिलने वाला पेंशन बहुत बड़ा वित्तीय एवं सामाजिक सुरक्षा है। अपने देश में पेंशन सामाजिक और आर्थिक सुरक्षा का प्रतीक रहा है।

वित्तीय सुरक्षा का प्रतीक मानी जाने वाली सरकार की पूर्व पेंशन योजना जिसे अब पुरानी पेंशन योजना (ओपीएस)कहा जाता है, के स्थान पर जब सरकार द्वारा नई पेंशन योजना-नेशनल पेंशन सिस्टम (एनपीएस) 1 जनवरी 2004 से लागू की गई तो सरकारी कर्मचारियों को एक जोरदार झटका लगा । नई पेंशन योजना जिसका नाम सरकार द्वारा नेशनल पेंशन सिस्टम(एनपीएस) दिया गया, वह मार्केट लिंक्ड योजना थी जिसे आगे चलकर सबके लिए खोल दिया गया। इस नेशनल पेंशन योजना में देश का कोई भी नागरिक अपना खाता खोलकर इस योजना का लाभ उठा सकता था। इसके अंतर्गत रिटायरमेंट के पश्चात मिलने वाली राशि की कोई गारंटी नहीं थी। इसके अतिरिक्त इसमें फैमिली पेंशन जैसी भी कोई व्यवस्था नहीं थी। वह सरकारी कर्मचारियों द्वारा लिए जाने वाले वार्षिकी(एन्युटी) पर निर्भर करता था। इसलिए सरकारी कर्मचारी एनपीएस का सदा विरोध करते रहे और पुरानी पेंशन योजना की बहाली की मांग लगातार करते रहे।

सरकार द्वारा कर्मचारियों के बढ़ते दबाव और कुछ विपक्षी दलों द्वारा कर्मचारियों के मांगों के समर्थन में आने के कारण 24 अगस्त 2024 को एक नई पेंशन योजना को मंजूरी दी गई। यह पेंशन योजना 1 अप्रैल 2025 से लागू होगी। साथ ही अगर कोई कर्मचारी नेशनल पेंशन सिस्टम में बने रहना चाहता है तो वह उसमें बना रहेगा। इस नई पेंशन योजना का नाम एकीकृत पेंशन योजना (यूनिफाइड पेंशन स्कीम) रखा गया है। यह पेंशन, योजना पुरानी पेंशन योजना (ओपीएस) और नई पेंशन योजना (नेशनल पेंशन सिस्टम) के बीच की है, जिसमें दोनों पेंशन योजनाओं के बीच की खाई को पाटने का प्रयास किया गया है।

यह पेंशन योजना अगले वित्तीय वर्ष 2025-26 यानी, 1 अप्रैल 2025 से प्रभावी होगी। इस एकीकृत पेंशन योजना (यूपीएस) में पुरानी पेंशन योजना और नई पेंशन योजना दोनों की विशेषताएं हैं ताकि कर्मचारियों और उनके परिजनों को सेवानिवृत्ति के बाद वित्तीय सुरक्षा प्रदान की जा सके।

आईए इस एकीकृत पेंशन योजना की विशेषताओं पर एक नजर डालते हैं-

1. **.सुनिश्चित पेंशन-** अगले वित्त वर्ष से प्रभावी होने वाले इस एकीकृत पेंशन योजना के अंतर्गत केंद्र सरकार के कर्मचारी को रिटायरमेंट के बाद एक तयशुदा राशि मिलेगी। अगर सरकारी कर्मचारियों ने 25 साल या उससे अधिक की सेवा पूरी कर ली है तो उसे रिटायरमेंट के ठीक पहले के 12 महीने के औसत मूल वेतन का आधा अर्थात, उसका 50% पेंशन मिलेगा। इसी तरह अगर किसी कर्मचारी ने 10 साल की सेवा पूरी कर ली है तब भी वह पेंशन पाने का हकदार होगा और उसका पेंशन उसके सेवाकाल की अवधि और मिलने वाले वेतन के अनुपात में होगा परंतु न्यूनतम रु.10000 के पेंशन की गारंटी होगी।
2. **सरकारी अंशदान में वृद्धि -** एकीकृत पेंशन योजना के अंतर्गत सरकार का अंशदान पहले की अपेक्षा ज्यादा होगा । जहां सरकार का अंशदान एनपीएस में

सरकारी कर्मचारियों के मूल वेतन और महंगाई भत्ता का 14% होता था, वह इस नई पेंशन योजना में बढ़कर 18.5% हो जाएगा परंतु सरकारी कर्मचारियों द्वारा दिए जाने वाले अंशदान में कोई बढ़ोतरी नहीं होगी। इस तरह बढ़े हुए अंशदान का बोझ केवल सरकार उठाएगी और कर्मचारियों पर अंशदान का कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा।

3. **सुनिश्चित फैमिली पेंशन** - पेंशनर की मृत्यु के बाद इस नई योजना में सुनिश्चित फैमिली पेंशन की गारंटी दी गई है । पेंशनभोगी की दुर्भाग्यपूर्ण मृत्यु हो जाने की स्थिति में पेंशनर को मृत्यु से ठीक पहले मिलने वाली पेंशन राशि का 60% फैमिली पेंशन के रूप में दिया जाएगा।
4. **महंगाई के अनुसार पेंशन में बढ़ोतरी** - एकीकृत पेंशन योजना में कर्मचारियों के पेंशन में महंगाई के अनुसार समय-समय पर बढ़ोतरी भी होती रहेगी। पुरानी पेंशन योजना के समान इसमें भी समय-समय पर महंगाई राहत बढ़ेगी क्योंकि इसे मुद्रास्फीति सूचकांक से जोड़ दिया गया है। महंगाई राहत अखिल भारतीय उपभोक्ता मूल्य सूचकांक के अनुसार उसी अनुपात में बढ़ेगी जिस नंबर अनुपात में यह कार्यरत कर्मचारियों के लिए बढ़ेगी।
5. **ग्रेच्युटी एवं एकमुश्त राशि का भुगतान**- सेवानिवृत्ति के समय कर्मचारियों को ग्रेच्युटी के साथ-साथ एकमुश्त राशि भी इस पेंशन योजना के तहत देने की व्यवस्था की गई है। एकमुश्त राशि सेवानिवृत्ति की तारीख को पूरा की गई प्रत्येक छमाही के लिए मासिक परिलब्धि (जिसमें मूल वेतन और महंगाई भत्ता शामिल होंगे) का 1/10 होगी। इस तरह यह योजना पहले से आकर्षक एवं लाभदायक लगती है। इस एककमुश्त राशि का किसी भी तरह का प्रभाव सुनिश्चित पेंशन की राशि पर नहीं पड़ेगा।

इसके अतिरिक्त यह एकीकृत पेंशन योजना एनपीएस के अधीन सेवानिवृत हो चुके कर्मचारियों पर भी लागू होगी। उनके सेवा निवृत्ति के लाभ की गणना यूपीएस के नए प्रधानों के अनुसार फिर से की जाएगी और उन्हें मिलने वाली बकाया राशि को भविष्य निधि में मिलने वाले ब्याज के दर के साथ जोड़ कर दिया जाएगा।

एकीकृत पेंशन योजना पहले केंद्र सरकार के कर्मचारियों के लिए लागू होगी जिसे बाद में राज्य सरकारों द्वारा भी अपनाया जा सकता है। इस तरह केंद्र और राज्य सरकार के कर्मचारियों की बड़ी संख्या इस नई एकीकृत पेंशन योजना (यूपीएस) से लाभान्वित होगी।

यद्यपि समग्र रूप से यह सरकारी कर्मचारियों के लिए लाभकारी योजना है जो पेंशन और फैमिली पेंशन की गारंटी देता है परंतु जानकार इसे पुरानी पेंशन योजना का समुचित विकल्प नहीं मानते हैं। उनके अनुसार यद्यपि एकीकृत पेंशन योजना पेंशन और फैमिली पेंशन की गारंटी देता है परंतु कर्मचारियों से अंशदान के रूप में प्रतिमाह एक मोटी राशि सरकार द्वारा वसूली जा रही है। साथ ही इसमें पेंशन राशि के संशोधन के बारे में स्पष्ट रूप से कुछ भी नहीं कहा गया है। इसी तरह इसमें एनपीएस से यूपीएस में माइग्रेट करने की प्रक्रिया भी अभी तक अस्पष्ट है।

निष्कर्ष के तौर पर कहा जा सकता है कि यूपीएस का उद्देश्य कर्मचारियों की आकांक्षाओं के साथ-साथ सरकार द्वारा राजकोषीय लागत को संतुलित करना है। यह पुरानी पेंशन योजना और राष्ट्रीय पेंशन प्रणाली (एनपीएस) के बीच की योजना है जो पेंशन और फैमिली पेंशन की गारंटी देता है तथा मुद्रास्फीति की सुरक्षा के साथ-साथ बाजार के जोखिम को कम कर देता है।

मनुष्य, मानवता और आज की परिस्थितियाँ

सहदेव सिंह पुरती
पूर्व उप महाप्रबंधक/राजभाषा
दक्षिण रेलवे

मनुष्य सृष्टि का सबसे विकसित प्राणी है, जो अपनी बुद्धि और संवेदनाओं के कारण अद्वितीय है। मनुष्य का अस्तित्व और उसकी उन्नति मानवता पर आधारित है, जो सहयोग, सहानुभूति और एक-दूसरे के प्रति प्रेम को बढ़ावा देती है। मानवता का उद्देश्य समाज को एकजुट रखना और हर व्यक्ति के जीवन को गरिमा प्रदान करना है।

आज की परिस्थितियों में, जब विज्ञान और तकनीक ने जीवन को सरल और तेज़ बना दिया है, वहीं नैतिक और सामाजिक मूल्य कमजोर होते जा रहे हैं। स्वार्थ, हिंसा और असहिष्णुता का बढ़ता स्तर मानवता के लिए चुनौती बन गया है। वैश्विक समस्याएं जैसे जलवायु परिवर्तन, आर्थिक असमानता और युद्ध, मनुष्य की संवेदनशीलता और एकता की परीक्षा ले रही हैं।

इन चुनौतियों के बावजूद, मानवता की शक्ति हमें आशा देती है। जरूरत है कि हम अपने मूल्यों की ओर लौटें, एक-दूसरे के प्रति संवेदनशीलता रखें और सामूहिक प्रयास से एक बेहतर समाज का निर्माण करें। मनुष्य को यह समझना होगा कि सच्ची प्रगति केवल भौतिक नहीं, बल्कि आध्यात्मिक और नैतिक उन्नति में है। यही मानवता की सच्ची जीत होगी

मनुष्यों में मानवता का ह्रास और उसकी बुराइयां

मानवता मनुष्य के अस्तित्व का आधार है। यह संवेदनशीलता, परोपकार और आपसी सहयोग की भावना को प्रोत्साहित करती है। जब मनुष्यों में मानवता का ह्रास होने लगता है, तो समाज में अनेक प्रकार की बुराइयों का जन्म होता है।

पहला और सबसे बड़ा प्रभाव हिंसा और असहिष्णुता के रूप में दिखाई देता है। जब लोग एक-दूसरे के प्रति सहानुभूति और सम्मान खो देते हैं, तो समाज में अशांति फैलती है। स्वार्थ और लालच की भावना बढ़ने लगती है, जिससे भ्रष्टाचार, शोषण और आर्थिक असमानता जैसी समस्याएं उत्पन्न होती हैं।

दूसरा, सामाजिक ताने-बाने का कमजोर होना है। जब मानवता समाप्त होती है, तो समाज में परिवार और समुदायों के बीच आपसी सहयोग की भावना कम हो जाती है। इसका परिणाम रिश्तों में दरार, अकेलेपन और मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं के रूप में सामने आता है।

तीसरा, पर्यावरण और प्रकृति के प्रति लापरवाही बढ़ जाती है। मानवता का अभाव मनुष्य को केवल अपनी सुविधाओं पर केंद्रित कर देता है, जिससे प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध दोहन और पर्यावरणीय संकट बढ़ता है।

इस प्रकार, मानवता का ह्रास समाज को विघटन और विनाश की ओर ले जाता है। इसे रोकने के लिए हमें अपने मूल्यों को पुनः जागृत करना होगा और एक-दूसरे के प्रति संवेदनशीलता बढ़ानी होगी

सरकार द्वारा मानवता को बढ़ावा देने के प्रयास

आज की दुनिया में मनुष्यता को बनाए रखना एक बड़ी चुनौती बन गया है। समाज में बढ़ती असहिष्णुता, हिंसा और सामाजिक असमानताओं के बीच, सरकारें विभिन्न योजनाओं और कार्यक्रमों के माध्यम से मानवता को बढ़ावा देने का प्रयास कर रही हैं।

पहला और सबसे महत्वपूर्ण कदम शिक्षा के माध्यम से नैतिक मूल्यों को विकसित करना है। सरकारें स्कूलों और कॉलेजों में नैतिक शिक्षा और सामाजिक संवेदनशीलता को पाठ्यक्रम का हिस्सा बना रही हैं। इस पहल का उद्देश्य नई पीढ़ी को सहिष्णुता, सहानुभूति और परोपकार के महत्व को समझाना है।

दूसरा, सामाजिक कल्याण योजनाएं हैं जो समाज के वंचित वर्गों की मदद करती हैं। जैसे गरीबों के लिए भोजन, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करना। ऐसी योजनाएं आर्थिक असमानता को कम करती हैं और समाज में समानता और मानवता की भावना को बढ़ावा देती हैं।

तीसरा, पर्यावरण संरक्षण और सामुदायिक विकास की योजनाएं हैं। स्वच्छ भारत अभियान, वृक्षारोपण कार्यक्रम और जल संरक्षण जैसे कदम न केवल पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता बढ़ाते हैं, बल्कि समाज में सामूहिक जिम्मेदारी की भावना भी पैदा करते हैं। इसके अलावा, सरकारें मानव अधिकारों की सुरक्षा, धर्मनिरपेक्षता और सामाजिक सद्भाव को बढ़ावा देने के लिए सख्त कानून लागू कर रही हैं।

इन प्रयासों के माध्यम से सरकारें समाज में मनुष्यता के मूल्यों को बनाए रखने और उन्हें सुदृढ़ करने की दिशा में काम कर रही हैं

मेरी कविताएं

अभय खन्ना
पूर्व महाप्रबंधक
सवारी डिब्बा कारखाना

आज की राजभाषा

फर्राटेदार इंग्लिश , हिंदी में हाथ तंग है,
ये आज कल के, जेनरेशनों की जंग है.

हम और माँ बाप थे हमारे, हिंदी के युग के पाले,
किसने बनाई खिचड़ी, इंग्लिश से पड़ गये पाले.

विद्यालयों में हमने, सीखी थी संस्कृत भी,
श्लोकों की दुनिया में अजनबीयत नहीं थी.

प्रेमचंद हो या दिनकर, बच्चनजी या जयशंकर,
साहित्य था फिज़ा में, हिन्दी बनी तीर्थंकर.

स्वतंत्रता थी हमने बलिदानों से पायी,
पर कहीं तो उसमें हिन्दी भी दी दिखाई .

वन्देमातरम का नारा, तिरंगे का वो गाना ,
झंडे को हाथ लेकर,जोशीला तानाबाना.

वीरों की प्रभात फेरी, हिंदी का बोलबाला,
और अंत में अंग्रेज़ों को, देश से निकाला.

भारतीयता का अपना, आवरण है हिन्दी,
विश्व की धरोहर, उसके माथे की है ये बिन्दी.

रश्मिरथी, गीतांजली या प्रेमाश्रम, गबन हो,
चाह है हमारी, सुंदर हिंदी साहित्य का सृजन हो.

शहरों में अंग्रेजियत की चादर हवा में छाई,
हिन्दी तो आजकल मुश्किल से देती दिखाई.

कहने को तो हिन्दी है भारत की राजभाषा,
चर्चे मगर अभी भी, इंग्लिश में हैं ज़्यादा.

मैं कौन हूं

मैं कौन हूं, ये प्रश्न व्यापक,
सुना करता था, जब से था बालक.
सकल ब्रम्हांड की किरणों से जुड़ा,
मैं हूँ आकांक्षाओं का एक पुतला.

मेरे अस्तित्व में मिश्रित तमस भी, रोशनी भी,
तनिक उन्माद भी कुछ शून्यता कुछ पूर्णता भी.
मेरे अस्तित्व में अति सूक्ष्म कण हैं समाए,
मेरा अस्तित्व है अनंत आशायें फैलाये.

मेरे अस्तित्व में पलते हैं वृक्ष, प्रियवर,
समेटे अपनी जड़ों को मेरे भीतर.
ये पीते जा रहे हैं विष लहू से,
बिखेरे जा रहे सुरभि नयन से.

मेरा अस्तित्व है ना किसी की धरोहर,
सदा रहता है ये बन कर मेरा अपना सहोदर .
कभी ये प्रश्न बन पांचाली के आंसू सा ढला है,
और कभी प्रश्नों के घेरे में पितामह को लिया है.

मेरे अस्तित्व का युग है सनातन,
सरीखा ज्यों दरारों में पनपता वृक्ष जीवन.
जिंदगी का ये भी तो एक रूप ही है,
आना जाना सृष्टि नियम स्वरूप भी है.

ये ही प्रश्नों की जिज्ञासा लिये अर्जुन बना है,
ये ही उपदेश देते कृष्ण सा मन में खड़ा है.

सकल ब्रम्हांड की किरणों से जुड़ा,
मैं हूँ आकांक्षाओं का एक पुतला.

मैं अभय

हिंदी के समक्ष की चुनौती 'हिंग्लिश'

श्याम सुंदर कथूरिया
संयुक्त निदेशक (राजभाषा)
कर्मचारी राज्य बीमा निगम

भारत द्वारा अंग्रेजों से मुक्ति पाने के बावजूद हिंदी के लिए मार्ग इतना सुगम नहीं रहा। हिंदी को तब से लेकर आज तक संघर्ष करना पड़ रहा है। हिंदी ने अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ी है। सरकारी और गैर-सरकारी प्रयासों से हिंदी स्वयं को स्थापित करने का प्रयत्न कर ही रही है कि इसी बीच उसके समक्ष एक नई चुनौती उभर कर सामने आ गई है। यह चुनौती है, हिंदी के नए स्वरूप 'हिंग्लिश' की। कुछ लोग इसे 'हिंग्रेजी' या 'खिचड़ी' भाषा भी कहते हैं। इसके अंतर्गत हिंदी भाषा में अंग्रेजी के शब्दों के प्रयोग से एक नई विकृति ने जन्म ले लिया है, जो हिंदी के भविष्य के लिए एक बड़ा खतरा लग रही है। अनेक भाषा चिंतकों ने इस विषय पर समय-समय अपने विचार रखे हैं, उन पर यहां विमर्श किया जा रहा है।

वर्तमान में हिंदी और भारतीय भाषाओं के विकास में अंग्रेजी से अधिक बाधक है, अंग्रेजियत। हम अंग्रेजी के प्रभाव के कारण ही अंग्रेजियत भरा व्यवहार करने लग गए हैं। विशेषतः सामान्य हिंदी भाषी वर्ग आर्थिक एवं सामाजिक रूप से शोषित रहा है, इसलिए उस पर अंग्रेजी का प्रभाव भी अधिक रहा है। समाज में मध्यम वर्ग की स्थिति बहुत विचित्र है। वह हिंदी और अंग्रेजी के दो पाटों में पिस रहा है। अंग्रेजी वह पाना चाहता है तथा हिंदी वह छोड़ नहीं सकता। विद्यालयों में, आपत्ति अंग्रेजी विषय पढ़ाने से नहीं, अपितु अंग्रेजी माध्यम से है, जिसने भारतीयों को अपनी भाषाओं से अलग करना शुरू कर दिया है। आजकल जब कोई व्यक्ति बोलता है कि "माफ कीजिए, मेरी हिंदी कमजोर है", तो उसे पढ़ा-लिखा माना जाता है। दूसरी ओर यदि कोई बोले कि मेरी अंग्रेजी कमजोर है, तो उसे अनपढ़ माना जाता है। दुर्भाग्य से आज सुंदरता का अर्थ, गोरा रंग और शिक्षा का अर्थ, अंग्रेजी ज्ञान होकर रह गया है। लोग कहते हैं कि अंग्रेजी सीख ली तो मान-सम्मान मिलेगा, नौकरी मिलेगी और पढ़े-लिखे कहलाएंगे।यहां अंग्रेजी भाषा जानने तक तो ठीक है, परंतु हमने अंग्रेजी में सोचना भी शुरू कर दिया है। समझ लेना चाहिए कि हम कितनी ही अच्छी अंग्रेजी जान लें, परंतु अंग्रेज हमें कभी भी अपने बराबर नहीं समझेंगे। विदेशी भाषा बच्चों पर अनावश्यक दबाव डालने, रटने और नकल करने की प्रवृत्ति को प्रोत्साहित करती है। इससे चिंतन और लेखन में मौलिकता का अभाव भी पैदा होता है। अंग्रेजों ने हम पर राज किया, इसलिए अंग्रेजी ताकत का प्रतीक लगती है और मोहवश हम अंग्रेजी का प्रयोग करने लगते हैं। अंग्रेज तो इस देश से वर्ष 1947 में चले गए थे, परंतु अंग्रेजी का राज अभी भी चल रहा है। परिणामस्वरूप हमने हिंदी को मातृ-भाषा से मात्र भाषा बना दिया है,जबकि मातृ-भाषा हमारी सांस्कृतिक मान्यताओं, इतिहास और परंपराओं को जोड़ती है।

वस्तुतः हिंदी भाषा में अंग्रेजी शब्दों के आ जाने से हिंदी के नैसर्गिक सौंदर्य में क्षति हो रही है। आज हम 'बोलचाल की हिंदी' के 10 शब्दों के वाक्य में जाने-अनजाने चार या पांच शब्द तो अंग्रेजी के बोल ही देते हैं। वर्ष 2020 में उत्तर प्रदेश में केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के 10वीं और 12वीं के लगभग 800000 छात्र हिंदी विषय में अनुत्तीर्ण हो गए। उन्होंने साहित्य में आम बोलचाल वाली खिचड़ी भाषा का प्रयोग करते हुए confidence, good, disease जैसे शब्दों को देवनागरी में लिखा। बाद में व्यंग्य का विषय यह बना कि हिंदी भाषी क्षेत्र के बच्चे हिंदी विषय में ही अनुत्तीर्ण हो रहे हैं। अंग्रेजी-हिंदी मिश्रित भाषा का प्रभाव इस सीमा तक है कि एक पूर्व प्रधानमंत्री भी एक बार आम चुनाव में बोल चुके थे कि 'हम जीतेंगे या लूज़ेंगे'। सिनेमा जगत में फिल्मों के नाम ही देख लीजिए- लव आजकल, इंग्लिश विंगलिश, जब वी मेट आदि।आज दैनंदिन व्यवहार की चीज़ें- थाली, मेज, कमरा, जुराब आदि हिंदी शब्द अजीब से लगने लगे हैं।

उल्लेखनीय है कि 'नवभारत टाइम्स' सरीखे हिंदी समाचार पत्रों ने तो अंग्रेजी शब्दों के प्रयोग में अति ही कर दी है। पहले इन्होंने अपने समाचारों में यथावश्यक अंग्रेजी के शब्दों को देवनागरी में लिखना शुरू किया, फिर धीरे-धीरे उनकी अनावश्यक संख्या बढ़ाई। अब स्थिति यह हो गई है कि कहीं-

कहीं पर ये अंग्रेजी के उन शब्दों को रोमन लिपि में ही लिखने लग गए हैं। हिंदी पुस्तकों में साहित्य भी इसी शैली में मुद्रित होने लग गया है। हिंदी विज्ञापनों या वीडियो में शीर्षक या चित्र-परिचय देवनागरी की बजाय रोमन लिपि में लिखा जा रहा है। सोशल मीडिया में भी हिंदी संदेशों का आदान-प्रदान रोमन लिपि में हो रहा है। विडंबना यह है कि युवा पीढ़ी को यह स्वीकार्य भी है और उन्हें यही सहज लगता है। इसलिए विकृति की आशंका इस सीमा तक है कि कहीं हिंदी पुस्तकें (साहित्य) रोमन लिपि में न मुद्रित होने लग जाएं।

हिंदी भाषा रूपी पवित्र नदी (अपरिहार्य अंग्रेजी शब्द प्रयोग सहित) को प्रदूषित नदी (अनावश्यक अंग्रेजी शब्द प्रयोग युक्त भाषा) में परिवर्तित किया जा रहा है। स्थिति यहाँ तक बिगड़ चुकी है कि हिंदी के संदर्भ में अंग्रेजी को हत्यारी भाषा कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा।आज अंग्रेजी और हिंदी में क्रमशः शिकारी और शिकार वाला रिश्ता हो गया है। नई हिंगरेजी में केवल सर्वनाम, विभक्ति, अवयव और क्रियाएं ही हिंदी में हैं, शेष अंग्रेजी में। अब यह समस्या भारत की अन्य भाषाओं के साथ भी होती जा रही है। देश में धीरे-धीरे, इंग्लिश का औपनिवेशिक वर्चस्व बढ़ा है। तथापि हिंदी को खतरा इंग्लिश से नहीं हिंग्लिश से है।

यहां एक और बिंदु को संज्ञान में लेना आवश्यक है कि भाषा एक परिवर्तनशील संकल्पना है। इसमें समय के साथ-साथ नए-नए शब्द जुड़ते, तो कुछ प्रयोग से बाहर होते रहते हैं। ये शब्द उसी भाषा से व्युत्पन्न अथवा अन्य भाषाओं से भी हो सकते हैं। इसी को आधार बनाकर कुछ विद्वान तर्क देते हैं कि किसी भाषा में दूसरी भाषा के शब्दों के आ जाने से वह भाषा और अधिक समृद्ध हो जाती है तथा उसमें सहज प्रवाह बना रहता है।इनका मत है कि भारत विविधताओं से भरा देश है, इसलिए भाषा की शुद्धता का आग्रह अनुचित प्रतीत होता है। संप्रेषण में कथ्य महत्त्वपूर्ण होता है न कि भाषा का माध्यम।आज के दौर में, जहां हवा, पानी, खान-पान आदि सब कुछ अशुद्ध हैं, तो वहां भाषा की शुद्धता की कल्पना करना अनुपयुक्त है।कोई सुंदर आभूषण भी बिना मिलावट के नहीं बनता, यह तो भाषा है।

अच्छी बात यह है कि आत्मनिर्भर भारत अभियान के अंतर्गत अब नई शिक्षा नीति के अनुसार भाषाई अवरोधों को समाप्त करने के प्रयास प्रारंभ हो गए हैं।अभियंता और चिकित्सक तक यह मानने लग गए हैं कि उन्हें क्रमशः अपने मिस्त्री और मरीज से उनकी भाषा में ही बात करनी पड़ेगी। दूसरे शब्दों में कहें तो लोक-सेवक को लोक-भाषा अपनानी ही पड़ेगी।जहां तक उच्च शिक्षा का प्रश्न है तो उसमें भी अब अंग्रेजी आड़े नहीं आ रही है। अबहमारे यहां हिंदी पाठ्य पुस्तकों के लिए अनुवाद की विशेष व्यवस्था सहित अनुवाद को महत्व दिया जा रहा है।हिंदी को केवल बोलचाल तक ही सीमित नहीं रहनी चाहिए। हमें इसे शिक्षा, विज्ञान, प्रौद्योगिकी तथा शोध की भाषा बनाना होगा, क्योंकिकिसी भी शोध में मौलिकता अपनी भाषा से ही आती है। जिस भाषा में तकनीक या विज्ञान होगा, उस भाषा का दुनिया पर भी राज होगा।हम हिंदी को इतना समृद्ध कर दें कि हमें किसी दूसरी भाषा की ओर देखना ही ना पड़े।हमें स्वयं और अपनी भाषा पर विश्वास करना चाहिए।

जिस प्रकार हमारी संस्कृति, परंपराएं, चिकित्सा पद्धति आदि महत्वपूर्ण हैं, उसी प्रकार हमारी भाषा भी बहुत महत्वपूर्ण है।किसी भी स्वतंत्र राष्ट्र की पहचान स्वभाषा, स्वदेशी तथा स्वाभिमान होते हैं। यहां मुद्दा अंग्रेजी को हटाने का नहीं, अपितु हिंदी को पुनस्थापित करने का है। हमें अंग्रेजी का नहीं उसके वर्चस्व का विरोध करना है क्योंकि अंग्रेजी के प्रभाव से सांस्कृतिक एकता और अस्मिता बोध क्षीण हुआ है। ध्यातव्य है कि भारत में विदेशी आक्रांताओं के आगमन से पूर्व, विश्व के सकल घरेलू उत्पाद में भारत का दो तिहाई हिस्सा था। विदेशी सभ्यता और संस्कृति के प्रभाव में आने से ही भारत का पतन प्रारंभ हो गया। किसी देश को मिटाने का सबसे आसान और कारगर तरीका है, उसकी भाषाएं मिटा देना। भाषा मिटेगी तो उसका ज्ञान, विज्ञान, धर्म, संस्कृति आदि सब मिट जाएंगे। हिंदी केवल एक भाषा नहीं है, यह हमारी संस्कृति है, हमारी पहचान है एवं हमारी राष्ट्रीय अस्मिता है।जो देश अपनी धरोहर और विरासत सुरक्षित नहीं रख सकता वह देश ही क्या हुआ। बिखरा हुआ परिवार और बिखरा हुआ समाज कभी बाजा नहीं बन सकता, लेकिन वह आपस में लड़कर दूसरे को बादशाह जरूर बना सकता है। सोच भले ही नई रखी जाए, परंतु संस्कार तो पुराने ही अच्छे होते हैं।स्मरण रखना चाहिए कि जब कोई भाषा मरती है, तो उसकी संस्कृति भी मरती है। इसलिए हमें अपने घरों में, अपनी भाषा के प्रति गौरव की घुट्टी बच्चों को पिलानी पड़ेगी। यह सत्य है कि गाय का दूध, कभी मां का दूध

नहीं हो सकता।जब तक अंग्रेजी का यथासंभव तिरस्कार नहीं होगा, तब तक हिंदी का यथोचित सत्कार नहीं होगा। याद रहे, पहले भाषा जाती है, फिर रिश्ते नाते, फिर संस्कृति और फिर राष्ट्र चला जाता है।भाषा केवल संप्रेषण ही नहीं बल्कि संस्कृति, पहचान और विरासत की वाहक होती है।

उपर्युक्त विवेचन से यह तथ्य स्पष्ट होना स्वाभाविक है कि हम हिंदी भाषा-प्रयोग में कितने शुद्धतावादी बनें और अंग्रेजी भाषा के शब्दों का कितना प्रयोग करें तो इस संबंध में कहा जा सकता है कि जब हमें वायु, पानी, भोजन और वातावरण शुद्ध ही चाहिए तो फिर भाषा शुद्ध क्यों नहीं।जब अंग्रेजी में लेटिन शब्द सहर्ष स्वीकार किए जाते हैं, हिंदी में संस्कृत शब्दों को लेने पर आपत्ति क्यों की जाए? हमें विचार करना चाहिए कि क्या अंग्रेजी मीडिया मिलावटी भाषा का प्रयोग करता है? क्या अंग्रेजी मीडिया में कठिन शब्द नहीं होते? तब इस संबंध में हिंदी पर प्रश्न क्यों उठाया जाता है? हम सब जानते हैं कि मातृ-भाषा हृदय की भाषा कहलाती है। इसलिएमुंह से निकली हुई बात केवल श्रोता के कानों तक पहुंचती है, जबकि हृदय से निकली बात हृदय तक पहुंचती है। वैश्वीकरण के दौर में हिंदी भाषा में हिंदी और अंग्रेजी शब्दों के प्रयोग के बीच सीमा रेखा खींचना थोड़ा कठिन प्रतीत होता है। फिरभी कहा जा सकता है कि जिन वस्तुओं या संकल्पनाओं के लिए हिंदी भाषा में हमारे पास पहले से ही शब्द हैं, तो उनके स्थान पर अंग्रेजी शब्दों के प्रयोग का कोई औचित्य नहीं है। हम हिंदी में अंग्रेजी शब्द 'टिकट', 'बस' आदि का तो प्रयोग कर सकते हैं, परंतु 'कुर्सी', 'तौलिया' आदि के स्थान पर 'चेयर', 'टॉवल' आदि शब्द का नहीं। यहां दोष, भाषा का नहीं, प्रयोक्ताओं का है। हमें हिंदी भाषा में अंग्रेजी शब्दों के प्रयोग की अपरिहार्यता तथा अनावश्यकता के अंतर को सदैव संज्ञान में रखना चाहिए। हम हिंदी भाषा का प्रयोग करते समय सचेत और सजग रहकर ही 'हिंग्लिश' की चुनौती को परास्त कर सकते हैं।

माँ

रवि प्रकाश शालीवाल
सहायक अनुसंधान अधिकारी (जैवप्रौद्योगिकी)
सीएसएमसीएआरआई, चेन्नै

अस्तित्व मेरा तुझसे है,
मेरी पहचान तुझसे है,
मेरे शरीर में प्राण तुझसे है,
मेरी आत्मा का परिमाण तुझसे है,
तेरी ऊंगली पकड़ कर चलना सीखा,
इस बात का गुमान कब से है,
तूने सिखाया था जो पहला शब्द,
मुझे जीवन का "माँ",
मुझे याद तब से है,
मेरे प्रति तेरी छोटी छोटी चिंताओं में ,
रतजगो की लोरियों और हर पल दुआओं में,
बेशुमार झलकता अटूट स्नेह और प्यार,
मेरी जीवन सरिता की पतवार तुझसे है,
मेरा तो सारा कारोबार तुझसे है,
बस तुझी से है।

महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिंदी नवजागरण

महेश्वरी रंगनाथन
सेवा निवृत्त वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी
दक्षिण रेलवे

ऐसे भी साहित्यकार हैं जो न केवल साहित्यकार है बल्कि युग निर्माता एवं भाषा के क्षेत्र में उनका योगदान अविस्मरणीय एवं अनिवार्य रहा है। ऐसे विशिष्ट साहित्यकार है। डॉ महावीर प्रसाद द्विवेदी। आज जो हिंदी है, लिंग निर्धारण है, मानक रूप है, उसके जनक डॉ महावीर प्रसाद द्विवेदी जी है। हिंदी के नवजागरण क्षेत्र में उन्हें अद्वितीय, अतुलनीय, अविस्मरणीय सहज रूप में साबित करने के लिए सरस्वती पत्रिका एक काफी है। हिंदी नवजागरण क्षेत्र में उनके योगदान के कुछ अंशों को यहाँ देखेंगे।

हिंदी प्रदेश में नवजागरण 1857 ई. स्वाधीनता संग्राम के साथ शुरु हुआ। महावीर प्रसाद द्विवेदी का जन्म 1864 में दौलतपुर में हुआ (अब-रायबरेली) । उनकी मृत्यु 1938 में 74 वर्ष की आयु में हुई थी। हिंदी के आधुनिक काल के प्रथम चरण 1868-1893 को भारतेन्दु युग कहा जाता है। द्वितीय चरण 1893-1918 को द्विवेदी युग कहा जाता है। वे 17 वर्ष सस्वती का भार अपने कंधे पर वहन किया था।

द्विवेदी जी ने बड़ी कठिनाइयों के बीच शिक्षा प्राप्त की थी। स्कूली शिक्षा बहुत साधारण थी। अपनी साधारण शिक्षा को उन्होंने विद्यालयों में गए बिना अपने ही प्रयत्न से प्राप्त किया। रेलवे में नौकरी मिली। पर बाद में इस्तीफा दे दिया। हिस्टीरिया रोग से पीडित पत्नी गंगा में डूब जाने के बाद 40-42 के उम्र में निस्संतान विधुर पति ने अपना शेष काल साहित्य सेवा और हिंदी नवजागरण के लिए बिताया। वे आवश्यकता से अधिक कोमल प्रकृति के थे।

सरस्वती एक प्रतिष्ठित पत्रिका थी उस पत्रिका में अपना लेख छपवाने का प्रयत्न सब प्रतिष्ठित लेखक प्रयत्न करते थे और जब न छपती तो शत्रु हो जाते थे। द्विवेदी जी ने अपनी आत्मकथा में कहा "सरस्वती पत्रिका के प्रकाशन के दौरान मैंने कभी अपनी आत्मा का हनन नहीं किया"। बहुत ही नेक और समर्पित साहित्य सेवा के रूप में **सरस्वती पत्रिका** का प्रकाश उन्होंने किया।

महावीर प्रसाद द्विवेदी धार्मिक रूढियों और संकीर्ण मतवाद के विरोधी थे। निम्नवर्ग के प्रति उन्हें गहरी सहानुभूति थी। द्विवेदी का सामाजिक दृष्टिकोण मूलत: किसानों का था। राष्ट्रीय स्वाधीनता की भावना इन्हें प्रेरित करती थी। भारत की नारी पर इन्हें विशेष श्रद्धा थी। 1903-1920 के बीच सरस्वती में ऐसे प्रगतिशील तत्वों को आधार बनाकर कई लेख उन्होंने खुद लिखा, दूसरों से लिखवाया। कुछ छद्म नाम, उपनाम पर लिखा। राम विलास शर्मा को द्विवेदी के लेखों के प्रति विशेष आकर्षण था।

जो कुछ उन्होंने लिखा अपने भाइयों को जगाने और उनको उनकी दुर्दशा का कारण समझाने के लिए लिखा। सरस्वती राजनैतिक पत्रिका न थी। सरकार का कोप भाजन बनना न चाहा। लेकिन पत्रिका-धर्म का पालन तटस्थ रुपेण करना भी चाहा। लेखक को सच बात कहने में कभी नहीं डरना चाहिए। वे सदा निर्भीक और तटस्थ रहे। भारत के प्रति माननीय चिंतन आदि से प्रभावित राम विलास शर्मा ने कहा कि वे आधुनिक हिंदी के निर्माता हैं, विधाता हैं-सर्वस्व हैं। राष्ट्रभाषा हिंदी के मूर्तिमान स्वरूप हैं।

द्विवेदी युग के व्यापक नव जागरणवाले काम को हम इतना भूल गए हैं कि उद्धरणों के बिना यदि किसी से कहा जाए कि द्विवेदी ने साम्राज्यवाद का विश्लेषण किया है या मज़दूरों के संगठन बनाने पर जोर दिया है तो उन्हें विश्वास न होगा।

महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिंदी नवजागरण रचना वैशिष्ट्य-हिंदी प्रदेश में नवजागरण 1857 ई. स्वाधीनता संग्राम से शुरु होता है। नवजागरण का अर्थ - आर्थिक, शैक्षिक, मानसिक, लौकिक, अलौकिक, भाषिक, बुद्धिगत, क्षेत्रों से संबंधित है। वैसे उनकी हिंदी शब्द हिंदी भाषा-भाषी के साथ-साथ भाषा को भी समेटकर चलता है। उनके अनुसार हिंदी नवजागरण मतलब है हिंदी समुदाय, याने हिंदी जाति के साथ-साथ हिंदी भाषा भी।

सन् 1857 का स्वाधीनता संग्राम हिंदी प्रदेश के नवजागरण की पहली मंजिल थी। दूसरी मंजिल भारतेन्दु हरिश्चंद्र का युग था। हिंदी नवजागरण की तीसरी मंजिल महावीर प्रसाद द्विवेदी और उनके सहयोगियों का कार्यकाल था। सन् 1900 से सरस्वती का प्रकाशन हुआ था और1920 तक द्विवेदी सरस्वती पत्रिका के संपादक रहे।

फरवरी 1939 की सरस्वती में श्यामसुंदर दास ने लिखा था कि द्विवेदी जी का महत्व उनके लेखों में नहीं। उनका महत्व विशेषकर इसी बात में हैं कि उन्होंने भाषा को परिमार्जित और सुंदर रुप देने का कार्य सफलतापूर्वक किया।

द्विवेदी जी अर्थशास्त्र के अध्येता थे। इसलिए भी द्विवेदी जी बहुत से विषयों पर ऐसी टिप्पणियाँ लिख सके जो विशुद्ध साहित्य की सीमाएँ लांग जाती हैं। द्विवेदी जी राजनीति, अर्थशास्त्र के साथ-साथ आधुनिक विज्ञान का भी अपार ज्ञान रखते थे। इसके साथ भारत के दर्शन और विज्ञान की ओर उन्होंने ध्यान दिया। समाजशात्र का अध्ययन गहराई से किया। सरस्वती के माध्यम से उन्होंने लेखकों का ऐसा दल तैयार किया जो इस नवीन चेतना के प्रसार-कार्य में उनकी सहायता किया। द्विवेदी के अथक परिश्रम से सरस्वती एक आदर्श पत्रिका का रूप धारण किया। उन्होंने बड़ी मेहनत से संपंत्ति शास्त्र नामक पुस्तक लिखी जो उनकी लिखी सभी किताबों की तुलना में आकार में बड़ी है।

साहित्यिक क्षेत्र में उन्होंने यह तय कर लिया था कि

1. हिंदी गद्य का विकास करना है
2. आधुनिक हिंदी को विविध विवेचन का माध्यम बनाना है
3. कविता में ब्रजभाषा की जगह खड़ी बोली को प्रतिष्ठित करना है
4. साहित्य से रीतिवाद को निकालना है

इस बीस वर्ष की अवधि में एकाग्र चित से उद्देशित विषय में सफलता प्राप्त किया है। उन्होंने अपने साहित्य में भारत में अंग्रेजी की स्थिति, भारतीय भाषाओं को शिक्षा का माध्यम बनाने की समस्या, भारतीय भाषाओं के बीच संपर्क भाषा की समस्या, हिंदी-उर्दू की समानता और भेद, हिंदी और जनवादीय उपभाषाओं के संबंध आदि पर बहुत गहराई से विचार किया।

भारतेन्दु एवं द्विवेदी युगीन लेखकों ने बार-बार लिखा था कि जब अंग्रेजी विलायत से आते हैं प्राय: कितने दरिद्र होते हैं और जब हिंदुस्तान से अपने विलायत को जाते हैं तब कुबेर बनकर जाते है। राजकाज का पूरा खर्च, सरकारी अफसरों की तनख्वाह से लेकर फौजें रखने और रेलें बनाने तक का खर्च भारत के मजदूरों से वसूल किया जाता था। उन्होंने किसानों को संगठित कराने का बहुत ही प्रयत्न किया।

जून 1914 की सरस्वती में जनार्धन भट्ट का लेख छाप था, जिसके जरिये द्विवेदी का यही कामना थी कि वह दिन बडे ही सौभाग्य का दिन होगा जब कालेज से निकले हुए नवयुवक अपनी- अपनी सनद को जेब में रखें हुए लुहार और बढई आदि के कामों को करने लगेंगे और काम करने से समय मिलने पर शेक्सपियर और मिल्टन, कालिदास और भवभूति से अपना मनोरंजन करेंगे।

स्वयं महावीर प्रसाद द्विवेदी भले ही ईश्वर पर विश्वास करते रहे हो, पर वे उस रूढिवाद का विरोध करते थे जिसके कारण नास्तिक कहलाए थे। द्विवेदी नीति और सदाचार को धर्म मानते थे।

द्विवेदी का नवजागरण मूलत: बुद्धिवादी और रहस्यवाद विरोधी है। 1923 की सरस्वती पत्रिका में द्विवेदी ने गुजराती, बंगला, मराठी आदि भाषाएँ बोलनेवालों से हिंदी को देशव्यापी भाषा के रूप में अपनाने का आग्रह करते हुए अन्य भाषाओं के अधिकारों की भी चर्चा की तथा कहा कि देश-व्यापक भाषा के लिए केवल इतना ही आवश्यक है कि इस विस्तीर्ण देश में जितनी भिन्न-भिन्न भाषाएँ प्रचलित हैं उनके उत्तमोत्वम ग्रन्थों का प्रतिबिम्ब देश-व्यापक भाषा में उतारा जावे। किसी भाषा का कोई भी ग्रन्थ हो, उसकी प्रतिभा हिंदी में आनी चाहिए।

द्विवेदी ने उल्लेख किया कि हिंदी को राष्ट्रभाषा की हैसियत पाने के लिए कितने संघर्षों को झेलना पडा। फरवरी 1917 की सरस्वती में उन्होंने एक टिप्पणी की कि अगर हिंदी को व्यापक भाषा की दर्जा देनी है तो करना चाहिए कि हिंदी प्रचारकों को तैयार करके हिंदीतर प्रांतों में भेजना है। हिंदी के शब्द भंडार, व्याकरण, वर्तनी आदि के विचार से यहाँ हिंदी का स्वरूप स्थिर करना भी एक समस्या बनकर रही। इन सभी समस्याओं से वर्तमान भारत का संबंध बहुत स्पष्ट है।

द्विवेदी जी को खड़ी बोली में रचित भारतेन्दु की कविताएँ बहुत अच्छी लगती थीं। भारतेन्दु कालीन लेखक बालकृष्ण भट्ट, कार्तिक प्रसाद खत्री, दुर्गा प्रसाद मिश्र आदि के लेख प्रकाशित करके, उनके प्रगतिवादी चिंतन से पाठकों को परिचित कराया। द्विवेदी जी अनुवाद को प्रोत्साहित करते थे। उन्होंने हिंदीतर भाषाओं मे उपलब्ध अच्छे-अच्छे साहित्यों का अनुवाद करने का अनुरोध किया। उन्होंने कहा कि इस समय विज्ञान, इतिहास, यात्रा, जीवनचरित्र और समालोचनाओं की हिंदी में बड़ी भारी न्यूनता है। इस न्यूनता को पूरा करना हिंदी बोलनेवालों का परम धर्म है।

अंत में उन्होंने रीतिकालीन कविता एवं उनकी प्रगतिशीलता की परिभाषा व्यक्त करते हुए कहा कि समय के अनुकूल विषयों पर हमें कविता करनी चाहिए और उनके साथ लोगों में सहानुभूति उत्पन्न करने का प्रयत्न करना चाहिए। यह द्विवेदी की उदार दृष्टि का परिचय देता है और भावी आलोचना कार्य का दिशा-निर्देश करता है।

इतना तो सत्य है कि द्विवेदी जी हर दृष्टि से अद्वितीय हैं। उनकी जनजागरण एवं साहित्य सेवा चिरस्मरणीय है, स्पृहणीय है। हर भारतीय के शत-शत नमन सदा उनकी याद दिलाती रहेगी और उनके पथ पर प्रत्येक साहित्यकार को आगे जाने के लिए प्रेरित करती है।

'वक्त गुजर रहा है'

पुष्पा शेषाद्री
वरिष्ठ लेखा अधिकारी
महालेखाकार कार्यालय

मैंने संभाल रखा था
अपनी हर चीज़ जो प्यारी थी,
कुछ उपयोग किया, तो कुछ
देख-देख कर खुश हुए
सोचा नहीं कि वक्त गुज़र रहा है।

मैंने रिश्ते संभाल कर रखे थे
माता-पिता बुर्ज़ुग हो गए
बेटी का ब्याह हो गया
देखते ही देखते
वक्त रेती की तरह हाथ से फिसल गया
एहसास अब होने लगा
कि वक्त गुज़र रहा है।

हम दोष देते रहे वक्त को
जब हमारे पास वक्त बहुत था
कितनों को हमने समय दिया ?
कितने काम अधूरे किए

ईश्वर की देन इस जिंदगी को
क्या हमने भरपूर सम्मान किया
अब न शिकवे करेंगे
शेष वक्त को खूब जियेंगे
क्योंकि बड़ी तेजी से वक्त गुज़र रहा है।

हर दोस्त खास है
हर रिश्ता अनमोल है
हर रोज़ किसी की मुस्कान का कारण बनें
औरों की मुस्कुराहट को समेटें
औरों के दर्द को न अनदेखा करें
गुज़र न जाए वक्त ध्यान रहे
जाने से पहले हम नहीं बता पाएंगे
फिर अफसोस न करना वो गुज़र गए
सूर्यास्त सबके जिंदगी का
एक पढ़ाव है
और उम्र का तकाजा है
इसलिए ये हमेशा ध्यान रहे
कि वक्त गुज़र रहा है।

विवेकानंदर हाउस की कथा

डॉ.ए.श्रीनिवासन
वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी
चेन्नै मंडल

सुंदरतर, सुंदरतम समुद्र-तट में एक है – मेरीना बीच। मेरीना बीच के ठीक सामने ही मद्रास विश्वविद्यालय, प्रेसिडेन्सी कॉलेज, क्वीन-मेरीस कॉलेज, आईजी ऑफीस आदि के साथ-साथ **विवेकानंदर इल्लम** यानी विवेकानंदर हाउस बहुत ही प्रसिद्ध है। विवेकानंदर इल्लम की कथा बहुत ही अनोखी है। उस विशिष्ट पृष्ठभूमि को यहाँ देखेंगे।

पता नहीं कितने लोगों को मालूम है कि इसके भिन्न-भिन्न नाम हैं, जैसे – **आइस हाउस, केसिल केरणन, मरैन मेन्शन आ।** इसी स्थान पर स्वामी विवेकानंद जी ठहरे थे। यही पर दक्षिण क्षेत्र में रामकृष्ण मठ का प्रथम शाखा स्थापित हुआ।

यह स्थान निम्नलिखित कारण से **आइस हाउस** कहा जाता है – अमेरिका के थियूटर नामक व्यक्ति ने आइस हाउस चेन्नै में बनाने के उद्देश्य से 1842 में निर्माण किया था। अमेरिका से आइस का आयात होता था। उसे बचाकर रखने के लिए पहले यह भवन का निर्माण किया गया था। कोलकत्ता, मुम्बई, चेन्नै इन तीन स्थानों पर **आइस हाउस** का भवन निर्माण थियूटर आइस संगठन ने किया। लेकिन वर्तमान में केवल चेन्नै का आइस हाउस है, बाकी दोनों को ध्वस्त कर दिया गया है।

अच्छी तरह आइस बनाने की प्रक्रिया एवं कुशलता भारत में ही आ जाने के कारण 1880 में आइस को सुरक्षित करने का काम भी यहाँ छोड दिया गया था। तब धनवान व्यापारी एवं विवेकानंद के परम भक्त एवं शिष्य श्री पिलिगिरि ने इसे खरीद लिया। उन्होंने इस भवन का नाम अपने दोस्त एवं जज श्री कर्णन का नाम रखना चाहा और **केसिल कर्णन** का नाम रखा। अब इस भवन को ठहरने लायक स्थान बनाने के उद्देश्य से आवश्यक परिवर्तन किया।

पिलिगिरि ने गरीब एवं पढने के लिए इच्छुक, पर सुविधा लुप्त रहनेवाले बच्चों को यहाँ मुफ्त में ठहरने एवं पढने, सीखने के लिए ठहरने का स्थान दिया। यहीं पर श्री चक्रवर्ती राजगोपाचारी ने श्री विवेकानंदर से मिले।

1893 में चिकागो में सुप्रसिद्ध, विश्व व्यापी भाषण देने के बाद अन्यान्य जगहों पर भी भाषण देने के बाद स्वामी विवेकानंद जी 1897 को भारत आये। इसी आइस हाउस में 6 फरवरी से 14 फरवरी तक ठहरे। आश्चर्य की बात यह है कि उन्हें स्वागत करने के उद्देश्य इस इलाके के सारे मछुआरे दीप जलाये थे जिसके लिए इतिहास गवाह है।

प्रत्येक दिन स्वामी विवेकानंद भाषण देते थे। उन नौ भाषण बहुत ही मशहूर है और इतिहास ने उसे अक्षरश: लिपिबद्ध कर दिया। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में शामिल होने के लिए सबको आह्वान किया। तमिलनाडु ही नहीं भारत के कोने-कोने से उनका दर्शन करने के लिए लोग आते रहे और सदा स्वामी विवेकानंद लोगों के बीचों-बीच ही दिखाई पडे। उनके दर्शन के लिए लोग बेताब रहे। सबका दर्शन बहुत ही विनयी होकर दिया और अपनी असीम करुणा का प्रदर्शन स्वामी विवेकानंद जी ने किया। इन नौ दिनों में भी वे गहरे ध्यान में डूबते थे जिसे शांत होकर दर्शक देख पाये थे। वे दो-तीन दिन मेरीना बीच में भी नहाये थे। बहुत दूर तक मछुआरों के साथ तैरकर लौटते थे।

जब कोलकत्ता के लिए वे निकलने लगे तब सभी ने अश्रुपूर्वक विदा तो दी साथ में यह विनती की कि आपके निकटस्थ किसी को भेजिए ताकि आपके भाव एवं विचारों को सदा हम याद रख पाये। उन्होंने भी वादा किया कि किसी योग्य को भेजेंगे। और कहे अनुसार श्री रामकृष्णानंदर को उनके प्रतिनिधि के रूप में भिजवाया।

श्रीरामकृष्णर इस आइस हाउस को ही मठ माना। रामकृष्ण एवं विवेकानंद के पथ पर सभी को ले जाने का सारा काम उन्होंने किया। उनके बाद शशि महाराज इस पद को संभाला यानी मठ के अध्यक्ष बने। रामकृष्णानंदर सर्वत्र जाकर वेद-सार का प्रचार-प्रसार करने लगे और उसकी आवश्यकता समझाने लगे। लेकिन यह काल बहुत ही कठिन काल रहा है।

पैसों की कमी थी। मठ को संभालना था। कई दिन वे दोनों भूखे भी रहे।

फिर धीरे-धीरे बहुत सारे सन्यास प्राप्त रामकृष्ण के भक्त यहाँ आने लगे। बसंत राज ने शशि महाराज के लिए बहुत ही निकट रहकर सारी सुविधाएँ प्रदान की। यहाँ उल्लेखनीय है कि स्वामी विवेकानंद जी ने चेन्नै को ही नहीं अमेरिका को भी अपने शिष्यों को भेजते थे और सत्य का प्रचार करने, महसूस कराने के विषय पर ज़ोर देते थे।

1899 में पुन: दूसरी बार स्वामी विवेकानंद जी चेन्नै पधारे थे। लेकिन कोलकत्ता में प्लेग फैला हुआ था। इसलिए वहाँ से आनेवाले किसी को भी बंदरगाह से अंदर आने नहीं देते थे। उनको आइस हाउस आये बिना ही लौटना पडा। फिर भी मठ के लिए लाये विभिन्न वस्तुओं को जैसे-तैसे उन्होंने पहुँचा ही दिया था। हालांकि बहुत-सी समस्याओं का सामना करना पडा। मठ से प्रसाद एवं मिठाई उन्हें पहुँचायी गयी।

कई वर्ष स्वामी विवेकानंद जी के जन्म दिन समारोह बहुत कोलाहल रूप में वहाँ आइस-आउस में मनाया गया। उल्लेखनीय बात यह है कि उन दिनों में ही लगभग तीन हजार लोगों को खाना खिलाया गया था।

4 जुलाई 1902 के स्वामी जी स्वर्ग सिधार गए । स्वामी जी की मृत्यु के बाद अयरलांड की शिष्या सिस्टर निवेदिता आइस-हाउस आयी और ठहरने लगी। स्वामी जी की मृत्यु के बाद के प्रथम जन्म दिवस समारोह मनाने तक यहीं रही। सुप्रसिद्ध व.उ.चिदम्बरनार भी आईस-हाउस आये थे।

गरीब बच्चों को पढ़ने के लिए आइस हाउस मठ ने एक बहुत बडा स्थान मैलापूर में लिया था। वहीं पर आज विवेकानंद कॉलेज और रामकृष्ण मिशन का छात्रवास है।

धीरे-धीरे दक्षिण भारत भर रामकृष्ण मठ फैला। सर्वत्र रामकृष्ण एवं विवेकानंद के विचारों का प्रचार होने लगा।

खेद की बात यह है कि 1902 में ही आइस-हाउस के मालिक पिलिगिरि की मृत्यु हो गयी। उनके बाद उसका रखरखाव करना बहुत मुश्किल हो गया और भवन का नीलाम हो गया। आंध्र के जक्कैया ने उसे खरीद लिया था। मठ को खाली करना पड़ा । संयोगवश किसी भक्त ने मैलापूर में मुफ्त में ठहरने एवं उपयोग करने के लिए स्थान दिया। वहीं पर मठ फिर से अपना काम चालू किया। खेद की एक और बात यह है कि जक्कैया ने भी उस स्थान का उपयोग नहीं किया। चंद दिनों में बंद करके चाबी देकर चले गये। 1917 में ब्रिटिश सरकार ने उसे खरीद लिया। उसका नाम बदलकर **मरैन मैनशन** रख लिया। ब्रिटिश से किराये पर महिला सुधारक श्रीमती सुब्बलक्ष्मी ने लिया। सभी बालिकाओं को पढ़ाना चाहती थी। वे ही आज के शारदा विद्यालय के सूत्रधारी एवं पोषक हैं। उन्होंने बालिकाओं के लिए टंकण एवं बी.एड विद्यालय भी प्रप्रथम खोलने की व्यवस्था की।

विवेकानंद जी जिस आइस-हाउस में ठहरे उसके पास ही विवेकानंद जी की मूर्ति स्थापित की गयी है। जिसका उद्घाटन प्रथम राष्ट्रपति डॉ राजेन्द्र प्रसाद ने किया। जब विवेकानंद इल्लम/हाउस बिना देखरेख के शिथिल होने लगा फिर बहुत प्रयत्न के बाद सरकार से लीस में रामकृष्ण मठ ने लिया। अब यहाँ योगा, भजन आदि सिखाया जाता है। प्रतिदिन सुबह 10-00बजे से 12-00 बजे तक और शामको 03-00 बजे से 07-00 बजे तक खुला रहता है। उनके भाषण का चलचित्र दिखाया जाता है। उनके विभिन्न कार्यक्रमों, क्रियाकलापों की प्रदर्शनी है। ध्यान मंडप है जहाँ पर लोग ध्यान कर सकते हैं। उनके विचार की पुस्तकें मिलती हैं।

चेन्नै में देखने लायक स्थानों में यह एक महत्वपूर्ण स्थान है। उनकी किताबों में जिसे मैं बहुत महत्वपूर्ण मानता हूँ वे हैं – कर्म योग, भक्ति योग, ज्ञान योग। उनके द्वारा नौ दिन दिये गये भाषण एवं उसका सार उठो, जागो और तब तक मत रुको जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाए।

महान भारत में कईयों ने जन्म लिया है। सब अपने-अपने गुण, पथ एवं ज्ञान में विशिष्ट हैं। श्री स्वामी विवेकानंद जी के चरणारविंद में शत-शत नमन करते हुए मैं ही नहीं प्रत्येक गर्व का अनुभव महसूस करता है। भारत के अमूल्य कोहिनूर जैसे रत्नों में एक हैं स्वामी विवेकानंद जी।

दक्षिण में हिन्दी - एक इतिहास

डॉ. पी .आर. वासुदेवन 'शेष'
सेवानिवृत हिंदी अधिकारी
महालेखाकार (ले व ह) कार्यालय, चेन्नै

सृष्टि के प्रत्येक जीव की अपनी वाणी है और अपनी भावनाएँ। जब भावनाओं का ज्वार फूटता है तो वाणी से शब्दों का प्रवाह फूट निकलता है। सृष्टि के सभी जीवों में मानव श्रेष्ठ जीव है।उसने अपनी बुद्धि का श्रेष्ठ प्रयोग करते हुए शाब्दिक भाषा का विकास किया। इस प्रकार भाषा प्रतीकात्मकता से विकसित होते हुए मौखिक , लिखित , ब्रेल व ऑन लाइन तक आ पहुँची। संस्कृत से जन्मी भारत की सभी भाषाएं बहनें हैं किन्तु जिस भाषा को राजभाषा और राष्ट्रभाषा का पद दिया गया , उसका सम्मान करना हर भारतवासी का कर्तव्य होना चाहिए क्योंकि कोई एक भाषा अपने देश के गौरव का प्रतिनिधित्व करते हुए देश की सामाजिक संस्कृति की संवाहिका बन सकती है और वह भाषा बनी हिंदी।

हिंदी मात्र दस राज्यों की भाषा नहीं अपितु हिंदी पूरे देश की भाषा है जिसे सम्पर्क भाषा कहना अनुचित नहीं। दक्षिण भारत के चारों प्रदेशों में हिंदी की स्थिति ठीक रही है। तमिलनाडु में हिंदी सदैव रही है, बस रूप बदलता रहा।

वर्ष 1918 में दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, मद्रास की स्थापना ने हिंदी प्रचार को हवा दी। दक्षिण में इस संस्था के योगदान को कभी भुलाया नहीं जा सकता। धीरे –धीरे सभा के चहुँमूखी विकास ने हिंदी के प्रचार प्रसार के साथ साथ स्नातकोत्तर व शोध के स्तर को उत्कृषटता तक पहुँचा दिया। सभा व उच्च शिक्षा और शोध संस्थान द्वारा संचालित अनेकानेक पाठ्यक्रमों में विदयार्थी पढ़ते हैं और कई विद्यार्थी नौकरी करते हुए भी अनेक पाठ्यक्रमों से बड़े उत्साह व रूचि से जुड़े हैं। उत्तर भारतीय भाषा भाषी विद्यार्थी हिंदी अंग्रेजी व तमिल तीन भाषाओं की अच्छी जानकारी रखते हैं, अत: नौकरी के अनेक रास्ते उनके लिए खुले रहते हैं।

मार्च 1918 में हिंदी साहित्य सम्मेलन प्रयाग का आठवाँ अधिवेशन इन्दौर मध्यप्रदेश में सम्पन्न हुआ। इस अधिवेशन में ही दक्षिण में हिंदी प्रचार की योजना बनी। यह आयोजन पूज्य महात्मा गाँधी की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। इस आयोजन में उत्तर के नहीं वरन् दक्षिण के नेताओं ने भाग लिया।

इस अधिवेशन में उन्होंने यह प्रस्ताव पारित कराया कि दक्षिण में हिंदी प्रचार का काम प्रारम्भ करना चाहिए। इस प्रस्ताव के कार्यान्वयन के लिए हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग के महामंत्री महर्षि पुरूषोत्तम दास टण्डन ने मद्रास में एक शाखा खोली। गाँधी जी अपने कनिष्ठ पुत्र देवदास गाँधी को हिंदी वर्ग चलाने के लिए मद्रास भेजा। सम्मेलन के प्रतिनिधि के रूप में सत्यदेव परिवजक यहाँ आए। पहला वर्ग गोखले हॉल में चलाया गया। उसकी अध्यक्षता सर सी. पी. रामास्वामी अययर ने की। इस कार्यक्रम का उद्घाटन डॉ. एनीबेसंट ने किया।गांधी जी का आह्वान पाकर पं.हरिहर शर्मा , पं.शिवराम शर्मा, कममल्लदि सीतारामांजनुयुलु हिंदी शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रयाग गए और एक वर्ष वहाँ शिक्षा प्राप्त की और मद्रास आकर हिंदी प्रचार में लग गए। हिंदी सीखने वालों की संख्या बढ़ी तो उत्तर भारत से प्रताप वाजपेयी ,रामभरोसे श्रीवास्तव, रघुवरदयाल मिश्र, देवदूत विद्यार्थी प. रामानंद शर्मा, ब्रजनदंन शर्मा दक्षिण भारत के विविध केंद्रो पर हिंदी प्रचार में लग गए।

दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा के अधीन सन् 1918 से लेकर सन् 1927 तक कुल 68 प्रचारकों ने विभिन्न केन्द्रों में कार्य किया। इसके अतिरिक्त अनेक स्वतंत्र प्रचारकों ने भी हिंदी प्रचार की श्रीवृद्धि में अपनी महत्वपूर्ण सेवाएँ समर्पित की।

सन् 1922 प्रचार सभा की ओर से दक्षिण के सुप्रसिद्ध द्रविड़ नेता श्री रामास्वामी नायिकर के घर पर तमिलनाडु का सर्वप्रथम हिंदी प्रचारक विदयालय, ईरोड में खुला। इस हिंदी प्रचार विदयालय का उद्घाटन पंडित मोतीलाल नेहरू जी ने किया।

दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा को इस बात की आवश्कता अनुभव हुई और तदनुसार उत्साही नवयुवकों को हिंदी प्रचार की शिक्षा देने के लिए एक केन्द्रीय विद्यालय मद्रास में खोला गया। नवबंर 1931 में केन्द्र हिंदी प्रचारक विदयालय का निरीक्षण देश के प्रमुख विद्वानों व नेताओं –डॉ.हर्डीकर, कमला देवी चटोपाध्याय, संपादिका सोफिया सेमजी, राहुल सांकृत्यायन, स्वामी प्रज्ञानपाद और बौद्ध भिक्षु आनंद (श्रीलंका) ने किया।

सभा के कारण हिंदी का प्रचार द्रुतगति से हुआ। आज हिंदी प्रचार एक जनप्रिय आंदोलन है और प्रचार सभा इस आंदोलन का मुख्य केन्द्र है। इस संस्था के कार्यकलापों में हिंदी प्रचारकों को तैयार करना एक प्रधान कार्य है। हिंदी प्रचारकों का कार्यक्षेत्र व्यापक और विस्तृत है। उन्हें उसे समाज सेवा, शिक्षा, साहित्य, संस्कृति के लिए पुरजोर कार्य करना पड़ता है जो हिंदी प्रचार का मूल उद्देश्य भी रहा है।

जैसे –जैसे सभा के कार्यों में विस्तार होता गया, वैसे-वैसे कार्यालय के अतिरिक्त परीक्षा विभाग, साहित्य विभाग , प्रकाशन विभाग एवं मुद्रणालय खुले। सभा की परीक्षाओं के लिए आवश्यक पाठ्य पुस्तकें मुद्रणालय में ही छपने लगीं। सभा की प्रमुख मासिक पत्रिका **'हिंदी प्रचार समाचार'** हैं। इसमें हर माह सभा में होने वाली गतिविधियाँ परीक्षापयोगी सामग्री और साहित्यिक लेख भी प्रकाशित होते हैं। सभा की त्रैमासिक पत्रिका **'दक्षिण भारत'** में साहित्य एवं संस्कृति संबंधी गंभीर एवं सारगर्भित शोध लेख प्रकाशित किये जाते हैं । ये लेख शोधार्थियों के शोध कार्यों में सहायक होते हैं। इन पत्रिकाओं से स्थानीय लेखकों को अपनी लेखन प्रतिभा को उजागर करने का अवसर मिलता है।

सभा के प्रकाशन विभाग द्वारा हिंदी के प्रचार-प्रसार में अभूतपूर्व योगदान दिया जा रहा है। हिंदी शिक्षकों ने प्रादेशिक भाषाओं के द्वारा हिंदी का काफी प्रचार किया है और उसी प्रकार से मलयालम, कन्नड़, तमिल और तेलुगु सीखने के लिए स्वयं शिक्षक तैयार करना प्रकाशन विभाग का महत्वपूर्ण एवं सराहनीय प्रयास है। इससे न केवल हिंदीतर वरन् अन्य भाषी भी लाभाविन्त हो रहे हैं। प्रकाशन विभाग ने आज तक सांस्कृतिक एवं साहित्यिक सौहार्द की दिशा में लगभग 600 से अधिक पुस्तकों का प्रकाशन किया है।

हिंदी प्रचार सभा दक्षिण में हिंदी के प्रचार प्रसार के लिए नियमित परीक्षाएँ आयोजित करती है । दक्षिण में हैदरारबाद, एरणाकुलम, कोच्चि , धाटवाड, तिरूच्चि, बंगलूरू, तथा ऊटी में भी हिंदी प्रचार की शाखाएँ हैं।

सभा की उच्च शिक्षा और शोध संस्थान में स्नातकोत्तर केन्द्र हैं जिनमें एम. ए, एम.फिल, पीएचडी, डी .लिट की डिग्रियों के लिए शोध कार्य होता है और हर वर्ष बड़ी संख्या में शोध विद्यार्थी उच्च शिक्षा और शोध संस्थान से शोध करते हैं। संस्थान में शोधार्थियों के लिए शोध संबंधी अदयतन पुस्तकें राष्ट्रीय हिंदी अनुसंधान ग्रंथालय में उपलब्ध हैं । पुस्तकों की संख्या लगभग 50 हजार तक है।

सभा अपनी चार प्रातों की शाखाओं से संपूर्ण भारत को हिंदी के माध्यम से एक सूत्र में बांधने के लिए महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। सभा की विशेष शाखाएँ श्रीलंका, नार्वे, नई दिल्ली में भी है।

कहना न होगा कि सभा हर वर्ष हजारों विदयार्थ्यों को खास कर हिंदीतर को स्कूली बच्चों एवं हिंदी प्रेमियों को अपने पाठयक्रमों के द्वारा हिंदी भाषा परीक्षाएँ आयोजित कर निपुण बनाती है इस समय चैन्नै में लगभग 5000 हिंदी प्रचारक हैं जो हिंदी प्रचारक का कार्य बखूबी कर रहे हैं।

दक्षिण भारत से प्रकाशित होने वाली साहित्यिक पत्र-पत्रिकाएँ भी हिंदी के लिए महत्ती योगदान दे रही हैं। राजस्थान पत्रिका(दैनिक समाचार पत्र) हिंदी हृदय, हिंदी विजन, साऊथ चक्र, चंदन तिलक, दक्षिण की रौनक, पल्लव टाइम्स, आदान-प्रदान, सुर सौरभ, संग्रथन(केरल मासिक) मैसूर प्रचार समाचार(मैसूर) कर्नाटक महिला प्रचार समाचार (बैंगलूरू) हिंदी प्रचार समिति (जयनगर बैंगलूरू) भाषा पीयूष , आंध्र ज्योति (हैदराबाद) , पुष्पक साहित्यिकी (हैदराबाद) ,विवरण पत्रिका (सभा हैदराबाद) ,दक्षिण समाचार (हैदराबाद) मिलाप समाचार पत्र (हैदराबाद) ,रत्नवंती (हैदराबाद) , बसव मार्ग

(बैंगलूरू) शबरी शिक्षा समाचार(सेलम) आदि पत्रिकाएँ है। जिसमें स्थानीय विद्वानों के लेख, शहर के महत्वूपर्ण समाचार , पुस्तक समीक्षा, संतों के उपदेश, गुरुवाणी, बालपयोगी कथाएँ , कहानियाँ और लघु कथाएं भी प्रकाशित की जाती हैं। साथ ही साथ केंद्रीय सरकार के कार्यालयों में होने वाली हिंदी की कार्यशालाएं, हिंदी दिवस की गतिविधियाँ एवं नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा समय-समय पर आयोजित हिंदी संबंधी प्रतियोगिताएँ आदि के विवरण भी दिए जाते हैं। महानगर में स्थित बैंक एवं उपक्रम कार्यालयों में हिंदी समाचार भी दिए जाते हैं। साथ ही कालेज, शैक्षिणक संस्थानों में भी हो रही हिंदी संगोष्ठी, सम्मेलन , हिंदी प्रतियोगिताओं से संबंधित समाचार भी निरंतर प्रकाशित होते है । केन्द्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी दिवस पर प्रकाशित उनके कार्यालय की गृह पत्रिकाओं को भी प्रकाशित कर वितरित किया जाता है। हिंदी की प्रतियोगिताओं में तमिल भाषी बड़ी तादाद में भाग लेते हैं और पुरस्कार प्राप्त करते हैं।

दक्षिण में हिंदी के प्रचार प्रसार के लिए तमिल –हिंदी साहित्यकारों एवं लेखकों के योगदान को कभी भूला नहीं जा सकता है। जिन्होंने तमिल भाषी होते हुए आजीवन हिंदी की सेवा की और कर रहे हैं। उनमें कुछ उल्लेखनीय नाम हैं – डॉ बालशौरि रेडडी, डॉ.सुब्रह्मणियन विष्णुप्रिया, डॉ. पी. के. बालसुब्रमणियन, डॉ. सुंदरम , डॉ. गोविंदराजन, डॉ. शौरिराजन, डॉ भवानी अश्विनी कुमार, डॉ .वत्सला किरण, डॉ. आर .एम .श्रीनिवासन, डॉ. एस. विजया, डॉ वाय रवि , डॉ. लोकनाथन, इत्यादि हैं। इनके अतिरिक्त लेखकों में डॉ. वासुदेवन शेष, डॉ .पदमावती, डॉ. संजय रामन, डॉ .सरस्वती, डॉ .जयशंकर बाबू इत्यादि है।

पदम भूषण डॉ. मोटूरी सत्यनारायणा जिन्हें प्रयोजनमूलक हिंदी के जनक के रूप में जाना जाता हैं एवं चक्रवर्ती राजागोपालाचारी दोनों ने भी राजभाषा हिंदी के प्रचार प्रसार में अहम् भूमिका निभाई। डॉ. नागप्पा, डॉ वी रा देवगिरी, श्री एच वी रामचन्द्र राव, डॉ. सरगू कृष्णमूर्ति, डॉ. एन एस दक्षिणामूर्ति, डॉ. आरसू, डॉ.तंकमणि अम्मा, डॉ. एस. टी. वासुदेवन नायर, विश्वनाथ अययर, चंद्रशेखर नायर, डॉ. वी. पदमावती, डॉ. पद्मजा देवी, डॉ .कमला विश्वनाथन, डॉ. जयलक्ष्मी सुब्रमणियन इत्यादि साहित्यकारों ने हिंदी में कलम चलाकर इस भाषा को जनप्रिय बनाया।

तमिल साहित्य का हिंदी में अनुवाद का कार्य इन तमिल भाषी हिंदी साहित्यकारों ने बखूबी किया है। तमिल साहित्य हिंदी भाषियों को परिचय कराया।

निष्कर्ष:

यही कहा जा सकता है कि दक्षिण के चारों प्रांतों में से खासकर चैन्नै में हिंदी लोकप्रिय हो गयी है। उत्तर भारतीय लोग जो एक समय में यहाँ आने के लिए झिझकते थे आज वह भय दूर हो गया है। उत्तर भारतीय लोगों को अब यहाँ आसानी से रोजगार प्राप्त हो रहा है। उनके बच्चे भी स्कूलों, कालेजों में हिंदी पढ़ रहे हैं। आई टी कंपनी में कार्यरत कर्मचारी दिल्ली कलकत्ता, बिहार से आकर यहाँ कार्य कर रहे हैं।

भाषा एक सामाजिक साधन है , विचारों के आदान प्रदान के लिए सशक्त माध्यम है। उसका प्रधान उद्देश्य विचारों का आपसी आदन-प्रदान है। भाषा का उद्देश्य न समझने के कारण ही आज हमारे देश में भाषायी विवाद खड़े हो रहे हैं। ये वाद भारत की एकता में समस्त देश को एक सूत्र में बॉधने के कार्य में कतिपय अडचने उपस्थित कर रहे हैं। दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा एवं अन्य सहयोगी संस्थाओं की राष्ट्रीय सेवा से ये वाद विवाद पर्याप्त मात्रा में हो रहे हैं। हिंदी के उद्भव और विकास में भारत के सभी क्षेत्रों का योगदान रहा है। दक्खिनी हिंदी इस तथ्य का जीता जागता प्रमाण है। हिंदी में जो लचीलापन है वह काफी सराहनीय है। वह, समय की मॉग के अनुरूप अपने आप को परिवर्तित करती हुई आज विश्व की भाषा बनने की दिशा में अग्रसर हो रही है। यह कहना अनुपयुक्त नहीं होगा कि हर प्रकार की अभिव्यक्ति की क्षमता हिंदी में है। **हिंदी हमारे देश की आन- बान- शान है।**

तामरशेरी चुरम और करिन्तण्डन का मार्मिक किस्सा

आर.उषानंदिनी
वरिष्ठ अनुवादक
लोको वर्क्स/पेरंबूर
दक्षिण रेलवे

हाल ही में मुझे सपरिवार केरल की सैर करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। यूँ तो उन हरी-भरी वादियों का आनंद उठाने के लिए हमारे तीन दिनों की छुट्टी पर्याप्त नहीं थी फिर भी इस छोटे से अंतराल में हम वायनाड के ज़िले के सौन्दर्य का रसास्वादन करने के लिए तत्पर थे। इस सैर-सपाटे के बारे में बताने के लिए तो बहुत कुछ है लेकिन इस दौरान हमें चौंका देनेवाली एक बात मालूम हुई जिस पर मैं प्रकाश डालना चाहूँगी। ये है करिन्तण्डन का किस्सा........ कौन था ये करिन्तण्डन.........जिसके गुणगान गाते केरल के उस प्रदेश के निवासी आज भी नहीं थकते।

सिमि बचपन में मेरी सहपाठी थी और अब वो वायनाड में ही बस गई है। स्कूल के दिनों में हम दोनों में अच्छी दोस्ती हुआ करती थी। वास्तव में वायनाड का दौरा करने की योजना के पीछे सिमि से मुलाकात करने की लालसा भी छिपी थी। हमारे स्कूल के ऐलम्नाई का एक व्हॉट्सप ग्रुप है जिसके ज़रिए मैंने सिमि से संपर्क स्थापित कर लिया और उसका पता भी नोट कर लिया। अपने वायनाड दौरे के बारे में मैंने उसे पहले ही सूचित कर दिया था। हमने कोळिक्कोड से कार में वायनाड जाने की योजना बनाई और इस प्रकार ड्राइवर पहले हमें कलपेट्टा ले गया जहाँ से हम अपना दौरा शुरू करना चाहते थे और इत्तफ़ाक की बात है कि सिमि का घर भी कलपेट्टा में ही था।

फिर देर किस बात की...... मैंने सपरिवार अपने आगमन की सूचना सिमि को दी और कुछ ही मिनटों में उसने हमें अपने घर बुला लिया। उसके घर के चारों ओर उसके पिता ने कई पेड़ लगाए थे जिसमें कटहल का एक पेड़ भी था और उसमें कई कटहल के फल लटके हुए थे। पहले तो हमें केरल का मालाबार चाय पिलाया गया। फिर नाश्ते में सिमि की माँ ने हमें पुट्टु (चावल और नारियल से बनाएक व्यंजन) और कडल करि (काले चने और नारियल से बना व्यंजन) परोसा जोकि केरल का एक पारम्परिक व्यंजन है। साथ में गरमागरम पळमपोरि (यह केलों को काटकर मैदे के आटे में भिगोकर तले जाते हैं) भी खाने को मिले।

दो दिन हमने वायनाड ज़िले के दर्शनीय स्थानों का दौरा किया। तीसरे दिन शाम की गाड़ी से हम लौटनेवाले थे। मैंने सिमि और उसके परिवार का शुक्रिया अदा किया। मैं सिमि से अपने कुछ अनुभवों को साझा कर रही थी जब मैंने करिन्तण्डन का ज़िक्र किया। इस पर उसका चेहरा बहुत गंभीर हो गया और वह पूछने लगी,"क्या तुमने करिन्तण्डन का मंदिर देखा?" मैंने कहा "हाँ, ड्राइवर ने कार में हमारी यात्रा के दौरान करिन्तण्डन के मंदिर को दिखाकर उसके बारे में बताया।" अब सिमि बहुत ही गंभीर मुद्रा में आ गई और उसने कहा, "मैं अपने एक अनुभव के बारे में तुम्हें बताऊँगी तो तुम हैरान रह जाओगी" और इस तरह वह करिन्तण्डन का किस्सा सुनाने लगी जो मैं यहाँ अपने शब्दों में व्यक्त कर रही हूँ।

पिछले साल एक दिन सिमि कार में कोळिक्कोड से वायनाड जा रही थी। कोळिक्कोड से वायनाड जाने के लिए लक्किडि प्रवेश-द्वार है। लक्किडि व्यू प्वाइंट से जब आप नीचे देखेंगे तो आपको एक रास्ता दिखेगा जिसे तामरशेरी चुरम (तामरशेरी पास) कहा जाता है। यह एक सर्पीला मनोरम पथ है जो 14 किमी तक फैला हुआ है और इसमें 9 हेयरपिन बेंड हैं। यह पर्वतीय पास कोळिक्कोड को वयनाड से जोड़ता है। इस रास्ते में एक विशेष क्षेत्र से गुज़रते समय सिमि का फोन बंद हो गया। सिमि ने देखा कि वहाँ के निवासी उसे अजीब नज़रों से देख रहे हैं। शायद वो सोच रहे हैं कि सिमि अपना रास्ता भूल गई है। वहाँ चाय की एक दुकान दिख पड़ी। राहत की साँस लेते हुए वो उस दुकान की ओर चल पड़ी। नींबू की चाय और कुरमुरे पळमपोरि से उसकी थकान दूर हुई। वहाँ उसने अपना फोन भी चार्ज करा लिया। जब दुकान में भीड़ कम हुई तो सिमि ने दुकानदार से पूछा, "चेटा, क्या दुकान बंद करने का समय हो

गया।" दुकानदार ने इस सवाल का जवाब नहीं दिया बल्कि मुस्कुराया।

इतने में नेटवर्क भी लुप्त हो गया। लेकिन दुकानदार ने सिमि को आश्वासन दिया कि जब तक उसे कोई लेने आए तब तक वह प्रतीक्षा करेगा क्योंकि वह सिमि की सुरक्षा करने के लिए तत्पर था। दुकानदार पनिया जनजाति का सदस्य था। सिमि ने देखा कि दुकान के ठीक सामने मौजूद ज़ंजीरों का पेड़ (चंगल मरम) मानो अपने गूढ़ रहस्य को समाए उसे घूर रहा हो। उसके नीचे कोई मंदिर सा दिख रहा था। जब सिमि ने इसके बारे में दुकानदार से पूछा तो वह इस पेड़ की कथा सुनाने लगा। सदियों पहले की बात है जब आदिवासी जनजाति का एक हृष्ट-पुष्ट युवा मुखिया इस क्षेत्र में रहा करता था, जिसका नाम था .... करिन्तण्डन । करिन्तण्डन ही वह महान व्यक्ति था जिसने तामरशेरी चुरम के निर्माण में अंग्रेजों की मदद की थी।

बात 18वीं सदी की है जब अंग्रेज़, वयनाड से कोळिक्कोड तक मसालों का परिवहन करने के लिए एक नए मार्ग की खोज कर रहे थे। कई इंजीनियर आए लेकिन कोई भी वयनाड जाने के लिए मार्ग ढूँढने में सफल नहीं हुआ। इस मार्ग का पता लगानेवाले के लिए वायसरॉय द्वारा नकद पुरस्कार की घोषणा भी की गई थी। ऐसी स्थिति में किसी ने करिन्तण्डन का नाम अंग्रेजों को सुझाया, जो पनिया जनजाति का एक बलिष्ठ लेकिन भोला और ईमानदार जवान था।

वह जंगल करिन्तण्डन के दिल और दिमाग में छाया हुआ था। वह उस जंगल का कोना-कोना जानता था। जब अंग्रेजों को यह पता चला तो उन्होंने वयनाड से कोळिक्कोड तक के मार्ग का पता लगाने के लिए करिन्तण्डन से मदद माँगने की एक योजना बनाई। भोला-भाला करिन्तण्डन अंग्रेज़ियों की मदद करने के लिए राज़ी हो गया। इस मार्ग को बनाने के लिए किन-किन पेड़ों और झाड़ियों को काटना है, इसका पता लगाना अत्यंत कठिन कार्य था। घने जंगल को काटकर मार्ग का पता लगाने में इस नेक आदिवासी जनजातीय मुखिया ने अंग्रेज़ों की मदद की। करिन्तण्डन की तीक्षण बुद्धि एवं शारीरिक बल को देखकर अंग्रेज़ दंग रह गए। लेकिन वहीं अंग्रेज़ों को करिन्तण्डन के प्रति ईर्ष्या भी होने लगी। अंग्रेज़ तो करिन्तण्डन की शक्ति के आगे स्वयं को बहुत बलहीन महसूस करने लगे थे। वे चाहते थे कि इस मार्ग को ढूँढने का श्रेय और नकद पुरस्कार करिन्तण्डन को न मिले। वे इतने बड़े कार्य का श्रेय एक आदिवासी को नहीं देना चाहते थे।

उस मार्ग के निर्माण का कार्य पूरा होने पर वह ब्रिटिश इंजीनियर इस काम का श्रेय और नकद पुरस्कार स्वयं ले लेना चाहता था। इसलिए उसने करिन्तण्डन को मार डालने का षडयंत्र रचाया। छल-कपट से उसने करिन्तण्डन को रात के अँधेरे में पर्वत के शिखर तक ले जाकर उसे गोली मार दी। करिन्तण्डन नाम का वह ईमानदार, शक्तिशाली विशालकाय मुखिया धराशायी हो गया। मृत्यु के समय करिन्तण्डन की उम्र 35 से 40 साल तक की होगी।

करिन्तण्डन की यह कहानी सुनाते-सुनाते दुकानदार की आँखें भर आई। दुकानदार उस चंगल मरम यानी जंज़ीरों के पेड़ के पास ही खड़ा था। इतने में नेटवर्क भी आ गया। सिमि को कुछ अन्य विवरण भी मालूम हुए। करिन्तण्डन के शव को वहाँ मौजूद मुनीश्वरन के मंदिर में दफनाया गया। उसकी मृत्यु के बाद उस चुरम (पास) में कई दुर्घटनाएँ होने लगीं, कई लोगों की मृत्यु होने लगी। स्थानीय निवासियों का मानना है कि करिन्तण्डन, मुनीश्वरन के सहयोग से कई रूपों में आकर अपनी मृत्यु का बदला ले रहा था। मानो वे लोगों से कह रहा हो कि जिस स्थान पर मुझे मारा गया है वहाँ मत जाओ।

अंततः एक दुर्मंत्रवादी ने करिन्तण्डन की आत्मा को एक पीपल के पेड़ में ज़ंज़ीरों से बाँध कर रख दिया। दुर्घटनाएँ घटने का सिलसिला समाप्त हो गया और तत्पश्चात् लोग उस चुरम से यात्रा करने लगे। उस पीपल के पेड़ के आगे करिन्तण्डन की एक विशाल मूर्ति स्थापित की गई है। ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो सड़क की बत्ती के प्रकाश में उस मूर्ति में जान आ गई हो। इसी उधेड़-बुन में सिमि थी कि इतने में एक कॉर वहाँ आई और सिमि वहाँ से निकल गई।

अगले दिन करिन्तण्डन के इस मार्मिक किस्से से प्रेरित हो सिमि दोबारा इस आशा से उस दुकान पर पहुँची, कि उस दुकानदार से और कुछ खबर मिल जाए। लेकिन ये क्या, वहाँ दुकान तो थी, लेकिन उस दुकानदार का नामोनिशान नहीं था। सिमि अचरज में पड़ गई और चिंता के मारे वह उसे ढूँढ़ने लगी। इतने में दुकान के भीतर से करीब 50 साल की उम्र का एक व्यक्ति निकला और चाय बनाने लगा। इसका नाम पैली था। सिमि ने कल के उस दुकानदार के बारे में पैली से पूछा।
तो उसने जवाब दिया, "इस दुकान का दुकानदार तो मैं ही हूँ।"
"तो फिर कल जो दुकानदार यहाँ मुझे मिले वो कौन थे"
"यक़ीन मानो कि यहाँ सिर्फ एक ही दुकानदार है और वो मैं ही हूँ।"

सिमि बेचैन होकर अपने सवालों का जवाब ढूँढ़ रही थी....... निश्चय ही कल की बातें महज उसका वहम नहीं हो सकता है। उसने तो सिमि का फोन भी चार्ज करवाया था। सिमि उतावली हो गई थी। दुकान में भीड़ के कम होने पर पैली ने देखा कि सिमि किसी बात को लेकर बेचैन है। वो उस चंगल मरम को एकटक देख रही थी। पैली चेटा ने कहा कि इस पेड़ के साथ वह ज़ंज़ीर भी उग रहा था। लेकिन अब कुछ दिनों से वह ज़ंज़ीर और पेड़ का उगना बंद हो गया है।

जिस स्थान पर करिन्तण्डन को दफनाया गया है वहाँ अब मुनीश्वरन की मूर्ति खड़ी है और उसके पास कुट्टिचात्तान की मूर्ति भी है। कहा जाता है कि करिन्तण्डन की आत्मा के प्रभाव से होनेवाली दुर्घटनाओं को समाप्त करने के लिए दुर्मंत्रवादी ने उस आत्मा को वश में करने के लिए कुट्टिचात्तान की इस मूर्ति को वहाँ स्थापित किया था। इस प्रक्रिया में उस दुर्मंत्रवादी ने करिन्तण्डन की आत्मा को पेड़ों की जड़ों से उस पेड़ में बाँधा था, परंतु कालांतर में वह ज़ंज़ीर बन गया था।

पैली चेटा ने एक दूसरी घटना भी बताई। उन दिनों जब पैली चेटा स्कूल में पढ़ते थे, यहाँ बिजली की सुविधा नहीं थी। बाद में जब बिजली की सुविधा दिलाने के लिए केरल के बिजली बोर्ड के स्टाफ बिजली का कनेक्शन दे रहे थे तो उन्होंने उस पीपल के पेड़ के ऊपरी हिस्से को काटकर वहाँ से तार ले जाते हुए वह काम किया था। लेकिन हाय ये क्या.....उस पेड़ के उस हिस्से से करंट पास नहीं हो रहा था। केरल के बिजली बोर्ड के स्टाफ ने बहुत कोशिश की लेकिन काम नहीं हो सका। इस पर एक पुजारी के सलाह से खीर नैवेद्य चढ़ाकर मुनीश्वरन की पूजा की गई...... तब जाकर उस लाइन से करंट पास होने लगी।

सिमि ने सारा किस्सा कह सुनाया। मैं हैरान होकर उसकी ओर देखती रही।

मैंने उससे पूछा,"ये सब तो ठीक है, लेकिन वह दुकानदार कौन था जिसने पहले दिन तुम्हें नींबू की चाय और पळमपोरि देकर तुम्हारा फोन चार्ज करवाया था.......तुम्हारी रक्षा की थी?"

इस पर सिमि ने दोनों हाथों से इशारा करते हुए आतंकित होकर कहा कि उसे नहीं मालूम।

मैं असमंजस में पड़ गई।

"जो कहते हैं कि यहाँ पर भूत है
क्या उनके पास कोई ठोस सबूत है।"

यह सवाल हर कोई पूछता है। उनके लिए मानो सिमि द्वारा कहा गया यह किस्सा मुँहतोड़ जवाब दे रहा हो।

"भूत ने अब लोगों को डराना छोड़ दिया है,
क्योंकि उसे पता है कि इंसान की शक्ल में यहाँ हैवान बहुत हैं।"

सिमि से मैंने जो अंतिम प्रश्न किया था, उसका जवाब मैं पाठकों पर छोड़ देती हूँ।

सिलप्पदिकारम में इंद्र की पूजा

लता वेंकटेश
सहायक निदेशक(रा.भा.)
आकाशवाणी,चेन्नै

विभिन्न भाषा-भाषी समूहों की मौजूदगी भारत की विशेष पहचान है। इसके चलते विचारों के आदान-प्रदान में भी हमारे बीच कई अड़चनें आती हैं। कहीं विदेश में दो भारतीयों की भेंट होती है तो भारतीय होने के बावजूद उनके बीच भाषायी दीवार खड़ी हो जाती है। लेकिन इन भाषायी अड़चनों के बावज़ूद भारत को एक राष्ट्र का रूप देती है उसकी संस्कृति। भारतीय संस्कृति उसके निवासियों को भाषायी और भौगोलिक भिन्नताओं के बावज़ूद सूक्ष्म रूप से बाँधकर रखती है।

दैनंदिन के क्रिया कर्म हो, पारिवारिक कर्म हो या पर्वों के आयोजन की विधि ही क्यों न हो, इनमें सूक्ष्म रूप से अनेक समानताएँ पायी जाती हैं। इसलिए भाषायी दीवारों को लांघकर अपनी अंतरात्मा को पहचानने में किसी भी भारतीय को कठिनाई नहीं होती है।

इस क्रम में नियमित वर्षा-प्राप्ति के लिए इंद्र को पूजने की परंपरा के प्रमाण भारत के विभिन्न साहित्यों में उपलब्ध है। तमिल साहित्य में 'सिलप्पदिकारम' एक प्रसिद्ध काव्य है। यह तमिल साहित्य के पाँच महाकाव्यों में एक है। सिलप्पदिकारम के कवि हैं इलंगो अडिगल। वे 'चेर राज्य' (वर्तमान केरल प्रदेश) के राजकुमार थे। इस काव्य की रचना सन् 200-300 ई. के दौरान हुई होगी।

तमिल प्रांत के चोळ राज्य में स्थित पुगार नगर में बसे हुए नायक कोवलन,सति कण्णकी,नृत्यांगना माधवी आदि पात्रों के जीवन को पिरोते हुए यह काव्य यह संदेश प्रस्तुत करता है कि पूर्व जन्म के पाप कर्मों से व्यक्ति बच नहीं सकता और अपने कर्मों को झेलकर ही उससे मुक्ति की प्राप्ति होगी।इस संदेश के साथ-साथ इस काव्य में, तत्कालीन समाज की रीति-रिवाज़ों,सामाजिक व्यवस्थाओं, उनकी सांस्कृतिक व आर्थिक पृष्टभूमियों की विस्तृत जानकारी भी प्रस्तुत की गयी है। 'सिलप्पदिकारम' में यह उल्लेख पाया जाता है कि इंद्र पूजा एक अलग पर्व के रूप में उस समय मनाया गया। उसमें यह भी बताया गया है कि धरती पर नियमित रूप से वर्षा होने के लिए तथा 'चोळ' वंश के प्रति देवेंद्र की कृपा जो बनी रही, उसके लिए कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए, इंद्र की पूजा की गयी थी।

'सिलप्पदिकारम' के पाँचवें खंड में 'नगर में इंद्र पर्व मनाने की गाथा' शीर्षक के अधीन 60-220 पंक्तियों में, इंद्र पर्व के सुंदर वर्णन पाये जाते हैं। इसके अनुसार चोळ राज्य में ,चैत्र महीने में चैत्र नक्षत्र और पूर्णिमा एक साथ पड़नेवाले दिन में इंद्र पूजा मनायी गयी। सिलप्पदिकारम के अनुसार देवेंद्र की पूजा करने के पीछे एक रोचक कहानी भी है। कहानी कुछ इस प्रकार है कि देवासुर संग्राम में एक बार चोळ राजाओं के पूर्वज माने जाने वाले महाराजा मुचकुंद ने इंद्र लोक की रक्षा की थी। इसके कारण क्रोधित असुरों ने राजा मुचकुंद से बदला लेने की इच्छा से अपनी माया के बल पर चोळ राज्य पर हमला किया। उस समय अपने मित्र की मदद के लिए देवेंद्र ने अपने एक रक्षा भूत को चोळ राज्य की रक्षा करने के लिए भेजा। अपने देव की आज्ञा का पालन करते हुए उस रक्षा भूत ने चोळ राज्य की रक्षा की और वहीं वह रक्षा भूत वास करने लगा। अतः देवेंद्र के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए तब से उस समाज ने रक्षा भूत के मंदिर में इंद्र पर्व के समय पूजा आराधना करना प्रारंभ किया।

सिलप्पदिकारम में आगे कवि कहते हैं कि चोळ राज्य में मनाये जानेवाले इंद्र पर्व को देखने तथा उसका आनंद उठाने के लिए देवलोक से एक विद्याधर वीर अपनी पत्नी के साथ पुगार नगर पहुँचता है।

वह वीर युवक, इंद्र पर्व आयोजन के आरंभ और इंद्र पूजा के अंतिम दिन आदि के बारे में जो सूचना पुगार नगर भर नगाड़ा बजाकर घोषित की जाती थी, उसे अपनी पत्नी को

दिखाकर राजा मुचकुंद की कहानी से भी उसे अवगत कराता है। देवेंद्र के वज्र मंदिर से शुरु करते हुए पर्व आयोजन की सूचना नगर भर में दी जाती है। धरती पर नियमित रूप से वर्षा होने के लिए वरदान देनेवाले देवेंद्र के मंदिर में पर्व आयोजन के शुभारंभ को इंगित करते हुए मंगल ध्वज का आरोहण किया जाता है।

रक्षा भूत के मंदिर के प्रांगण में स्थित बलि-पीठ पर महिलाएँ पुष्प, तूर दाल से बने खाद्य पदार्थों, तिल के लड्डु, पोंगल, मांस मिश्रित अन्न आदि चढ़ाती हैं। उसके उपरांत अगरबत्ती जलाकर विस्तृत रूप से पूजा करती हैं। अपनी खुशी व्यक्त करने के लिए महिलाएँ सामूहिक रूप से 'कुरवै कूत्तु'(एक प्रकार का नाच) भी प्रस्तुत करती हैं। समारोह में नाचनेवाली महिलाओं पर देवी देवताओं का सवार होना भी आम बात होती थी। पूजा विधियों को विधिवत संपूर्ण करने के बाद वे प्रार्थना करती हैं कि उनके राजा द्वारा रक्षित भूमि भाग में भूख,रोग,शत्रु भय आदि न रहे और उनके क्षेत्र में समृद्धि पलते रहे।

पूजा में भाग लेनेवाले वीर पुरुष बलि-पीठ तक पहुँचकर प्रार्थना करते थे कि राजा के मार्ग पर आनेवाली अड़चनें चूर-चूर हो जाएं और वे सदा विजयी रहे। प्रार्थना के बाद अनेक समरों में अपना बाहुबल प्रदर्शित करनेवाले वीर पुरुष, अपनी भुजाओं पर ताल ठोंककर हाहाकार करते थे और अपने सिर को स्वयं काटकर खुद की बलि चढ़ाते थे।

इंद्र पूजा के दिन नवरत्नों से युक्त पालकी पर देवेंद्र की मूर्ति को विराजित कर भव्य शोभा-यात्रा निकाली जाती थी। नगर की वीथियों पर हर कहीं तोरण लगे हए थे। पालकी के आगे पूर्ण कुंभ, नवधान्य जयंती,दीप, चंवर आदि लेते हुए लोग चलते थे। सजधजकर पालकी पर विराजमान देवेंद्र का मंगल स्वागत करने के लिए पुरुष और महिलाएँ अपने घर के बाहर उनकी प्रतीक्षा में होते थे। नगर यात्रा के उपरांत कावेरी नदी की संगम घाट पर स्वर्ण कलशों पर पवित्र जल भरकर देवेंद्र की मूर्ति का अभिषेक किया जाता था।

नगर भर में स्थित महादेव, कार्तिक, बलदेव, विष्णु के मंदिरों में तथा चार प्रकार के देव, अठारह प्रकार के देवगण अपने अपने विशेष गुणों के कारण अलग-अलग रूप प्राप्त अन्य देवताओं के मंदिरों में विशेष पूजाएँ संपन्न होती थीं।

इंद्र पूजा के उपलक्ष्य में कारागृह में कैद पड़े शत्रुओं को भी मुक्त करने की परंपरा रही। नगर के कोने- कोने में भी पर्व-आयोजन के दौरान उल्लास और आनंद उमड़ता था। कहीं संगीत सभाएँ होती थीं तो कहीं-कहीं नृत्य आयोजन होते थे। कवि इलंगो अडिगल कहते हैं कि इसी सिलसिले में आयोजित नृत्य कार्यक्रम में नृत्यांगना माधवी ने विविध प्रकार के नृत्यों को प्रस्तुत कर अपनी क्षमता, सुंदरता और लावण्य से दर्शकों को चकित करती थी । माधवी के नृत्य से अभिभूत होकर विद्याधर वीर युवक अपनी पत्नी से कहता है कि यह माधवी सचमुच देवकन्या ऊर्वशी है।

सिलप्पदिकारम में इंद्र पूजा का वर्णन, काव्य का एक छोटा अंग मात्र है। लेकिन आश्चर्य इस बात का है कि करीब 1800 वर्षों के पूर्व जिस प्रकार की परंपराएँ थीं वे इतने वर्षो के बाद आज भी व्यवहार में लगभग वही है।

चोळ राजाओं के द्वारा राजा मुचकुंद को अपना पूर्वज मानना,इंद्र पूजा, पर्व के दौरान पूर्ण कुंभ उठाना, तोरण लगाना, पूजा में बलि या प्रसाद चढ़ाना, नदी-घाट पर खुशी मनाना, पर्वो के दौरान संगीत व नृत्य प्रस्तुति आदि से यह साबित होता है कि ये सब भारतीय संस्कृति के अभिन्न अंग हैं और सिलप्पदिकारम में प्राप्त वर्णन इसका एक झलक मात्र है।

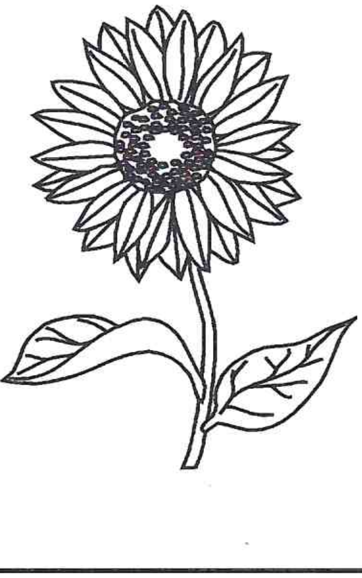

माँ का आँचल

ज्योति नड़ोनी
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी
क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय, चेन्नई

सुबह की पहली किरण के साथ ही साक्षी ने आँखें खोलीं। आज उसका मन बहुत विचलित था। उसकी माँ, जो पिछले तीन महीनों से बीमार थीं, अस्पताल में भर्ती थीं। साक्षी के पास माँ का इलाज करवाने के लिए पैसे नहीं थे। गाँव में खेती से जो थोड़ी-बहुत आय होती थी, वह भी पिछले साल के सूखे में खत्म हो गई थी।

साक्षी की माँ, सीमा, गाँव भर में अपने प्यार और दयालुता के लिए जानी जाती थीं। जब भी गाँव में कोई संकट आता, सीमा हमेशा सबसे आगे खड़ी रहतीं। उनकी गोद में हर बच्चा खुद को सुरक्षित महसूस करता। लेकिन आज वही सीमा, जो सबकी मददगार थीं, खुद बिस्तर पर पड़ी थीं।

साक्षी की आँखों में माँ के साथ बिताए बचपन के दिन घूमने लगे। जब भी वह स्कूल से थक कर आती, माँ हमेशा गर्म रोटी और दाल तैयार रखतीं। कितनी बार ऐसा हुआ कि खुद भूखी रहकर भी उन्होंने साक्षी को खिलाया। उसे याद आया कि एक बार जब वह स्कूल की फीस नहीं दे पायी, तो माँ ने अपनी चूड़ियाँ बेच दी थीं।

उसके पिता का देहांत जब वह केवल दस साल की थी, तब हुआ था। माँ ने सिलाई और मजदूरी कर साक्षी को पढ़ाया। उन्होंने कभी अपने दुःख को साक्षी के सामने जाहिर नहीं किया। हमेशा यही कहतीं, "बेटा, तुझे बड़ा अधिकारी बनते देखना ही मेरी सबसे बड़ी खुशी है।"

लेकिन आज साक्षी असहाय महसूस कर रही थी। उसकी आँखों में आँसू थे, और वह माँ के लिए कुछ भी न कर पाने की पीड़ा में डूबी थी। वह गाँव के साहूकार के पास गई, लेकिन साहूकार ने पैसे देने से मना कर दिया। साक्षी का दिल टूट गया।

अस्पताल से फोन आया कि माँ की हालत और बिगड़ रही है। साक्षी ने अस्पताल पहुँचकर डॉक्टर से बात की। डॉक्टर ने कहा, "अगर तुरंत ऑपरेशन नहीं किया गया, तो हम उन्हें बचा नहीं पाएँगे।" साक्षी ने डॉक्टर से थोड़ा वक्त माँगा और एक बार फिर मदद की तलाश में गाँव के लोगों से गुहार लगाने निकल पडी।

गाँव के लोग जानते थे कि सीमा ने हमेशा उनकी मदद की है। सबने मिलकर पैसे जुटाए। किसी ने अपनी बचत दी, किसी ने गहने गिरवी रखे। साक्षी ने यह देखकर राहत की साँस ली कि माँ की अच्छाई का कर्ज लोग चुका रहे हैं।

ऑपरेशन सफल रहा। कुछ हफ्तों के बाद सीमा ठीक हो गई। जब वह घर लौटीं, तो साक्षी ने उनके चरणों में बैठकर कहा, "माँ, मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि मैं तुम्हारे बिना इतना असहाय महसूस करूँगी।"

माँ ने साक्षी के सिर पर हाथ फेरते हुए कहा, "बेटा, माँ-बेटी का रिश्ता ऐसा ही होता है। मैंने तुम्हारे लिए सब कुछ किया, लेकिन यह तो मेरा कर्तव्य था। और जब तुमने मेरे लिए कुछ किया, तो यह तुम्हारा प्यार है।"

उस दिन साक्षी को समझ आया कि माँ का आँचल केवल सुरक्षा का नहीं, बल्कि निस्वार्थ प्रेम और बलिदान का प्रतीक है। उसने ठान लिया कि अब वह अपनी माँ के सपनों को पूरा करेगी और ऐसी बेटी बनेगी, जिस पर उसकी माँ को गर्व हो।

इस कहानी ने गाँव के लोगों के दिलों को भी छू लिया। सीमा और साक्षी का रिश्ता हर किसी के लिए मिसाल बन गया। माँ का प्यार और बेटी का समर्पण हमेशा अमर रहे।

प्रकृति की परी "ऋतु"

विकाश कुमार शर्मा
कार्यालय अधीक्षक
सामग्री प्रबंधन विभाग
दक्षिण रेलवे मुख्यालय

पहले भी आयी थीं, ऋतुएँ नयी-नयी,
फिर से वो लौट आई, प्रकृति की परी।

वसंत ऋतु आई, खिले रंग-बिरंगे फूल,
हर दिल में बसी है प्रेम की धूल।
पत्तों की हंसी, होती हवा सुगँधित और मिठास,
नई उम्मीदें लातीं, हर दिल का मिटाती उदास।
पहले भी आयी थीं, ऋतुएँ नयी-नयी,
फिर से वो लौट आई, प्रकृति की परी।

ग्रीष्म ऋतुकी धूप, तपिश की होती बात,
सूरज की तेज किरणें करतीं सबको आघात।
पानी की चाहत होती, छाँव में पाने की ठंडक,
मिलते ही लस्सी आइसक्रीम शिकँजी तुरँत जाते गटक।
पहले भी आयी थीं, ऋतुएँ नयी-नयी,
फिर से वो लौट आई, प्रकृति की परी।

वर्षा ऋतुआई, बादल भी गाते गीत,
झमाझम बूँदों से, धरती की होती प्रीत।
नदियों का बहाव, मन में होती उमंग,
संग-संग गाए, हर दिल की तरंग।
पहले भी आयी थीं, ऋतुएँ नयी-नयी,
फिर से वो लौट आई, प्रकृति की परी।

शरद ऋतुका मौसम, होती ठँड भरी,
अलाव होता सभी के बीच की कड़ी ।
पहले भी आयी थीं, ऋतुएँ नयी-नयी,
फिर से वो लौट आई, प्रकृति की परी।

हेमंत ऋतुमें सुहावनी सर्द हवा का प्यार,
धूप में बैठे लोगों की चलती गप्पों की बयार।
लोगों के उभरते सपने, कामों के होने लगते जुगाड़,
चाय की प्याली, और खट्टी-मीठी बातों का अम्बार।
पहले भी आयी थीं, ऋतुएँ नयी-नयी,
फिर से वो लौट आई, प्रकृति की परी।

शिशिर ऋतुका आलम, एक छिपा सा संदेश,
जीवन में बदलाव, यही तो है विशेष।
हर दिल में होता, प्यार का अहसास,
ऋतुओं का ये सफर, जीवन का आनंद खास।
पहले भी आयी थीं, ऋतुएँ नयी-नयी,
फिर से वो लौट आई, प्रकृति की परी।

हर ऋतु, हर पल होता है खास
प्रकृति की गोद में अपनापन का एहसास।
आओ मिलकर हम प्यार से समय बिताएँ,
हर ऋतु में जीवन के रंग भर जाएं।
पहले भी आयी थीं, ऋतुएँ नयी-नयी,
फिर से वो लौट आई, प्रकृति की परी।

हिंदी राजभाषा के कार्यान्वयन की चुनौतियाँ: अंग्रेजी और हिंदी के बीच संघर्ष

आशीष गुप्ता
अधीक्षक
सामान्य आयुक्तालय
चेन्नै सीमा शुल्क

भारत में हिंदी को राजभाषा के रूप में लागू करने में कई महत्वपूर्ण चुनौतियाँ हैं, जिनमें से एक प्रमुख चुनौती अंग्रेजी का सांस्कृतिक और प्रणालीगत प्रभुत्व है। एक भारतीय बच्चे की भाषा के संदर्भ में यात्रा अक्सर जटिल होती है, जिसे समाज की अपेक्षाएँ, शैक्षिक नीतियाँ और करियर की महत्वाकांक्षाएँ आकार देती हैं। प्रारंभ से ही बच्चों को अंग्रेजी बोलने और सीखने के लिए प्रेरित किया जाता है, जिसके परिणामस्वरूप हिंदी से एक दूरी बन जाती है। इस प्रकार, हिंदी को राजभाषा के रूप में बढ़ावा देने के बावजूद, अंग्रेजी का प्रबल प्रभाव इसे दैनिक जीवन में अपनाने में मुश्किल बना देता है।

बचपन में: अंग्रेजी को बढ़ावा

जब एक बच्चा औपचारिक शिक्षा की दुनिया में कदम रखता है, तो अंग्रेजी का प्रारंभिक प्रभाव झलकने लगता है। खासकर निजी स्कूलों में, शिक्षण का माध्यम अक्सर अंग्रेजी होता है, यहां तक कि वे विषय भी जो इसके लिए आवश्यक नहीं होते। नर्सरी राइम्स, वर्णमाला और बुनियादी पढ़ाई-लिखाई अंग्रेजी में सिखाई जाती है। घरों में भी अंग्रेजी बोलने की प्रवृत्ति बढ़ रही है, क्योंकि माता-पिता मानते हैं कि यह उनके बच्चों के बेहतर भविष्य के लिए जरूरी है।

यहां तक कि उन परिवारों में जहां हिंदी या क्षेत्रीय भाषाएँ बोली जाती हैं, बच्चों को अक्सर अंग्रेजी बोलने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, ताकि वे 'वैश्विक' दृष्टिकोण से आगे बढ़ सकें। यह प्रारंभिक अंग्रेजी शिक्षा बच्चों को इस भाषा में माहिर बना देती है, और हिंदी को द्वितीयक भाषा के रूप में देखा जाता है, जिसे वे केवल घर पर या औपचारिक अवसरों पर इस्तेमाल करते हैं।

विद्यालय प्रणाली: अंग्रेजी का पक्ष

विद्यालयों में बच्चों के बड़े होने के साथ अंग्रेजी का प्रभाव और भी गहरा हो जाता है। भारत के अधिकांश विद्यालयों में अंग्रेजी न केवल एक विषय होती है, बल्कि यह प्रगति और सफलता का प्रतीक बन जाती है। छात्रों का मूल्यांकन मुख्य रूप से अंग्रेजी में किया जाता है, और इस भाषा में प्रवीणता अकादमिक और करियर परिणामों का निर्धारण करती है। विज्ञान, गणित और सामाजिक अध्ययन जैसे विषयों को अंग्रेजी में पढ़ाया जाता है, और पाठ्यपुस्तकें भी इस भाषा में होती हैं।

अंग्रेजी में दक्षता रखने वाले छात्रों को अधिक 'शिक्षित', 'सुसंस्कृत' और 'योग्य' माना जाता है, जबकि जो इसमें कमजोर होते हैं, उन्हें हल्के तौर पर देखा जाता है। हिंदी को केवल एक 'वैकल्पिक' भाषा के रूप में पढ़ाया जाता है, जिसमें व्याकरण और साहित्य पर जोर अधिक होता है, न कि इसका वास्तविक जीवन में प्रयोग। इससे एक अंतर पैदा होता है, क्योंकि छात्र हिंदी में सहजता से संवाद करने में सक्षम नहीं होते, और केवल कक्षा में ही यह भाषा सीमित रहती है।

करियर के लिए अंग्रेजी की आवश्यकता

जब छात्र स्कूल से उच्च शिक्षा की ओर बढ़ते हैं और फिर पेशेवर जीवन में कदम रखते हैं, तो अंग्रेजी में दक्षता की आवश्यकता और भी बढ़ जाती है। अंग्रेजी अब व्यापार, प्रौद्योगिकी और अकादमिक दुनिया की वैश्विक भाषा बन चुकी है। कई पेशेवर क्षेत्रों में, खासकर बहुराष्ट्रीय कंपनियों, तकनीकी स्टार्टअप्स और मीडिया में, अंग्रेजी में संवाद स्थापित करना आवश्यक होता है।

इससे यह स्थिति उत्पन्न होती है कि छात्रों को करियर में सफलता के लिए अंग्रेजी सीखना पड़ता है, और यह उनकी मातृभाषाओं की कीमत पर होता है। अंग्रेजी को सशक्त होने का एक साधन माना जाता है, जबकि हिंदी, राजभाषा होने के बावजूद, पेशेवर दुनिया में उतनी प्रासंगिक नहीं मानी जाती। युवा भारतीयों के लिए अंग्रेजी में प्रवीणता, उच्च वेतन, बेहतर करियर और वैश्विक अवसरों का मार्ग बन जाती है।

अचानक हिंदी का प्रयोग अपेक्षित होना

वर्षों तक अंग्रेजी को प्राथमिक भाषा के रूप में बढ़ावा देने के बाद, भारतीय राज्य अचानक नागरिकों से यह उम्मीद करता है कि वे हिंदी का प्रयोग करें। सरकारी दफ्तरों, सार्वजनिक संस्थाओं और आधिकारिक दस्तावेजों में अक्सर हिंदी का

26.05.2024 को क रा बि नि चिकित्सा महाविद्यालय एवं अस्पताल में आयोजित तकनीकी संगोष्ठी

29.06.2024 को राष्ट्रीय समुद्र प्रौद्योगिकी संस्थान में आयोजित अंत्याक्षरी प्रतियोगिता

भारत
इलेक्ट्रॉ
सूचना
आईटी
के प्रश
एसटीप
द्वारा प्र
मध्यम
एसटीप
नक्शे म
स्थानों
देश में
और वै

सी एस एम सी ए आर आई कार्यालय में आयोजितपुस्तक समीक्षा प्रतियोगिता - 08.08.20

जन गणना कार्य निदेशालय में आयोजित वाद-विवाद प्रतियोगिता - 09.08.2024

अधिक

एस टी पी आई कार्यालय में आयोजित वाक् प्रतियोगिता -12.08.2024

रक्षा लेखा नियंत्रक कार्यालय में आयोजित आशुभाषण प्रतियोगिता - 20.08.2024

दक्षिण रेलवे में आयोजित निबंध प्रतियोगिता - 21.08.2024

दक्षिण रेलवे में आयोजित टिप्पण व प्रारूप लेखन प्रतियोगिता - 21.08.2024

दक्षिण रेलवे में आयोजित शब्द शक्ति प्रतियोगिता - 29.08.2024

25.10.2024 को दक्षिण रेलवे कार्यालय में आयोजित क्विज प्रतियोगिता

25.11.2024 से 29.11.2024 तक आवडि में आयोजित कंप्यूटर अनुप्रयोग प्रशिक्षण

उपयोग आवश्यक होता है, और विभिन्न क्षेत्रों में हिंदी के व्यापक कार्यान्वयन के लिए प्रयास किए जाते हैं। लेकिन यह अपेक्षा उस वास्तविकता से मेल नहीं खाती, जिसमें युवा पीढ़ी पली-बढ़ी है।

युवाओं को यह अनुभव होता है कि अंग्रेजी में दक्षता हासिल करने के बाद, पेशेवर और सामाजिक संदर्भों में हिंदी का उपयोग करना एक कदम पीछे की ओर लगता है, न कि प्रगति का प्रतीक। इसके अलावा, हिंदी का उपयोग केवल सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और सरकारी संदर्भों में ही किया जाता है, जिससे यह भाषा पेशेवर दुनिया में प्रासंगिक नहीं महसूस होती।

सामाजिक और सांस्कृतिक कारण

अंग्रेजी के प्रति समाज में जो सांस्कृतिक प्रतिष्ठा है, वह भी इस भाषाई बदलाव में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। अंग्रेजी को आधुनिकता, और वैश्विक संपर्क का प्रतीक माना जाता है। यह वैश्विकता और अंतरराष्ट्रीय अभिजात वर्ग से जुड़ी हुई है, जबकि हिंदी को कभी-कभी कम 'वैश्विक' या 'आधुनिक' माना जाता है। मीडिया, मनोरंजन उद्योग और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स भी अंग्रेजी के उपयोग को बढ़ावा देते हैं, जिससे यह भाषा सार्वजनिक और निजी जीवन में हावी हो जाती है।

निष्कर्ष: इस खाई को पाटना

हिंदी को राजभाषा के रूप में लागू करने की चुनौती एक आसान कार्य नहीं है। इसके लिए केवल नीतियों में बदलाव की आवश्यकता नहीं है, बल्कि सांस्कृतिक बदलाव की भी आवश्यकता है। हिंदी को बढ़ावा देने के प्रयासों को इस बात के साथ जोड़ना होगा कि भाषाओं को कैसे सिखाया, इस्तेमाल किया और मूल्यांकित किया जाता है। शैक्षिक संस्थानों को अंग्रेजी और हिंदी दोनों पर समान ध्यान केंद्रित करना होगा, ताकि छात्र दोनों भाषाओं में निपुण हों, साथ ही यह सुनिश्चित करना होगा कि हिंदी का उपयोग पेशेवर संदर्भों में भी आत्मविश्वास और गर्व के साथ किया जाए।

- **हिंदी में तकनीकी और वैज्ञानिक शिक्षा**: छात्रों को विज्ञान, गणित, और प्रौद्योगिकी जैसे महत्वपूर्ण विषयों को हिंदी में भी पढ़ाने की व्यवस्था करनी चाहिए। इससे यह साबित होगा कि हिंदी केवल साहित्य की भाषा नहीं, बल्कि यह आधुनिक और तकनीकी ज्ञान के क्षेत्र में भी सक्षम है।
- **हिंदी को एक कौशल के रूप में पेश करें**: हिंदी को सिर्फ एक भाषा के रूप में न देखे, बल्कि इसे एक महत्वपूर्ण कौशल के रूप में प्रस्तुत किया जाए, जो विभिन्न करियर क्षेत्रों में उपयोगी हो सकता है। तभी हिंदी, अंग्रेजी के साथ-साथ फल-फूल सकती है और दोनों भाषाओं के बीच की खाई को पाटने में मदद करेगी।

हिंदी को केवल भारत में ही नहीं, बल्कि विश्व स्तर पर एक सशक्त और प्रासंगिक भाषा के रूप में स्थापित करने के लिए एक ठोस और दीर्घकालिक दृष्टिकोण की आवश्यकता है। यह तभी संभव हो सकेगा जब हिंदी को एक वैश्विक पहचान दी जाए, जिससे न केवल भारतीय समाज, बल्कि अन्य देशों में भी हिंदी का महत्व बढ़े। इसके लिए निम्नलिखित उपाय किए जा सकते हैं:

- **संयुक्त राष्ट्र और अंतरराष्ट्रीय संगठनों में हिंदी का उपयोग**: हिंदी को संयुक्त राष्ट्र जैसे अंतरराष्ट्रीय मंचों पर एक आधिकारिक भाषा बनाने की दिशा में प्रयास किए जाएं। कई देशों में हिंदी बोलने वाले लोग रहते हैं, और यदि इसे संयुक्त राष्ट्र की आधिकारिक भाषाओं में शामिल किया जाता है, तो यह विश्व स्तर पर हिंदी के प्रभाव को बढ़ाएगा।
- **वैश्विक सम्मेलन और आयोजनों में हिंदी का प्रोत्साहन**: अंतर्राष्ट्रीय संगठनों, शैक्षिक संस्थानों और सांस्कृतिक कार्यक्रमों में हिंदी का अधिक उपयोग सुनिश्चित किया जाए। उदाहरण के तौर पर, विश्व हिंदी सम्मेलन और अन्य अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों में हिंदी को एक प्रमुख भाषा के रूप में स्थान दिया जाए।

हिंदी को एक वैश्विक भाषा बनाने के लिए यह जरूरी है कि हम इसे केवल एक राष्ट्रीय भाषा के रूप में न देखें , बल्कि इसे एक अंतर्राष्ट्रीय, व्यापारिक और सांस्कृतिक भाषा के रूप में पहचान दें। इसके लिए हमें शिक्षा, मीडिया, साहित्य, कला, व्यापार और अन्य क्षेत्रों में हिंदी के प्रचार-प्रसार पर विशेष ध्यान देना होगा। जब हिंदी का प्रयोग सिर्फ एक संवाद की भाषा नहीं, बल्कि एक सशक्त वैश्विक माध्यम बन जाएगा, तब यह न केवल भारत में, बल्कि पूरी दुनिया में प्रभावी रूप से स्थापित हो सकेगी।

हिंदी भाषा के प्रचार प्रसार में मीडिया की भूमिका

रणजीत हरणकर
व.अनुवाद अधिकारी
राज्य कार्यालय
खादी और ग्रामोद्योग आयोग, चेन्नै

किसी ने सच ही कहा हैं कि "मीडिया ऐसी टकसाल है जहां भाषा गढ़ती या सृजित होती है|" निःसंदेह आज हिंदी रूपी नन्हा पौधा न केवल भारत देश के कोने-कोने में बल्कि संपूर्ण धरा पर वट वृक्ष की भाँति अपनी जड़ें फैलाकर गहरी पैठ बनाने में सफल रहा है|

जी हां, विगत कुछ दशकों से हिंदी भाषा के व्यापक प्रचार-प्रसार के माध्यम से भौगोलिक भाषाई तथा सांस्कृतिक सीमाएं तोड़ दी हैं | इसका एक कारण सोशल मीडिया पर हिंदी भाषागत विस्तारीकरण है |आज हम देख रहें हैं कि रजत पटल पर छाई हिंदी फिल्में विदेशों में भी बहुत पसन्द की जा रही हैं | सुमधुर-भावमयी हिंदी गीतों के लाइव कॉन्सर्ट विदेशों में आयोजित किए जाते हैं | दशकों से टी वी पर हिंदी भाषा में प्रसारित होने वाले सामाजिक पौराणिक ऐतिहासिक पारिवारिक और धार्मिक हिंदी धारावाहिकों ने भारत देश में ही नहीं बल्कि विदेशों में भी धूम मचाने के साथ ही राष्ट्रीय एकता के सशक्त सूत्र बनकर हिंदी भाषा को जनमानस की भाषा बनाने में भी कारगर सिद्ध हुए हैं|

हिंदी विश्व में बोले जाने वाली तीसरी सबसे बड़ी भाषा है हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार में मीडिया की महत्वपूर्ण भूमिका रही है और यह मीडिया के विभिन्न प्रारूपों के माध्यम से किया जाता है। मीडिया की भूमिका कुछ निम्नलिखित कारकों के माध्यम से महत्वपूर्ण होती है:-

समाचार प्रसारण: समाचार चैनल, रेडियो स्टेशन और अखबार हिंदी में जनता को देश और विदेश की खबरों और महत्वपूर्ण घटनाओं से जोड़ते हैं। यह लोगों को अद्यतित रखने में मदद करता है और उन्हें राजनीति, सामाजिक मुद्दे और विज्ञान तक पहुंचाता है।

शिक्षा: मीडिया शिक्षा के क्षेत्र में भी अपनी भूमिका निभाता है। हिंदी में शिक्षा संबंधित सामग्री, शिक्षा संदेश, और शैक्षिक कार्यक्रमों का प्रसारण होता है, जो छात्रों और शिक्षकों को शिक्षा के क्षेत्र में जागरूक रखता है।

सामाजिक सद्भावना: मीडिया अक्सर सामाजिक सद्भावना, सामाजिक जागरूकता, और समाज में बदलाव को प्रोत्साहित करने का कार्य करता है। यह जागरूकता बढ़ाने और समाज में सुधार के लिए महत्वपूर्ण है|

संवादिकता: हिंदी मीडिया के माध्यम से व्यक्तियों और समूहों के बीच संवादिकता को बढ़ावा दिया जा सकता है। चर्चा, विचार विमर्श और बहस के माध्यम से लोग अपने दृष्टिकोण को साझा कर सकते हैं|

भाषा और संस्कृति: मीडिया भाषा और संस्कृति के प्रसारण में मदद करता है। यह हिंदी भाषा के सच्चे और सुंदर प्रयोग को बढ़ावा देता है और भाषा संरक्षण के लिए महत्वपूर्ण है|

मनोरंजन: हिंदी मीडिया मनोरंजन क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। टेलीविजन,रेडियो, और वेब प्लेटफॉर्म्स पर मनोरंजन कार्यक्रमों का प्रसारण होता है, जिससे लोगों का मनोरंजन किया जाता है और स्थानीय और विदेशी फिल्मों, संगीत, खेल और अन्य मनोरंजन माध्यमों की अपनी पहुंच होती है। साथ ही, इंटरनेट का आगमन और विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स की उपस्थिति ने भी हिंदी मीडिया की भूमिका को बढ़ा दिया है|

हिंदी के प्रचार-प्रसार में मीडिया एवं फिल्म जगत की भूमिका अहम रही है | हिंदी फिल्में देश के साथ-साथ विदेश में भी लोकप्रियता प्राप्त कर चुकी हैं, हिंदी फिल्में देश के हर कोने में देखी जाती रही है और विदेशों में भी खूब देखी जाती हैं | इन फिल्मों के द्वारा हिंदी भाषा का प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से प्रचार-प्रचार हुआ है पूरे भारत में निर्मित होने वाली फिल्मों में 60% हिंदी फिल्में बनती हैं और वे सबसे अधिक चलती है | हालांकि ऐसा नहीं है कि क्षेत्रीय भाषा की फिल्में नहीं चलती हैं लेकिन

क्षेत्रीय फिल्मों का चलन एक क्षेत्र विशेष तक ही सीमित रहती है और हिंदी फिल्में पूरे देश में चलती ही नहीं बल्कि हाउसफुल रह चुकी हैं | भारत में बहुत सी ऐसी हिंदी फिल्में भी हैं जो हिंदीतर क्षेत्र में भी धूम मचा चुकी हैं जिनमें सबसे ऊपर नाम आता है "शोले" फिल्म हैं। इसका एक-एक संवाद और एक-एक किरदार अद्भुत हैं। "शोले" के अलावा "हम आपके हैं कौन", बॉर्डर", 'ग़दर-एक प्रेम कथा", "बागवान" जैसी प्रसिद्ध फिल्में हैं जो पूरे देश में पूरे देशवासियों के द्वारा देखी गई और सफल ही नहीं बल्कि सुपर-डुपर-हिट रही हैx |

रमेश शिप्पी की 'शोले' एक ऐसी फिल्म रही है जिसमें हिंदी में बोले गए एक-एक डायलॉग आज भी बहुत मशहुर हैं यह एक ऐसी कालजयी फिल्म रही है जिसने पूरी फिल्म इंडस्ट्री को दो भागों में विभाजित कर दिया है। " शोले " से पहले की फिल्में और " शोले "के बाद की फिल्में |

हिंदी की कुछ प्रमुख फिल्मों का एक-एक हिंदी डायलॉग और एक-एक गाना हर आदमी की जुबाँ पर आज भी रटा हुआ है

कुछ चुनिंदा हिंदी फिल्मों के हिंदी डायलॉग और गानों के उदाहरण आपकी जानकारी हेतु प्रस्तुत हैं |

कितने आदमी थे" - फिल्म 'शोले'।

" मुगैम्बो खुश हुआ" मिस्टर इंडिया |

" जिनके घर शीशे के होते हैं, वह दूसरों के घर पत्थर नहीं फेंका करते।" राजकुमार द्वारा 'वक्त' में।

"हम जहां खड़े होते हैं लाइन वहीं से शुरू हो जाती हैं।" फिल्म 'कालिया' |

"एक चुटकी सिन्दूर की कीमत तुम क्या जानो रमेश बाबू।"- फिल्म, ओम शांति ओम |

हिंदी गानों के बारे में तो आपको क्या बताएं सैकड़ों, हजारों नहीं बल्कि लाखों ऐसे हिंदी गाने हैं जो आज भी हर एक व्यक्ति की जुबां पर रटे हुए हैं और लोग उन्हें हर समय अपनी मौज में गुनगुनाते रहते उनमें से कुछ सदाबहार हिंदी गानो के उदाहरण आपके सामने प्रस्तुत हैं |

- **पंख होते तो उड़ आती रे-----**
- **आजा जाने वाले तेरी याद सताए-----**
- **ओ साथी रे तेरे बिना भी क्या जीना-----**
- **हम तुम्हें चाहते हैं ऐसे------**
- **आने से उसके आए बहार जाने से उसके जाए बहार-----आदि लाखों हिंदी गाने और भी हैं |**

आज लोगो को हिंदी फिल्मों के साथ-साथ हिंदी टीवी सीरियल्स देखना भी काफी पसंद हैं।हिंदी भाषा के प्रचार प्रसार में हिंदी सिनेमा के साथ-साथ हिंदी सीरियल की भी अहम भूमिका रही है | जिनमें कुछ प्रमुख हिंदी सीरियलों की सूची इस प्रकार है :- तारक मेहता का उल्टा चश्मा , अनुपमा, ये रिश्ता क्या कहलाता है, द कपिल शर्मा शो, इंडियन आइडल, गुम हैं किसी के प्यार में, नागिन, उडारियां, राधा मोहन, कुंडली, कौन बनेगा करोडपति और भाभी जी घर पर है आदि प्रमुख हिंदी टीवी सीरियल्स है।

आज लगभग हर वर्ग के व्यक्ति के पास उसका अपना व्यक्तिगत मोबाइल होता है। लोगों के संप्रेषण को सुविधाजनक बनाने हेतु नित नये ऐप जारी किए जा रहें हैं जो कि हिंदी में ही उपलब्ध हैं । मोबाइल और कंप्यूटर में हिंदी टाइप करने हेतु यूनिकोड की सुविधा भी है, जिसके अंतर्गत अंग्रेजी में स्पेलिंग बनाकर टाइप करने से हिंदी टायपिंग आसानी से की जा सकती हैं। हिंदी टायपिंग की क्लिष्टता को यूनिकोड " मंगल फोंट" ने अत्यंत आसान कर दिया हैं। साथ ही वाइस टाइपिंग से आज मोबाइल पर व्हाट्सएप और टेक्स्ट मेसेज भेजना और भी आसान हो गया हैं , इस माध्यम से हिंदी टंकण ना जानने वाला भी बहुत कम समय में अपनी बात सामान्य बोलचाल वाली हिंदी भाषा में बोलकर आसानी से संवाद-संप्रेषण स्थापित कर सकता है।

"सबको करती एक समान, हिंदी भाषा बड़ी महान"

वर्तमान में "इंटरनेट यानी अन्तर्जाल" भी हिंदी के प्रचार – प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। आज इंटरनेट पर 15 से ज्यादा हिंदी सर्च इंजिन मौजूद हैं । ज्ञातव्य हो कि अधिकतर लोग इंटरनेट का उपयोग करते हैं। यहां तक कि लगभग सभी

सरकारी-अर्ध सरकारी कार्यालयों में "राजभाषा अधिकारी और राजभाषा सहायक कार्यरत होते हैं और वे अपने अधीनस्थ समस्त शाखाओं में कार्यरत कर्मियों को हिंदी भाषा में कार्यालयीन कार्यों के संपादन के साथ ही ई-मेल से पत्राचार के लिए हिंदी में कार्य करने का प्रशिक्षण देते हैं|

आप सभी को विदित है कि प्रत्येक कार्यालय में हिंदी के व्यापक प्रचार- प्रसार हेतु हिंदी में अधिकाधिक कार्य करने वाले कर्मी को पुरस्कृत करने की योजनाए भी सम्मिलित हैं | कर्मी के कार्यसंपादन में मेल द्वारा किए पत्र व्यवहार भी शामिल किए जाते हैं। यहां गौरतलब है कि आज "पेपरलेस ऑफिस" की ओर कदम बढ़ाने हेतु व्यापक प्रयासों का क्रियान्वयन किया जा रहा है। पुरस्कार योजनाओं का लाभ उठाने अधिकतर कर्मी नेट पर हिंदी में काम करना सीख रहे हैं | इस बाबत यह सर्व विदित हैं कि विगत कुछ वर्षों से सरकार वृक्ष बचाओ अभियान के तहत सभी संस्थानों में कागज के उपयोग को कम करने हेतु व्यापक अभियान मीडिया के माध्यम से कर रही है।

आज बाजार में प्रसारित विज्ञापनों पर मनन करें तो पाएंगे कि स्वास्थ्य, ज़ीवन बीमा, अंगदान जैसे अहम मुद्दों को प्रचारित-प्रसारित करने और लोगों को आकर्षित करने के लिए विज्ञापन कंपनियां हिंदी भाषा का ही अधिक प्रयोग कर रही हैं क्योंकि हिंदी भाषा में गुन्थित वाक्य विन्यास एवम संवाद भावनात्मक व मनोवैज्ञानिक रूप से मानव मात्र के हृदय के अंतस को छूने में अत्यंत कारगर सिद्ध हुए हैं|

एक जमाना था जब वेबसाइट और ब्लॉग्स अंग्रेजी में ही उपलब्ध थे किंतु हिंदी भाषा की क्रांति धारा ही प्रवाहित हो चली हैं और हम देख सकते हैं कि हिंदी बेबसाइट का उपयोग करने वालों का आंकडा दिन-दिन बढ़ता चला जा रहा हैं, साथ ही लोग ब्लॉग्स भी हिंदी भाषा में लिखना और पढ़ना भी ज़्यादा पसन्द कर रहें हैं क्योंकि हिंदी भाषा देशवासियों के दिल के करीब हैं|

नशाखोरी की गिरफ्त से आज की युवा पीढ़ी को मुक्त करने के लिए समाचार पत्रों, टी वी और सिनेमा घरों में फिल्म प्रसारण में आते हिंदी विज्ञापनों का लाभ कई पाठकों और दर्शकों तक पहुंचने में सफल होता है। ठीक इसी तरह गांवों के कोने -कोने में बसें लोगों तक लाइलाज बीमारियों का कम समयावधि में इलाज कराने की सुविधा को सोशल मीडिया पर हिंदी भाषा में प्रसारित किए जाने से कम पढ़े लिखे और दूर दराज में निवास करने वाले लोग भी लाभान्वित होते रहें हैं|

आज की पीढ़ी की शिक्षा संबंधी पठन सामग्री भी अंतरजाल पर सरल-सुलभ उपलब्ध हैं | गूगल पर विषय वस्तु पठनीय और यू-ट्यूब पर छोटे-छोटे वीडियो के माध्यम से हिंदी में बहुत हीं सुन्दर तरीके से समझाया गया हैं|

" एकता की जान है, हिंदी भारत की शान है "

सरकारी और व्यक्तिगत प्रयासों से आज यह बोलते हुये अत्यंत हर्षानुभूति होती है कि आज हमें हिंदी भाषी कहलाने में किसी प्रकार की हीन भावना का अनुभव नहीं होता क्योंकि अब मीडिया ने भारत की हिंदी भाषा का संपूर्ण धरा पर विस्तारीकरण कर भाषा को गौरव और सम्मान प्रदान किया है|

मीडिया विस्फोट के दौर में जब पूरे विश्व की सूचना को एक छोर से दूसरे तक किस गति से पहुंचाती है ऐसे में हिंदी के विकास में सोशल मीडिया के योगदान को नकारा नहीं जा सकता है|

प्रसार में हिन्दी मीडिया का अहम योगदान है। करोड़ रूपए खर्च करने के बाद भी जो प्रचार-प्रसार सरकार नहीं कर पाई उससे ज्यादा हिन्दी सिनेमा एवं मीडिया ने कर दिखाया है। आज स्थिति यह है कि हिन्दी भाषा आज अंग्रेजी के सामने सीना तानकर खड़ी हैऔर हिंदीतर भाषी राज्यों में हिन्दी की स्वीकार्यता बढ़ी है।

हिंदी के प्रचार-प्रसार में मीडिया एक सारथी के रूप में अहम भूमिका निभा रही है | " मीडिया " के बारे में हिंदी भाषा हमेशा दिल से यही दुआ देती रहेगी कि, "अगर तुम ना होते, तो आज हम इतना आगे नहीं होते सच में आज मीडिया हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार के लिए वरदान साबित हो रहा है|

" यूं तो देश में कई भाषाएं और भी हैं, पर हिंदी हमारी शान है, हिंदी हमारी पहचान है|"

भारतीय शिल्पकारों का फैशन उद्योग में महत्व

श्रीधर आमंची, एसोसिएट प्रोफेसर
निटवेर डिजाइन विभाग
राष्ट्रीय फैशन प्रौद्योगिकी संस्थान, चेन्नै

भारत एक सांस्कृतिक और पारंपरिक धरोहरों का समृद्ध देश है, जिसमें हर क्षेत्र की अपनी विशिष्ट पहचान है। यहाँ की कला और शिल्प सदियों से लोगों के जीवन का अहम हिस्सा रही है। शिल्पकारी के क्षेत्र में भारतीय कारीगरों की महत्वपूर्ण भूमिका है, जिन्होंने अपने हस्तशिल्प, बुनाई, कढ़ाई, रंगाई और धातु कला के माध्यम से न केवल देश के अंदर, बल्कि विश्वभर में अपनी पहचान बनाई है। विशेष रूप से फैशन उद्योग में भारतीय शिल्पकारों का योगदान बहुत ही महत्वपूर्ण रहा है।

भारतीय शिल्पकारों की भूमिका :

भारतीय शिल्पकार पीढ़ियों से अपने पारंपरिक कौशल को आगे बढ़ाते आए हैं। भारत की हर राज्य और हर क्षेत्र की अपनी अनोखी शिल्प कला है, चाहे वह राजस्थान की ब्लॉक प्रिंटिंग हो, गुजरात की बंधनी हो, उत्तर प्रदेश की चिकनकारी हो, या तमिलनाडु की तोडा कढ़ाई। ये शिल्प न केवल भारत की सांस्कृतिक विविधता को दिखाते हैं, बल्कि फैशन उद्योग को भी नई पहचान देते हैं।

भारतीय शिल्पकारों और पारंपरिक तकनीकों का पुनर्जागरण :

फैशन उद्योग में भारतीय शिल्पकारों की विशेषता यह है कि वे अपने कौशल को पारंपरिक तकनीकों के साथ बनाए रखते हैं, साथ ही नए डिजाइनों के साथ आधुनिक फैशन को भी अपनाते हैं। पिछले कुछ वर्षों में भारतीय शिल्पकारों के काम को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सराहा गया है और कई प्रमुख फैशन डिज़ाइनर अब भारतीय शिल्पकारों के साथ सहयोग कर रहे हैं। भारतीय फैशन डिज़ाइनर जैसे सब्यसाची मुखर्जी, रितु कुमार, मनीष मल्होत्रा और अनामिका खन्ना ने अपनी डिज़ाइन में पारंपरिक कारीगरी और शिल्प का बहुत सुंदर उपयोग किया है। इन डिज़ाइनरों के काम में कढ़ाई, बुनाई, और रंगाई की पारंपरिक तकनीकों का आधुनिक फैशन के साथ संयोजन दिखता है, जिसने भारतीय फैशन को वैश्विक पहचान दिलाई है।

हस्तशिल्प और फैशन उद्योग :

फैशन उद्योग में हस्तशिल्प का महत्वपूर्ण स्थान है। भारतीय हस्तशिल्प सदियों से अपनी उत्कृष्टता और गुणवत्ता के लिए प्रसिद्ध रहा है। कपड़े बुनने, रंगाई, छपाई और कढ़ाई की पारंपरिक तकनीकें आज भी फैशन उद्योग में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। कई अंतर्राष्ट्रीय ब्रांड और डिज़ाइनर अब भारतीय कारीगरों के काम को अपनी डिजाइनों में शामिल कर रहे हैं। इसका मुख्य कारण यह है कि भारतीय शिल्पकार अपनी कला में न केवल निपुण हैं, बल्कि वे अपने काम में रचनात्मकता और नवाचार को भी जोड़ते हैं।

विशेष रूप से हस्तनिर्मित वस्त्र और परिधान, जो कारीगरों द्वारा तैयार किए जाते हैं, वे आजकल फैशन उद्योग में एक विशेष स्थान रखते हैं। फैशन के आधुनिक दौर में भी हस्तशिल्प की मांग बढ़ती जा रही है, क्योंकि लोग अब तेजी से तैयार किए गए परिधानों की बजाय, गुणवत्ता और शिल्पकारी के प्रति अधिक जागरूक हो रहे हैं।

कारीगरों का आर्थिक योगदान :

भारतीय शिल्पकार न केवल फैशन उद्योग के लिए आवश्यक कौशल प्रदान करते हैं, बल्कि वे देश की अर्थव्यवस्था के लिए भी महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। भारत में लाखों कारीगर ऐसे हैं, जो ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में काम करते हैं। ये कारीगर छोटे स्तर पर कार्यरत होते हैं, लेकिन इनके उत्पादों की मांग न केवल भारत में, बल्कि विदेशों में भी है। हस्तशिल्प वस्त्रों और परिधानों का निर्यात भारत की अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है और इससे लाखों लोगों को रोजगार मिलता है।

भारतीय कारीगरों द्वारा बनाए गए उत्पादों का विदेशों में निर्यात से भारत को विदेशी मुद्रा प्राप्त होती है। इसके साथ ही, स्थानीय उद्योगों को भी बढ़ावा मिलता है, जिससे कारीगरों की आजीविका सुधरती है। फैशन उद्योग में कारीगरों के काम की मांग बढ़ने से इनकी आर्थिक स्थिति में भी सुधार होता है, और उन्हें अपने पारंपरिक कौशल को बनाए रखने और बढ़ावा देने का मौका मिलता है।

सांस्कृतिक धरोहर का संरक्षण :

भारतीय शिल्पकार न केवल फैशन उद्योग के लिए आवश्यक सामग्री प्रदान करते हैं, बल्कि वे भारत की सांस्कृतिक धरोहर को भी संरक्षित रखते हैं। उनके द्वारा तैयार किए गए उत्पाद भारतीय संस्कृति, परंपराओं और इतिहास की झलक दिखाते हैं। भारतीय शिल्प और कला को आगे बढ़ाने में शिल्पकारों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

फैशन उद्योग के डिज़ाइनर जब कारीगरों के साथ मिलकर काम करते हैं, तो वे न केवल आधुनिक डिजाइनों में भारतीय पारंपरिक शिल्प को समाहित करते हैं, बल्कि इसे वैश्विक स्तर पर भी पहचान दिलाते हैं। इससे न केवल भारतीय शिल्प को बढ़ावा मिलता है, बल्कि इसे संरक्षित रखने में भी मदद मिलती है।

चुनौतियाँ और समाधान :

भारतीय शिल्पकारों के सामने कई चुनौतियाँ हैं, जैसे कि उचित मजदूरी न मिलना, तकनीकी सुविधाओं की कमी, और वैश्विक प्रतिस्पर्धा। इसके अलावा, कई बार इन शिल्पकारों का काम बिचौलियों के माध्यम से बेचा जाता है, जिससे इन्हें उनके काम का पूरा मूल्य नहीं मिल पाता। इन समस्याओं के समाधान के लिए सरकार और फैशन उद्योग को मिलकर काम करने की आवश्यकता है। सरकार को शिल्पकारों के कौशल को बढ़ावा देने के लिए विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाने चाहिए, ताकि वे नए तकनीकी विकासों के साथ तालमेल बैठा सकें। इसके अलावा, उन्हें सीधे बाजार तक पहुंचने के अवसर भी दिए जाने चाहिए, जिससे वे अपने उत्पादों का उचित मूल्य प्राप्त कर सकें।

फैशन उद्योग में डिज़ाइनरों और शिल्पकारों के बीच सहयोग बढ़ाने से भी इस क्षेत्र में सुधार हो सकता है। डिज़ाइनरों को शिल्पकारों के काम को प्रोत्साहित करने के लिए उनके साथ मिलकर काम करना चाहिए, जिससे न केवल भारतीय शिल्पकारों को पहचान मिलेगी, बल्कि उनके जीवन स्तर में भी सुधार होगा।

निष्कर्ष :

भारतीय शिल्पकारों का फैशन उद्योग में बहुत ही महत्वपूर्ण योगदान है। उनके कौशल और पारंपरिक तकनीकों ने भारतीय फैशन को एक अद्वितीय पहचान दी है। फैशन उद्योग और शिल्पकारों के बीच सहयोग बढ़ाने से न केवल भारतीय शिल्प को वैश्विक स्तर पर पहचान मिलेगी, बल्कि यह देश की अर्थव्यवस्था और सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण में भी मददगार साबित होगा। शिल्पकारों की मेहनत और कला का सम्मान करना और उन्हें सही मंच प्रदान करना हमारी जिम्मेदारी है, ताकि भारतीय शिल्प की धरोहर आने वाली पीढ़ियों तक पहुंच सके।

हिंदी का सार : एकजुटता की पुकार

ए.इलयाराजा
कार्यकारी सहायक
सीमा शुल्क, चेन्नै

हिंदी, एक धागा जो हमें जोड़ता है,
हर दिल में यह एक उजाला जड़ता है।
उत्तर से लेकर दक्षिण तक,
यह हमारे सपनों की, हमारे सत्य की आवाज़ है।

एकता का प्रतीक, शब्दों में हम साझा करते हैं ,
हर संवाद में, यह हमेशा साथ है।
गांवों से लेकर शहरों तक, यह रास्ता दिखाता है,
संवाद के लिए, चाहे जैसे भी हो।

यह हमारे संस्कृति को, प्राचीन और शुद्ध,
हर कविता में, हमारी जड़ों को बचाता है।
पुरानी कहानियां, इसके लय में बहती हैं,
पीढ़ी दर पीढ़ी, ये बढ़ती जाती हैं।

यह एकजुट करता है, विविध मनों को,
एक सामान्य भाषा, जहां कोई बंधा नहीं।
कक्षाओं से लेकर अदालतों तक, काम से लेकर खेल तक,
हिंदी हमें हर दिन मार्गदर्शन करती है।

शासन में, यह रास्ता प्रशस्त करती है,
सभी को समान न्याय दिलाने में
नीतियों और कानूनों में, इसका स्थान है,
यह लोगों को एक समान गरिमा से जोड़ती है।

शिक्षा के माध्यम से, यह दरवाजा खोलती है,
सीखने के लिए ज्ञान के लिए, और बहुत कुछ।
यह उस शक्ति को देती है जो जो भी चाहे,
एक ऐसी भाषा जो दुनिया को कमज़ोर नहीं बनाती।

आइए, इस मजबूत भाषा को बढ़ावा दें,
एकता के लिए गर्व के लिए, और अधिकारों के लिए।
हिंदी, भारत की आत्मा की आवाज़,
एक भाषा जो हमें संपूर्ण बनाती है।

तो चलिए बोलें, चलिए लिखें,
हिंदी में, सम्मान और शक्ति के साथ।
क्योंकि इसके शब्दों में, हम सब एक कुंजी पाते हैं,
एक आशा और एकता से भरे भविष्य की ओर।

बहुदिव्यांगता: एक दुर्गम यात्रा

अतुल कुमार गिरी
हिंदी सहायक(अनुबंध)
राष्ट्रीय बहुदिव्यांगता जन सशक्तिकरण संस्थान, चेन्नई

"दिव्यांग" शब्द का अर्थ "अंगो से परे व्यक्ति की मौजुदगी" या "दिव्य अंग" हैं। दिसंबर 2016 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा सुझाए जाने के बाद भारत में "विकलांग" के जगह "दिव्यांग" शब्द का इस्तेमाल किया जाने लगा।

बहुदिव्यांगता, जिसे जटिल या गंभीर दिव्यांगता के रूप में भी जाना जाता है, तब होती है जब किसी व्यक्ति में दो या उससे अधिक दिव्यांगताएं होती हैं, जो विकास और कार्यक्षमता को प्रभावित करती हैं। ये दिव्यांगताएं शारीरिक, संवेदी, संज्ञानात्मक या इनका संयोजन हो सकती हैं।

चुनौतियाँ

बहु दिव्यांगता वाले लोगों की अपनी चुनौतियां हैं, जो उनकी व्यक्तिगत दिव्यांगताओं से कहीं अधिक जटिल होती हैं। इन चुनौतियों में शामिल हैं:

संचार कठिनाइयाँ: सीमित या अमौखिक या अशाब्दिक संचार कौशल व्यक्तियों के लिए अपनी ज़रूरतों, इच्छाओं और भावनाओं को व्यक्त करना मुश्किल होता है।

संवेदी प्रसंस्करण विकार: संवेदी इनपुट के प्रति अति या अल्प संवेदनशीलता व्यवहार संबंधी चुनौतियों, चिंता और रोज़मर्रा की गतिविधियों में कठिनाइयों का कारण बन सकती है।

शारीरिक दिव्यांगता: सीमित गतिशीलता, शक्ति या समन्वय दैनिक जीवन की गतिविधियाँ, जैसे कि खाना, कपड़े पहनना और शौचालय जाना प्रभावित करता है।

संज्ञानात्मक दिव्यांगता: सीखने, याददाश्त और समस्या-समाधान में कठिनाइयाँ शैक्षणिक प्रदर्शन और सामाजिक संचार को प्रभावित करती हैं।

व्यवहार संबंधी चुनौतियाँ: हताशा, चिंता और संवेदी अधिभार चुनौतीपूर्ण व्यवहारों को जन्म दे सकते हैं, जैसे आक्रामकता या खुद को चोट पहुंचाना।

दैनिक जीवन पर प्रभाव

बहु दिव्यांगताओं का प्रभाव व्यक्ति दर व्यक्ति व्यापक रूप से भिन्न हो सकता है। हालाँकि, आम तौर पर निम्नलिखित चुनौतियां सामने आते हैं:

सीमित स्वच्छंदता: बहु दिव्यांगता वाले व्यक्तियों को व्यक्तिगत देखभाल, संचार और गतिशीलता जैसी दैनिक गतिविधियों में अधिक सहायता की आवश्यकता होती है।

सामाजिक अलगाव: संचार संबंधी कठिनाइयां और शारीरिक सीमाएं सामाजिक संबंध बनाने और बनाए रखने को चुनौतीपूर्ण बन सकते हैं।

शैक्षिक चुनौतियां: उचित शिक्षा और सहायक सेवाओं तक पहुंच मुश्किल हो सकती है, खासकर गंभीर और जटिल ज़रूरतों वाले व्यक्तियों के लिए।

स्वास्थ्य सेवा चुनौतियां: बहु दिव्यांगता वाले व्यक्तियों को विशेष चिकित्सा देखभाल की आवश्यकता हो सकती है, जिसे प्राप्त करना और समन्वय करना चुनौतीपूर्ण हो सकता है।

बहुदिव्यांगताओं वाले व्यक्तियों की सहायता

बहुदिव्यांगताओं वाले व्यक्तियों की सहायता करने के लिए, एक व्यापक और व्यक्तिगत दृष्टिकोण आवश्यक है। इसमें निम्नलिखित शामिल हो सकते हैं:

शीघ्र हस्तक्षेप: शीघ्र पहचान और हस्तक्षेप विकास को अनुकूलित करने और दिव्यांगताओं के प्रभाव को कम करने में मदद कर सकता है।

विशेष शिक्षा: प्रत्येक व्यक्ति की विशिष्ट आवश्यकताओं को पूरा करने वाले विशेष शिक्षा कार्यक्रमों तक पहुँच आवश्यक है।

सहायक तकनीक: सहायक तकनीक बहुदिव्यांगताओं वाले व्यक्तियों को संवाद करने, जानकारी तक पहुंचने और दैनिक गतिविधियों में भाग लेने में मदद कर सकती है।

चिकित्सा सेवाएं: शारीरिक, व्यावसायिक और वाक्-भाषा चिकित्सा गामक कौशल, संचार कौशल और संज्ञानात्मक क्षमताओं को बेहतर बनाने में मदद कर सकती है।

व्यवहारिक सहायता: व्यवहारिक हस्तक्षेप चुनौतीपूर्ण व्यवहारों को संबोधित करने और सकारात्मक व्यवहार को बढ़ावा देने में मदद कर सकते हैं।

पारिवारिक सहायता: परिवारों के लिए सहायता और शिक्षा उन्हें बहुदिव्यांगताओं वाले बच्चे की परवरिश की चुनौतियों से निपटने में मदद कर सकती है।

उचित सहायता और सेवाएं प्रदान करके, बहुदिव्यांगताओं वाले व्यक्ति एक संतुष्ट जीवन जी सकते हैं और अपनी पूरी क्षमता प्राप्त कर सकते हैं। जिससे वह समाज में अपनी भागेदारी दे कर समाज को समावेशन एवं दृढ़ता के मायने बता सकें। राष्ट्रीय बहुदिव्यांगता जन सशक्तिकरण संस्थान, चैन्नई जो कि सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय के दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग के अंतर्गत एक स्वायत्त निकाय है। बहुदिव्यांगता जनों हेतु वर्ष 2005 से निरंतर सेवा में कार्यरत है एवं बहुदिव्यांगता हेतु अनेक सेवाओं सहित उनके हित के लिए अनुसंधान भी किए जा रहे हैं।

बहुदिव्यांगता जन के सशक्तिकरण के लिए एक राष्ट्रीय संसाधन केंद्र के रूप में दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग (डीईपीडब्ल्यूडी), सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय, भारत सरकार के तहत, एनआईईपीएमडी अपने उद्देश्य को अनुसंधान, प्रदर्शन, प्रशिक्षण, तकनीकी सहायता और संबंधित गतिविधियाँ प्रदान कर समाज, रोजगार, स्वतंत्र जीवन, परिवार में पूर्ण समावेशन और एकीकरण को अनुकूलित कर सभी उम्र के दिव्यांग व्यक्तियों का समर्थन और आर्थिक-सामाजिक आत्मनिर्भरता प्राप्त करने के लिए प्रयासरत है।

संस्थान सालाना 2.5 लाख से अधिक दिव्यांगजनों और उनके परिवारों को देश भर में विभिन्न प्रकार की सेवाओ के माध्यम से बहुदिव्यांगता, स्वलीनता, सेरेब्रल पाल्सी, अंध-बधिरता, बौद्धिक अक्षमता, मानसिक विकार, लोकोमोटर दिव्यांगता, बौनापन, मांसपेशीय दुर्विकास, पुरानी मानसिक स्थितियां, विशिष्ट अधिगम अक्षमता, मल्टीपल स्केलेरोसिस, वाक् और सम्प्रेषण की अक्षमता, कुष्ठ रोग से ठीक होने वाले दिव्यांगजनों की जरूरतों को पूरा करने के लिए विशेष तौर से बनाया गया है। दिव्यांगजनों और उनके परिवारों के लिए अवसर और सेवाएं उपलब्ध कराने जिससे वे अपनी अधिकतम क्षमता प्राप्त कर सकें हेतु संस्थान अपनी पूर्ण क्षमता के साथ कार्यरत है।

एकता

मुहम्मद खाजा मोहिउद्दीन
वरिष्ठ लेखा अधिकारी
रक्षा लेखा नियंत्रक का कार्यालय, चेन्नै

चमन चमन में फूल खिले थे, गगन में थे सितारे,
आपस में प्रेम था हमको, सभी के थे दुलारे,
राम मनाता था ईद, और रहीम दिवाली,
सब मिलकर गाते कव्वाली, सब मिलकर देते ताली।

सभी त्यौहार मनाते थे, हम सब थे भाई भाई,
हिंदू मुस्लिम कोई ना था, ना कोई सिख इसाई,
ख़ुशहाली थी हर जगह ऐसी कथा सुनाता हूँ,
मेरे अपने जीवन की बात तुम्हें बताता हूँ।

फिर कुछ ऐसा बदला समय और फिर ऐसा आया प्रलय,
छिन्न-भिन्न कर दिया जीवन को, तोड़ दिए सबके हृदय,
जिस बात की कल्पना से भी मन में भय उत्पन्न होता है,
ऐसी कठोर भयभीत बात तुमको आज सुनाता हूँ।
मेरे अपने जीवन की, बात तुम्हें बताता हूँ ......

घर-घर में फिर हुआ मातम, गली-गली में शोर मचा,
मन में नफ़रत बढ़ने लगी, जिस मन में था प्यार भरा,
मेरे अपने ही मित्र राम ने मुझपर बंदूक तानी,
मैंने भी तलवार उठाई, अपनी हार ना मानी ।

आपस में हम भिड़ने लगे, एक दूसरे से लड़ने लगे,
ना जाने कितनी लाशों के हमने ढेर लगाए,
अपने ही हाथों से अपने, घरों को हमने मिटाये,
ऐ दोस्त, ये नफ़रत हमें कुछ नहीं देने वाली,
मंदिर मस्जिद कुछ भी अपने साथ नहीं आने वाली।

कितने ही घर उजड़ गए, ये सोचकर ही घबराता हूं,
मेरे अपने जीवन की बात तुम्हें बताता हूँ.......

फिर कुछ समय की काया बदली,
ऊपरवाले ने हम सबकी सुन ली,
दूर हो गए सब अँधेरे, बढ़ने लगे उजाले,
आपस में फिर बढ़ा प्रेम, भेद भाव के विचार भी बदले।

मेरे प्यारे मित्रों आओ हम सब आज वचन लेंगे,
अपने प्यारे भारत को फिर से ना उजड़ने देंगे,
जात-पात और भेदभाव के विचार मन से मिटाएंगे,
ईद दिवाली सब त्यौहार मिलकर हम मनाएंगे।

मुंशी प्रेमचंद की खोज- एक पाठक का आनंद

हरीश रघुनाथन
प्रवर श्रेणी लिपिक
विपणन और निरीक्षण निदेशालय

जीवन में सफल होने के लिए, आपको शिक्षा की आवश्यकता है। साक्षरता और डिग्री की नहीं। -मुंशी प्रेमचंद

परिचय

मुझे मुंशी प्रेमचंद से अपने स्कूल के दिनों में परिचय हुआ जब मैंने दूसरी भाषा के रूप में हिंदी सीखी। हमारे हिंदी शिक्षक उनकी छोटी कहानी या कविता को जोर से पढ़ते थे, जो दिन के पाठ को दर्शाती थी और हम इसे सुनते थे, क्योंकि शिक्षक प्रत्येक पैराग्राफ या पंक्ति का अर्थ समझाते थे। तब भी, उनकी लेखन शैली, उनके शब्दों और वाक्यों को सरल यथार्थवादी तरीके से प्रस्तुत करने का तरीका, वर्णन शैली और सभी ने मुझे मंत्रमुग्ध कर दिया था। यह वास्तविकता और जमीन से जुड़ा हुआ था, हम सभी से जुड़ता था। जमीन से जुड़ा, दिल के करीब, एक भावनात्मक जुड़ाव। यही वह चीज है जो पाठक को कहानी या कविता की ओर आकर्षित करती है और लेखक के साथ एक बंधन बनाती है।

सालों बाद, सटीक रूप से कहें तो, 20 साल बाद, नागपुर की यात्रा के दौरान, कुछ पुरानी किताबों की दुकानों पर जाकर प्रेमचंद की किताबों का एक संग्रह मिला, जो मुझे बहुत पसंद आया। इसने मेरी पुरानी यादें ताज़ा कर दीं और मैं खुशी-खुशी उनसे जुड़ गया, और अपनी झोली में किताबों का एक संग्रह लेकर लौटा।

ट्रेन की यात्रा भी उतनी ही मज़ेदार रही, क्योंकि मैं मुंशी प्रेमचंद की कहानियों में डूब गया - लघु कथाएँ, उपन्यास और भी बहुत कुछ। यह यात्रा शारीरिक और आध्यात्मिक दोनों थी, क्योंकि मैंने उन अद्भुत दिनों को फिर से जीया जब मैंने पहली बार प्रेमचंद को पढ़ा था। मुझे अपने उन दोस्तों से ईर्ष्या हुई जो अभी भी प्रेमचंद के नियमित पाठक हैं, जबकि मैं 2 दशकों के बाद उनसे जुड़ रहा हूँ।

मैं यहाँ पाठकों के साथ प्रेमचंद के कुछ उपन्यास, लघु कथाएँ साझा करना चाहता हूँ, जिनसे मुझे प्यार हो गया। मैं पाठकों को आमंत्रित करता हूँ कि वे मेरा हाथ थाम लें और मेरे साथ मुंशी प्रेमचंद की रमणीय दुनिया में आएँ - प्यारे, ज़मीनी, आदर्शवादी, मूल्यों से कभी समझौता न करने वाले। मैं प्रेमचंद के तीन उपन्यास आपसे साझा कर रहा हूँ जो मुझे बहुत पसंद आए:

1. कर्म भूमि 2. सेवा सदन 3. रंग भूमि

प्रेमचंद के उपन्यास-मेरे पसंदीदा

1. कर्म भूमि

कर्म भूमि का शाब्दिक अर्थ है भाग्य का प्रतिफल या आप अपने कर्म का फल कैसे प्राप्त करते हैं।

कर्म भूमि एक बुद्धिमान युवक अमरकंद की कहानी बताती है, जिसका जीवन दुखी है और वह इससे भागने का फैसला करता है। वह अछूतों के एक दूर के गाँव में पहुँचता है। गाँव वालों की दयनीय स्थिति को देखकर, वह उनके लिए लड़ने का फैसला करता है और गांधीवादी तरीके से प्रतिशोध लेता है। उनका परिवार, जो पहले तो उनके कार्यों को नहीं समझता था, बाद में उनके साथ उनके उद्देश्य में शामिल हो जाता है और ब्रिटिश उत्पीड़न के खिलाफ उनका एकजुट संघर्ष और गांधी के सिद्धांतों के लिए अंतिम जीत कहानी का बाकी हिस्सा बनता है

इस कहानी में गांधीजी के सत्याग्रह की प्रमुख भूमिका है, जो नायक के लिए रुचि के सिद्धांत के रूप में विकसित हुआ और बाद में उनकी एकता के प्रतीक के रूप में। यह आपको 1930 के वर्ग संघर्षों के युग में वापस ले जाता है।

2. सेवा सदन

सेवा सदन या सेवा का घर पहली बार 1919 में हिंदी में और 1924 में उर्दू में प्रकाशित हुआ था। मुख्य कथानक एक दुखी गृहिणी की पीड़ा से संबंधित है, जिसे वेश्या बनने के लिए बहकाया जाता है, जो बाद में खुद को सुधारती है और अपने कार्यों से उसी समाज को अच्छे उपायों में वापस देती है, यह साबित करती है कि किसी भी कष्टदायक परिस्थिति में, यदि हम अपना सिर ऊंचा रखते हैं और खुद को अपने रास्ते से भटकने नहीं देते हैं, तो हम अपने आस-पास के लोगों के लिए मिसाल बन सकते है।।

आत्म परिवर्तन और पुनः आविष्कार के विषय को यहाँ बहुत अच्छे से पेश किया गया है, जो एक गृहिणी की मानसिक उथल-पुथल को गहराई से दर्शाता है। एक पुरुष लेखक द्वारा अच्छी तरह से लिखा गया यह उपन्यास, सार और मनोदशा को बेहतरीन ढंग से दर्शाता है। यह उपन्यास, उस समय की वाराणसी को उसकी पूरी भव्यता और सुंदरता के साथ हमारे सामने लाता है।

यह उस समय के भारत के प्रचलित आधुनिकीकरण को भी सामने लाता है, जो अपनी बेड़ियों से जूझ रहा था और उनसे मुक्त होने की कोशिश कर रहा था। मुख्य पात्र एक महिला है, जो अपने मजबूत चरित्र चित्रण और निडर कार्यों से हमारी आशा की किरण बन जाती है।

अपने समय से आगे का एक पथप्रदर्शक उपन्यास है यह।

3. रंगभूमि

रंगभूमि या जीवन का अखाड़ा 1924 में प्रकाशित हुआ था। नायक एक दृढ़ इच्छाशक्ति वाला अंधा भिखारी है जिसका नाम सूरदास है जो सिद्धांत रूप से गांधीवादी है।

औपनिवेशिक भारत में, कहानी उस समय प्रचलित वर्ग संघर्षों के बीच एक धनी उद्योगपति से अपनी पैतृक संपत्ति हासिल करने के सूरदास के प्रयासों के इर्द-गिर्द घूमती है। प्रेमचंद की जमीनी हकीकत यहाँ सामने आती है क्योंकि उस भयावह तस्वीर को चित्रित करते हैं जिसका सूरदास सामना करता है।

मानवीय भावनाएँ जैसे वासना, लालच, देशभक्ति, साहस यहाँ सामने आती हैं और प्रत्येक पात्र कहानी के दौरान भावनाओं का एक समूह प्रदर्शित करता है। आज़ाद होने की इच्छा, उन बेड़ियों से मुक्त होने की इच्छा जो हमें रूपक और भौतिक दोनों तरह से बांधती हैं, यहाँ बेहतरीन तरीके से पेश की गई है। एक दिल को छू लेने वाला उपन्यास मेरे दिल के करीब है।

निष्कर्ष

जो कोई भी मुंशी प्रेमचंद की रचनाओं को पढ़ेगा, वह दिल से एक देशभक्त भारतीय बन जाएगा, क्योंकि वह स्वतंत्रता संग्राम के समय के भारत से जुड़ा हुआ है। ये कहानियाँ हमारे दिल और दिमाग में लंबे समय तक रहती हैं, हमारी पुरानी यादें ताज़ा करती हैं और हमारे होठों पर मुस्कान लाती हैं और दिमाग को विचार करने हेतु प्रेरित करती है।।

अंकों का चमत्कार

सर्वेश कुमार निगम
वरि.अनुवादक, प्र.का
दक्षिण रेलवे

गणित का चमत्कार, संख्याओं का संसार,
दो हज़ार पच्चीस, एक अद्भुत उपहार।

संख्याओं का जादू, गणित का खेल,
दो हज़ार पच्चीस का आया है मेल।

पैंतालीस का वर्ग, यह साल अनोखा,
($45x45=2025$)
नौ और पाँच के वर्ग का गुणा, कमाल का मौका।
($9^2 \times 5^2 = 2025$)

तीन वर्गों का योग, चालीस, बीस और पाँच,
($40^2+ 20^2+5^2= 2025$)
छियासी साल बाद, वर्ग साल का नाच।

एक से नौ तक, घनों का योग अद्भुत,
($1^3+2^3+......9^3= 2025$)
दो हज़ार पच्चीस में, गणित का जादू अटूट।

नए साल की शुभकामनाएँ, गणित के प्रेमियों को,
दो हज़ार पच्चीस में, खोजें नए रहस्यों को।

संख्याओं की दुनिया में, नया सफर शुरू हो,
ज्ञान और आनंद से, हर पल भरपूर हो।

!! नव वर्ष की शुभकामनाएं सहित !!

सफ़ारी

एस.बालसुब्रमणियन
वरिष्ठ अनुवादक, मुख्यालय,दक्षिण रेलवे

सफ़ारी और ***सवारी*** इन दोनों शब्दों के उच्चारण में फरक है यानी ***'फ'*** और ***'व'*** है। मगर इनका अर्थ देखने पर हमें दोनों एक जैसे लगते हैं। मगर इनमें थोडा सा फरक है।

सवारी: कोई ऐसा साधन जिस पर सवार होकर लोग एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाते हैं जैसे-गाड़ी, घोड़ा, नाव, मोटर, रेल, हवाई जहाज आदि।

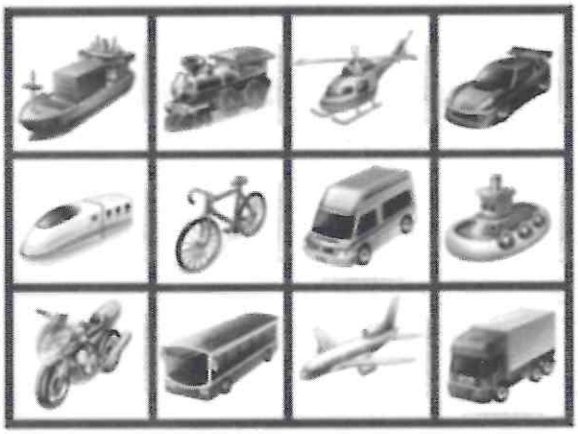

सफारी: आप जानते ही होंगे इसका अर्थ "यात्रा" है। यह यात्रा पर्यटकों द्वारा उस स्थान की संस्कृति, भूगोल, दृश्य और वन्य जीवन का पता लगाने के लिए की जाती है।

पशु-पक्षियों को उनके प्राकृतिक आवास में देखने के लिए की जाने वाली एक प्रक्रिया सफ़ारी है। ये सफ़ारी आम तौर पर राष्ट्रीय उद्यानों और वन्यजीव अभयारण्यों जैसे संरक्षित क्षेत्रों में होती है।

भारत कई वन्यजीव स्थलों का घर है।अतः पर्यटकों को वन्यजीवन का आनंद दिलाने के साथ-साथ अद्भुत विषयों की जानकारी भी प्रदान करता है और वन्यजीव सफ़ारी के लिए दुनिया में सबसे ज़्यादा पसंद किए जाने वाले गंतव्यों में से एक है। पर्यटकों को रोमांचकारी अनुभव प्राप्त होता है। इसमें बाघ अभयारण्य, राष्ट्रीय उद्यान और वन्यजीव अभयारण्य शामिल हैं।

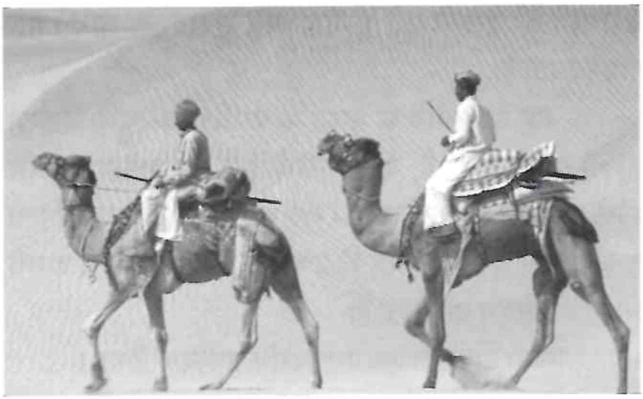

"बिग फाइव (Big Five)" का तात्पर्य पांच सबसे बड़े जानवरों से है जिन्हें दुनिया में कुछ क्षेत्रों में सफारी के दौरान देखा जा सकता है - शेर, तेंदुआ, गैंडा, हाथी और भैंसा।

अब मैं पाठकों को संक्षिप्त रूप में भारत के कुछेक सफ़ारी के बारे में कहना चाहता हूं। मुझे कहने में खुशी है कि इनमें से कुछ स्थलों का दौरा भी मैने किया है और मुझे वन्यजीवन के बारे में कुछ जानकारी और अनुभव भी मिला है।

भारत में सैकड़ों राष्ट्रीय उद्यान और अभयारण्य फैले हुए हैं, जिनमें से इन राष्ट्रीय उद्यानों के वन्यजीवों को देखने के लिए अच्छी तरह से व्यवस्थाएं की गई हैं।

संक्षिप्त में कुछेक स्थनों को देखेंगे और आप पाठक जानते ही हैं कि इसके अलावा और भी स्थान है जहां पर आप

खुद गए होंगे या इनके बारे में सुने होंगे।

❖ कान्हा राष्ट्रीय उद्यान
❖ सतपुड़ा राष्ट्रीय उद्यान
❖ पेंच राष्ट्रीय उद्यान
❖ ताडोबा राष्ट्रीय उद्यान
❖ रणथंभौर राष्ट्रीय उद्यान
❖ जिम कॉर्बेट राष्ट्रीय उद्यान
❖ बांधवगढ़ राष्ट्रीय उद्यान
❖ काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान
❖ सुंदरवन राष्ट्रीय उद्यान
❖ गिर राष्ट्रीय उद्यान
❖ हेमिस राष्ट्रीय उद्यान
❖ अरिजर अण्णा जुलॉजिकल पार्क - भारत में सबसे बड़ा चिड़ियाघरजीप या बस सफारी बड़े क्षेत्रों को कवर करने और वन्यजीवों को देखने के लिए अच्छे हैं और हाथी

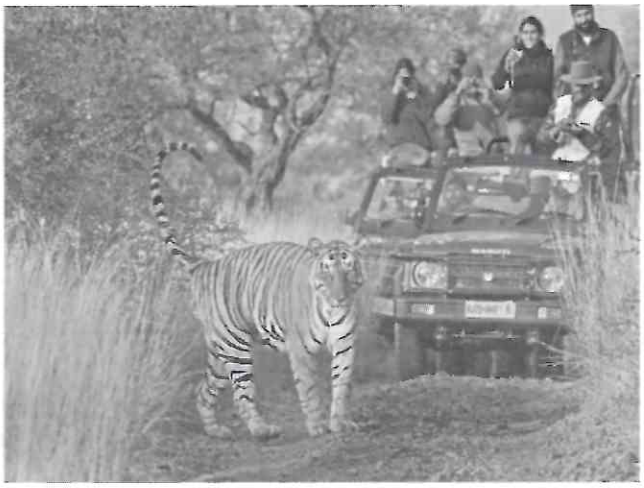

सफ़ारी छोटे क्षेत्रों को कवर करने के लिए बहुत अच्छा होगा क्योंकि हाथी पर सवार करना एक अद्भुत अनुभव देता है।

मगर इन वन्यजीवों को देखने का सबसे अच्छा समय भी हमें चुनना चाहिए क्योंकि हरेक क्षेत्र की जलवायु भिन्न-भिन्न होती है और उसके अनुसार हमें इन स्थानों की सैर हेतु योजना बनानी होगी।

उदाहरण के लिए जब हम फरवरी और मार्च में जाते हैं तो बारिश कम होती है और पत्ते कम होने लगते हैं, जिससे वन्यजीवों को देखना आसान हो जाता है। यदि हम अप्रैल और मई में गर्म तापमान में गए तो जल स्रोत सूख जाते हैं और जानवर जंगल से बड़ी झीलों की ओर चले जाते हैं जिससे उन्हें देखने में थोडी सी दिक्कत होती है। लगभग कई अभ्यारण्य जून मध्य से अक्टूबर तक आगंतुकों के लिए बंद रहते हैं, जब मानसून की बारिश होती है। इसके बाद भारत में सर्दी का मौसम शुरू हो जाता है। दिसंबर और जनवरी सबसे ठंडे महीने होते हैं।

आप जानते ही होंगे कि यदि आप इस समय यात्रा करते हैं तो उस क्षेत्र की जलवायु के अनुसार चीजें लेकर जाना है, जिससे आप आराम से इन वन्यजीवों को देख सकते हैं और इसका आनंद उठा सकते हैं।

अगर आप इसमें रुचि रखते हैं तो गूगल बाबा तो है ही आपकी सहायता के लिए। आप अपना कार्यक्रम प्लान कर लिजिए। कई टूर कंडक्टर, पैकेज भी उपलब्ध कराते हैं। अगले मिनट में क्या होने वाला है, यह कोई नही जानता। जीवन ही इतना रहस्यमय है तो दूर भविष्य की काहे को चिन्ता। वर्तमान में रहिए और अपनी इच्छानुसार सैर-सपाटे करते रहिए। जीने का लुत्फ उठाइए।

"वर्ग पहेली - 1"

वी. भुवनेश्वरी
कनिष्ठ अनुवादक
केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल

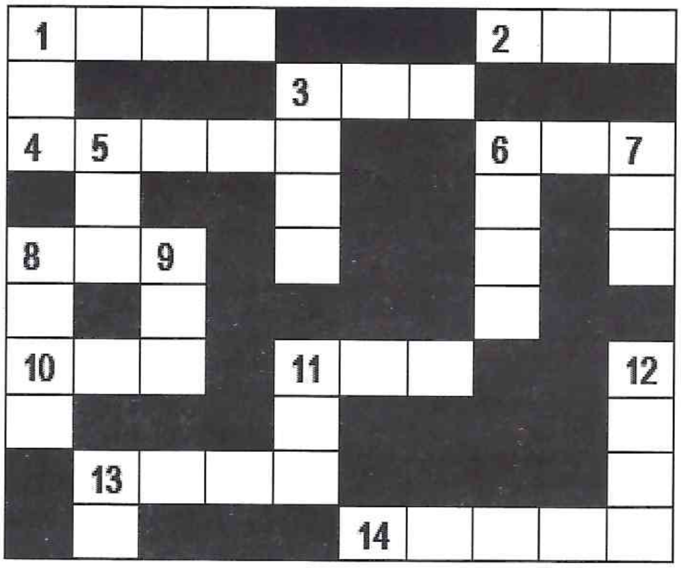

संख्या	बाएं से दाएं	संख्या	ऊपर से नीचे
01	मौजूद रहना	01	जो सही है
02	कोशिश, चेष्टा	03	शासन से संबंधित
03	उलझन, मसला	05	काबिलियत / काम करने में निपुणता
04	बताए गए के जैसे	06	मुआवजा, किसी क्षति के बदले में
06	सुझाव, किसी कार्य के लिए योजना प्रस्तुत करना	07	वापस लेना-लेखा से संबंधित
08	फाइल पर अधिकारी के ध्यान में लाने हेतु लगाया जाता है।	08	15 दिवस की अवधि
10	साल में एक बार	09	कर्मचारी – कार्यालय में कार्यरत
11	पैसे, वित्त से संबंधित	11	सोचना, ध्यान में रखना
13	आपस में, दो लोगों के बीच	12	किसी कार्य के लिए लिखित में अर्जी
14	स्वीकृति /मंजूरी	13	रैंक, जिस हैसियत पर कार्यरत

" वर्ग पहेली-2 "

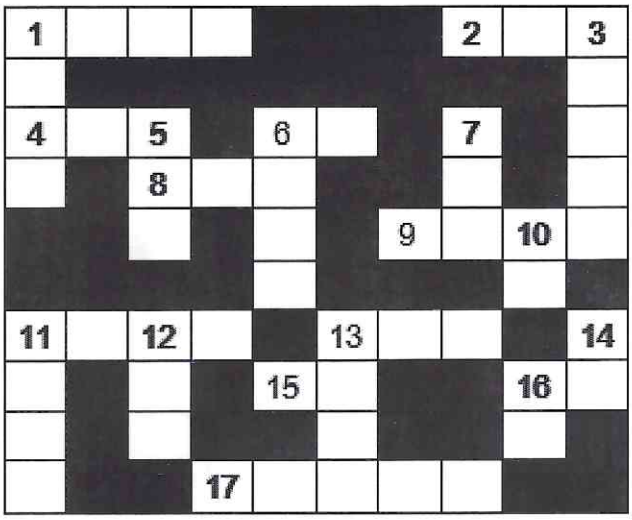

संख्या	बाएं से दाएं	संख्या	ऊपर से नीचे
01	प्रति सौ पर एक भाग	01	किसी कार्यालय अथवा संस्था के परिचालन के लिए की गई व्यवस्था
02	राज्य अथवा शासन की आय	03	पचास वर्ष पूरे होने पर मनाई जाने वाली जयंती
04	किसी कार्य के लिए बनाई गई नामित सदस्यों की परिषद	05	हर तीसरे महीने में, तीन महीने में एक बार
06	राज्यों का एक ऐसा समूह जो एक केन्द्रीय सत्ता के अधीन हो	07	किसी संघ, समिति आदि का प्रधान
08	महीने में एक बार	10	किसी काम अथवा प्रयोजन के लिए सभी प्रकार के योग्य व्यक्ति
09	किसी एक की तरफ़दारी करना	11	जो अत्यंत आवश्यक हो
11	छुट्टी	12	किसी कार्यालय में कार्यरत व्यक्ति
13	फैसला, निष्कर्ष	13	जाँच मुआयना
15	बारी बारी से समयानुसार कर्तव्य	14	उद्देश्य, दिशा, इरादा
16	सबूत, गवाह	16	संक्षिप्त रूप में
17	किसी विषय के समर्थन में सबूत रूपी दस्तावेज		

"वर्ग पहेली-3"

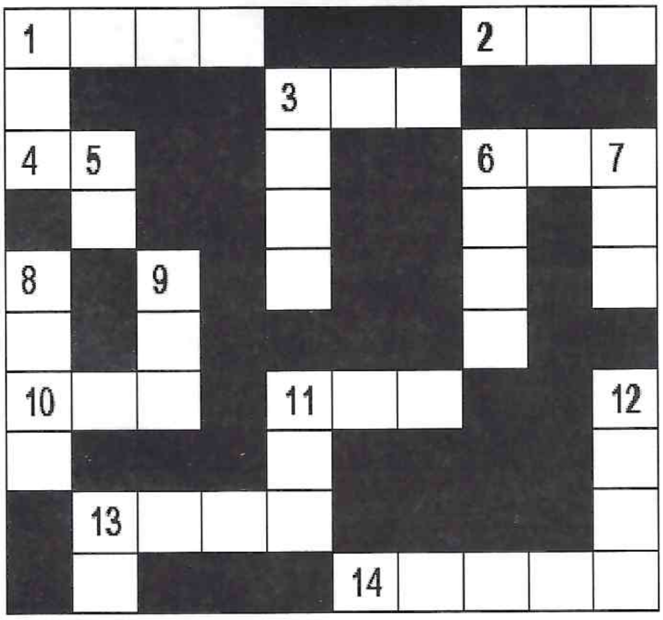

संख्या	बाएं से दाएं	संख्या	ऊपर से नीचे
01	मुआवजा, किसी क्षति के बदले में	01	जो सामने हो, आंखों के सामने
02	अनुमोदन, स्वीकृति	03	शिक्षा देना, सिखाना
03	सबूत, साक्ष्य	05	दिनांक
04	नुकसान, हानि	06	निपुणता, कौशल
06	तरक्की, उन्नति	07	15 दिवस की अवधि
10	साल में एक बार	08	जो अत्यंत आवश्यक हो
11	सुझाव, किसी कार्य के लिए योजना	09	कर्मचारी-कार्यालय में कार्यरत
13	नतीजा, फल	11	सबसे पहला
14	पुन: अवलोकन, जांच	12	रक्षा करना
		13	रैंक जिसपर कार्यरत

" वर्ग पहेली-4 "

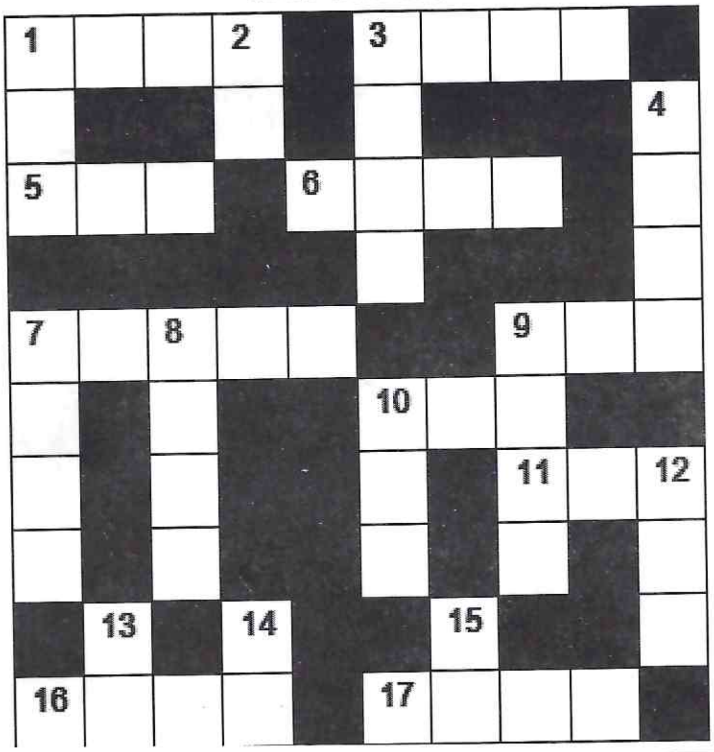

संख्या	बाएं से दाएं	संख्या	ऊपर से नीचे
01	जो अनुकूल न हो	01	जो आंखों के सामने हो
--	---	02	उद्देश्य , ध्येय
03	एहतियाती, सतर्कता	03	शिक्षित होना
05	कौशल, निपुणता	04	जिसकी सत्यता की जांच हो चुकी हो
06	रक्षा करना	---	---
07	जिस पर विचार किया जा रहा हो	07	बाँटना, बँटाई
--	---	08	शासन/सरकार की भाषा
09	जो सही है	09	जो किसी काम का हो, लाभदायक
10	सारांश, सार	10	समाचार, जो लिखित या मौखिक रूप में एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति(यों) को भेजी जाती है
11	अर्हता, जो किसी काम या नौकरी के लिए अपेक्षित है	12	दिनांक
16	बैठक में विचारणीय मुद्दों की सूची	13	वीरता
17	बहुत जल्दी	14	धन, पैसा, अर्थव्यवस्था से संबंधित
--	--	15	किसी पत्र की नकल

वर्ग पहेली-1 उत्तर

1उ	प	स्थि	त				2प्र	या	स
चि				3स	म	स्या			
4त	5 द	नु	सा	र			6प्र	स्ता	7व
	क्ष			का			ति		सू
8प	ता	9का		री			पू		ली
ख		र्मि					र्ति		
10वा	र्षि	क		11वि	त्ती	य			12आ
ड़ा				चा					वे
	13प	र	स्प	र					द
	द				14अ	नु	मो	द	न

वर्ग पहेली -2 उत्तर

1प्र	ति	श	त				2रा	ज	3स्व
शा									र्ण
4स	मि	5ति		6सं	घ		7अ		ज
न		8मा	सि	क			ध्य		यं
		ही		ल		9प	क्ष	10पा	ती
				न				त्र	
11अ	व	12का	श		13नि	र्ण	य		14ल
नि		र्मि		15पा	री			16सा	क्ष्य
वा		क			क्ष			र	
र्य			17प्र	मा	ण	प	त्र		

वर्ग पहेली – 3 उत्तर

1प्र	ति	पू	र्ति				2मं	जू	री
त्य				3 प्र	मा	ण			
4क्ष	5ति			शि			6प्र	ग	7ति
	थि			क्ष			वी		मा
8प		9 का		ण			ण		ही
ख		र्मि					ता		
10वा	र्षि	क		11प्र	स्ता	व			12सं
ड़ा				थ					र
	13प	रि	णा	म					क्ष
	द				14पु	न	री	क्ष	ण

वर्ग पहेली -4 उत्तर

1प्र	ति	कू	2 ल		3 सा	व	धा	नी	
त्य			क्ष्य		क्ष				4स
5 क्ष	म	ता		6 सं	र	क्ष	ण		त्या
					ता				पि
7 वि	चा	8रा	धी	न			9 उ	चि	त
त		ज			10सं	क्षे	प		
र		भा			दे		11यो	ग्य	12ता
ण		षा			श		गी		री
	13शौ		14वि			15प्र			ख
16का	र्य	वृ	त्त		17अ	ति	शी	घ्र	

सीएसआईआर–सीएलआरआई, वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर), नई दिल्ली के अनुसंधान संस्थानों में से एक है। सीएसआईआर–सीएलआरआई वर्ष 1948 से रसायन विज्ञान, चर्म विज्ञान, जैविक विज्ञान और पर्यावरण विज्ञान में मूलभूत तथा अनुप्रयुक्त अनुसंधान कर रहा है और प्रतिवर्ष 170 से अधिक शोध पत्र प्रकाशित कर रहा है तथा 10 से 15 पेटेंट प्राप्त कर रहा है। सीएसआईआर–सीएलआरआई अनुसंधान एवं विकास सहकार्यता, प्रायोजित परियोजनाओं के लिए उद्योगों और शिक्षाविदों के साथ सहयोग करना चाहता है तथा निम्न रसायन विज्ञान क्षेत्रों में मूलभूत तथा अनुप्रयुक्त अनुसंधान में उच्चतर शिक्षा के लिए अनुसंधान अध्येताओं / छात्रों को आमंत्रित करता है :

- फोटोवोल्टिक उपकरणों के लिए सामग्री
- पर्यावरण प्रदूषकों के लिए सेंसर
- एनआईआर द्वारा फ्लोरोसेंट प्रोब को जैव–प्रोब के रूप में उत्सर्जन
- फोटोस्टेबल कार्यात्मक रंग
- एकल परमाणु उत्प्रेरक
- नैनोजाइम, नैनोपदार्थ, नैनोफाइबर
- प्रोटीन क्रॉसलिंकिंग
- एनएमआर का उपयोग कर भौतिकी रसायन विज्ञान
- थर्मो–रासायनिक अध्ययन
- हरित रसायन विज्ञान और स्मार्ट रसायन
- प्रोटीन हाइड्रोजेल और मृदु पदार्थ
- बहुघटक संघनन और फ्लोरोसेंट सेंसर
- ठोस चरण संश्लेषण एवं जीवाणुरोधी विलेपन सामग्री
- पॉलीयुरेथेन गुण
- पृष्ठसंक्रियक, आसंजक
- तरल क्रिस्टल उत्पाद
- पॉलीमर रसायन विज्ञान में त्रिविमीय मुद्रण
- चर्मशोधन एवं पुनः शोधन एजेंट
- ग्राफ्ट–सहपॉलीमर
- जैव–अपघटनशील पॉलीमर
- जैविक रंग और दुर्लभ पृथ्वी वर्णक

परीक्षण सेवाएँ:
चर्म और चर्म उत्पादों के लिए भौतिकी तथा रासायनिक परीक्षण

परीक्षण सेवाएँ
SATRA, NABL & BIS द्वारा मान्यता प्राप्त हैं।

अपस्केलिंग सुविधाएँ:
रासायनिक पायलट संयंत्र और एंजाइम उत्पादन के लिए किण्वन इकाई

उपलब्ध प्रौद्योगिकियाँ :
जलरहित चर्मशोधन प्रक्रम, फॉर्माल्डीहाइड मुक्त सिंथेटिक चर्मशोधन एजेंट
मेलामाइन–क्रोम सम्मिश्र, खनिज सिंटैन
वनस्पति चर्मशोधन

प्रमुख उपकरण सुविधाएँ:
आणविक गतिशीलता सिमुलेशन, HPLC, NMR, FTIR, GCMS, SEM, TEM, TGA, DSE, आदि।

निदेशक, सीएसआईआर–केन्द्रीय चर्म अनुसंधान संस्थान
(सीएसआईआर–सीएलआरआई)
(वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद)
अडयार, चेन्नै 600 020, भारत

दूरभाष : 91-44-24910897/24437131 फैक्स : 91-44-24912150 ई–मेल : director@clri.res.in

facebook.com/CSIRCLRI www.clri.org twitter.com/clriindia